आदमीका ज़हर

लक्ष्मीकान्त वर्मा

भारतीय ज्ञानपीठ, काशी

ज्ञानपीठ लोकोदय ग्रन्थमाला : हिन्दी ग्रन्थाङ्क—१७२
सम्पादक-नियामक :
लक्ष्मीचन्द्र जैन

AADAMEE KA JAHAR
[Radio Dramas]
LAKSHMIKANT VFRMA

BHARATIYA JNANAPITH PUBLICATION
First Edition 1963
• Price Rs 3-00

प्रकाशक
भारतीय ज्ञानपीठ, काशी
सम्पादकीय एवं प्रधान कार्यालय
भारतीय ज्ञानपीठ, ९ अलीपुर पार्क प्लेस, कलकत्ता—२७
विक्रय एवं विज्ञापन केन्द्र
भारतीय ज्ञानपीठ, ३६२०।२१ नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली—६
मुद्रक सन्मति मुद्रणालय, वाराणसी
प्रथम संस्करण १९६३
मूल्य तीन रुपये

शशिको

जिसे मैने जब-जब

खोया है—

वह नये रूप मे

मिली है !

अपनी बात

नाटक मूलत आदमीके व्यक्तित्व, विचार और व्यवहारके विरोधाभासोमे उसकी अपनी निजी विवशताओ और सीमाओके व्यग्यकी व्यजना है। प्राय आदमी वही नही होता जो वह दीखता है, जो दीखता है वह भी नितान्त स्पष्ट सत्य होता है, जो स्पष्ट दीख पडनेवाला सत्य है और जो अन्तर्मनके सूक्ष्म स्तरोको व्यजित करनेवाला सत्य है, इन दोनोके सघर्षो, उत्कर्षोको मिलाकर ही मानव आचरण, मर्यादा आदिका प्रारूप बनता है। नाटक इन्हीका द्वन्द्व प्रस्तुत करके हमे आदमीके विभिन्न पक्षो, विभिन्न चेहरो और विरोधात्मक तत्त्वोके साथ, उनकी झाँकी दिखाता है। 'आदमीका जहर'के प्राय. अधिकाश नाटकोमे मुझे यही व्यंग्यकी स्थिति ही प्रेरणा देती रही है। इसीलिए कथ्यमे कही-कही कुछ ऐसा है जो इन विरोधाभासोमे जन्मा हुआ सत्य है—ऐसा सत्य कि हम उससे चाहे जितना चिढे, वह हमारा अपना व्यग्य है, हमको उससे मुक्ति नही मिल सकती!

इस दृष्टिसे यदि देखा जाये तो 'आदमीका जहर' एक विवादग्रस्त नाटक रहा है। कुछ मेरे सगे मित्रोको तो उसकी तीखी व्यग्यात्मकता इतनी बुरी लगी थी कि यदि उनका वश चलता तो वे उस नाटकको आमूल नष्ट तो करा ही देते, साथ ही मुझे भी साहित्यके क्षेत्रसे निर्वासित करानेमे राई-रत्ती कसर न रखते। लेकिन इस नाटकमे व्यक्त जीवन-सत्य मेरी अपनी अनुभूतियोकी तटस्थ, भोगी हुई स्थितियोकी अभिव्यक्ति है। 'आकारात्मक मानववाद' (Patternestic humanism) और वस्तु सत्यसे उपजी हुई मानवदृष्टि दोनोके विरोधाभासमें आज सम्पूर्ण मानवता ही टँगी हुई है। बहुत-से ऐसे मूल्य है जो देखनेमे तो मानवीय

लगते है लेकिन उनके मूलमे सम्पूर्ण अमानवीयता पनपा करती है । इन विरोधाभासोमे कभी-कभी मानव आचरणमे मानव-हीनता पनपने लगती है । यह स्थिति ही नाटक लिखनेकी प्रेरणा देती है ।

आजके सन्दर्भमे मै समझता हूँ कवितासे अधिक प्रशस्त माध्यम नाटकका है । बहुत-से ऐसे तत्त्व आज विवशताकी स्थितिमे काव्यके विषय-वस्तु बन गये है जब कि वे किसी अच्छे नाटकका सूत्रपात कर सकते थे । मेरे नाटक लिखनेका एक यह भी कारण रहा है । जो व्यग्य और जिन स्थितियोकी करुणा मुझे समय-समयपर द्रवित करती रही है वह किसी एक कवितामे पूर्ण नही होती थी क्योकि कविताकी अपनी सीमाएँ है । परिवेश, अनुभूति और व्यजनाका एक ही अश, एक ही बिन्दुपर परिष्कृत होकर कवितामे व्यजित हो सकते है । उनकी समग्रतासे पूरे 'जीवन पैटर्न' को एक साथ उघारकर नही रखा जा सकता । यह काम कहानी भी नही कर सकती । इसका माध्यम तो नाटक ही हो सकता है । लेकिन नाटककी आज जो सीमाएँ रूढि रूपमे बन गयी है उनको तोडकर ही आगे बढा जा सकता है । घिसे-पिटे त्रिकोणात्मक द्वन्द्व या सिनेमाकी शैलीमे थोडा हास्य, थोडा रुदन, थोडा प्रणय और अन्तमे विवाह दिखला देनेसे काम नही चलेगा । इनसे ऊपर उठकर नाटकको एक नये सिरेसे ग्रहण करना होगा तभी इस विधाके माध्यमसे महत्त्वपूर्ण बाते कही जा सकती है अथवा इस विधाका पूर्ण लाभ उठाया जा सकता है ।

रेडियो नाटक लिखनेमे मुझे जिस कठिनाईका सामना करना पडता रहा है वह प्रस्तुतकर्ता (producers) की व्यक्तिगत सनक है । मेरे एक नाटकको शुरू-शुरूमे एक महिला प्रस्तुतकर्ताने ऐसा प्रस्तुत किया कि जब मैने उसे सेटपर सुना तो अजीब वितृष्णा हुई । पूछनेपर पता चला कि नवीनतम केन्द्रीय आदेशानुसार उन्हे रातको साढे नौ बजे ऐसे ही नाटक प्रसारित करने थे जिससे श्रोता उत्फुल्ल होकर नीदमे सो सके । दूसरे शब्दोमें कुछ दिनो तक यह धुन रेडियोको सवार रही कि अच्छा नाटक

वह है जो अमृताजन मरहमकी तरह सिरदर्दको दूर करे और सशक्त स्लीपिड् डोज़की तरह श्रोताको सुला दे। मै उनके इस तर्कसे असहमत नही हूँ लेकिन इसे ताज़ीराते हिन्दकी दफाकी तरह पालन करवानेवाले दारोगा-की भाँति जब मै आकाशवाणीके प्रस्तुतकर्ताओको एक फरमाँबरदार नौकरकी भाँति दोहराते सुनता हूँ तो हँसी आती है। शायद इस प्रकारकी परिभाषाएँ बनानेवालोको यह नही मालूम है कि एक अच्छी ट्रेजेडीका भी उतना ही सुन्दर प्रभाव पड सकता है जितना कि एक सफल कॉमेडीका। दोनोकी सफलतापर बहुत-सी बातें निर्भर होती है। कलाके क्षेत्रमे इस प्रकारकी दीवारें बनाना अज्ञानताका द्योतक है। और फिर केन्द्रीय कार्या-लयके आधारपर पाण्डुलिपियोका सशोधन उससे भी ज्यादा बुरी बात है। लेकिन यह मेरे एक ही नाटकके साथ शुरू-शुरूमे हुआ। यदि बादमे कभी और हुआ होता तो मेरे लिए शायद इन नाटकोका लिखना भी सम्भव नही हो पाता। इसके लिए मैं अवश्य आकाशवाणीका आभारी हूँ कि उस घटनाके बाद कमसे-कम मेरे साथ कोई और दुर्घटना नही हुई लेकिन यह प्रवृत्ति घातक है। कोई भी कृति कृतिकारके व्यक्तित्वकी छाप लेकर चलती है। जो भी प्रस्तुतकर्ता उसका आदर नही करता वह कलाकार नही कहा जा सकता। फार्मूला नाटकोका घिसा-पिटा नुस्खा, प्रेमको लेकर घिसे-पिटे त्रिकोणात्मक नाटकोका प्रसारण अब बढ गया है। यद्यपि रेडियो नाटको-का प्रस्तुतीकरण अब नाट्य विशेषज्ञो-द्वारा होता है, फिर भी यह मानना पडेगा कि रेडियो नाटकोके स्तरमें दिनपर-दिन एक प्रकारकी गिरावट आ गयी है। प्रयोगोकी सम्भावना तो नष्ट हो ही गयी है साथ ही नाटकीयताको केवल 'चमत्कार' और स्टण्ट' के रूपमे अवतरित किया जाने लगा है।

मैंने सदैव माध्यमकी श्रेष्ठता और उसकी क्षमताको स्वीकार किया है इसीलिए मैंने बहुत कम इस बातकी कोशिश की है कि रेडियोके लिए लिखे गये नाटकको ज़बरदस्ती मचके लिए अभिनेय बनाकर एक साथ दो शिकार करूँ। मच और रेडियो यह दोनो भिन्न है और जो नाटककार

रेडियोके लिए रेडियोके माध्यमको स्वीकार नही करता अथवा मंचके लिए मंचकी सीमाओ और सम्भावनाओका पूरा प्रयोग नही करता वह गलती करता है। आज भी हिन्दीमे ऐसे बहुत-से लेखक है जो लिखते स्टेजके लिए है लेकिन प्रसारित करते है रेडियोपर या मूलत लिखते रेडियोके लिए है और फिर उसे मचका बना देते है—मै इन दोनोको अस्वीकार करता हूँ क्योकि, इसमे नाटककी हत्या हो जाती है, किसी भी माध्यमका पूरा प्रयोग नही हो पाता। आधे मनसे लिखे गये ऐसे नाटक प्राय मंच पर और रेडियोपर दोनो जगह असफल ही होते है। जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है मैने सदैव इन दोनो माध्यमोको अलग-अलग रखा है। साथ ही मेरी दृष्टि यह भी रही है कि जिस माध्यमके लिए लिखा जाये उसका पूरा-पूरा उपयोग हो ही जाना चाहिए। इस दृष्टिसे मैंने जितने भी नाटक रेडियोके लिए लिखे है वे शायद मचके लिए बदले भी नही जा सकते।

मैंने इन नाटकोमे नये प्रयोग या किसी नयी दिशाका सयोजन उसकी आन्तरिक रचनाके विरुद्ध नही किया है। जो भी है वह उसकी अपनी रचना-शक्तिसे ओत-प्रोत होकर ही आ पाया है। आशा है यह रुचिसम्पन्न पाठकोको अच्छा लगेगा।

अन्तमे मै भारतीय ज्ञानपीठकी अध्यक्षा श्रीमती रमा जैन तथा भाई लक्ष्मीचन्द्र जैनका विशेष रूपसे आभारी हूँ जिन्होने अपनी व्यस्तताके बावजूद इसे प्रकाशित करनेका कष्ट किया है। यो तो आज सब कुछ छापने-की सुविधा है किन्तु जैसा मै चाहता था वैसा छापनेकी चेष्टा की गयी है इसके लिए मै पुनः आभारी हूँ। मै सेतुमचके उन कलाकारोका भी आभारी हूँ जिन्होने पाण्डुलिपि तैयार करनेमे नाटकोको ढूँढने, काटने, चिपकानेसे लेकर उनको पाण्डुलिपिके रूपमे तैयार करनेमे विशेष सहायता दी है।

सरयू कुटीर
मधवापुर
इलाहाबाद

— *लक्ष्मीकान्त वर्मा*

अनुक्रम

•
•
•

आदमीका ज़हर

पात्र-पात्रा

कामेश्वर

नरेन्द्र

डॉ० पाल

डॉ० अदारकर

भरद्वाज

मिसेज़ कल्पना

महादेव

शरन

महिम

शशि

वैद्य

●

[शरनका कमरा जिसमे तीन व्यक्ति बैठे हैं । कमरा साधारण-सा । कुछ बाँसकी और काठकी कुरसियाँ ही है, कमरेमे एक रेडियो है, एक किनारे तिपाईपर फ़ोन रखा हुआ है, ऐसा लगता है जैसे तीनों बैठे-बैठे ऊब गये हैं ।]

कामेश्वर — न जाने कब आयेगे हज़रत ? मीटिङ् इसीलिए उनके घरपर बुलायी गयी थी, लेकिन वाह रे आदमी ! ऐसा गायब हुआ जैसे गधेके सिरसे सीग । जैसे हम लोगोको और कुछ काम ही नही है । सुनिए नरेन्द्रजी, भई मै तो बाज आया तुम्हारी पशु-रक्षिणी-समितिसे । अगर यही रवैया रहा तो मै इस्तीफा दे दूँगा । पशु-रक्षिणी-समितिके लिए मै पशु बननेके लिए तैयार नही । बुला लिया घरपर और खुदका पता नही ।

नरेन्द्र — और घर भी क्या है ! यह काठकी बेडौल कुरसियाँ, ये गन्दे बच्चे, यह फूहड कमरा । डोसेन्सी तो है ही नही उस आदमीमे ! देखा नही है ? ढीला-ढाला कुरता पहने, मुँहमे पान दबाये, चपुले चटखाता घूमता है । साहित्यकार बनता है । पशु-रक्षिणी-समितिका सयोजक यदि हम लोगोने न बनाया होता तो कौन पूछता ? था कोई नामलेवा ?

[फ़ोनकी घण्टी बजती है]

डॉ० पाल : हलो····येस ! पशु-रक्षिणी-समितिका ऑफिस यही है। डॉ० पाल स्पीकिङ्। हलो ! हलो। अच्छा, अच्छा, कोई खास बात नही है। कौन शरनजी ? उन हज़रत-का क्या ठिकाना ? बडा ही गैर-ज़िम्मेदार आदमी है। जो आदमी खुद नही समझता उसे कौन समझा सकता है। खैर कोई बात नही, थैंक यू।

कामेश्वर : कौन था पाल साहेब ?

डॉ० पाल : मि० खन्ना थे। शरनके बारेमे पूछ रहे थे। कहते थे परसो एक किताबके अनुवादका वादा करके गये थे लेकिन आज तक शकल नही दिखलाई पडी। एडवान्स भी खा गये है।

कामेश्वर कैसे गैर-जिम्मेदार आदमीको पशु-रक्षिणी-समितिका संयोजक चुन लिया है, सारी समितिकी कार्यविधि ही घपलेमे पडी है ··

नरेन्द्र : आपने ही तो उसे सिर चढा रखा है कामेश्वरजी। कुल हाई स्कूल पास, शुद्ध हिन्दी भी तो नही आती लेकिन हज़रतको मोगालता है कि अँगरेज़ी भी उन्हे आती है। उस दिन जाँ पाल सार्त्रका नाम उच्चारण कर रहा था जीन पाल सार्त्र····और दावा है ··

डॉ० पाल : दावा है [खीजकर] मै कहता हूँ मि० नरेन्द्र, दावा है न। फिर परेशानी तुम्हे क्यो होती है ? अभी भी सँभल जाओ मि० नरेन्द्र। फायदा क्या, ज़िन्दगी-भर स्पेलिङ् ही उच्चारण करते रह जाओगे !

कामेश्वर : डॉ० पाल ! यह तुम्हारी कौन-सी आदत है जी ! जब

कोई ठिकानेकी बात करता है तो उलझ जाते हो। मै तो कहता हूँ जिसे शुद्ध उच्चारण नही आता वह साहित्यकार बननेका दावा छोड क्यो न दे ?

डॉ० पाल जो! आपको चूँकि फ्रेञ्च शब्दोका उच्चारण आ गया और नरेन्द्रने बर्नार्ड शॉकी-सी दाढी रख ली तो बस इसी एक गुणके बलपर आप बुद्धिमान् हो गये। पुराने जमानेमे लोग अपने तोतोको गीता पढा देते थे, लेकिन मैने तो नही सुना कि कोई तोता अर्जुन बन गया हो।

नरेन्द्र : लेकिन डॉ० पाल ''

डॉ० पाल . क्षमा करिए नरेन्द्रजो "मै रेडियो ही सुनूँगा" 'आपके व्याख्यानसे अच्छा ही होगा वह''''

[रेडियो खोलनेकी आवाज]

रेडियो-ध्वनि

मौसमी खबरे! पिछले कई दिनोसे शहरमे आँधी-तूफानका समाँ छाया हुआ है यहाँतक कि आधा शहर ही अन्धकार और पानीमे डूब गया है। इस समय तक दस इच बारिश हो चुकी है, आदमी तो मुसीबतमे है ही, पशुओके भी जानके लाले पड गये है। पशुओकी रक्षाके लिए स्थानीय पशु-रक्षिणी-समितिकी एक विशेष बैठक हो रही है। समितिका कहना है कि वह शीघ्र ही पशुओ-की रक्षाकी कोई विस्तृत योजना प्रस्तुत करेगी

खबर है कि एक आदमीने एक कुत्तेको दाँत काट लिया है। आदमो-द्वारा काटे गये कुत्तेने आध घण्टेमे तीन आदमियोपर हमला किया और तीनो जख्मी है!

ज़िलेके अधिकारी उस कुत्तेको पकडना चाहते है लेकिन उस आदमीकी भी तलाश जारी है। आपको आगाह किया जाता है कि उसे पनाह देना अपराध है। शिनाख्त नही मिल रही है। शहरमे आतक-सा फैला हुआ है! आदमी और कुत्ते दोनोकी तलाश है, दोनो ही गायब है। खबरे खत्म हुई। यह आकाशवाणी है। अब आप साज-सगीतका एक रेकॉर्ड सुनिए!

नरेन्द्र क्या आदमीने कुत्तेको काट लिया? आदमीका जहर? मै तो कहता हूँ ऐसे आदमीको शूट कर देना चाहिए, क्यो कामेश्वरजी ?

कामेश्वर . लेकिन यह क्या मजाक है कि आदमी और कुत्तेको काटे, क्यो डॉ० पाल ?

डॉ० पाल : हो सकता है कामेश्वरजी, यह भी हो सकता है। कुत्तोके काटनेसे आदमी परेशान हो गया होगा। उसका धीरज टूट गया होगा, उसका सब कुछ खो गया होगा तब, तब मजबूर होकर आदमीने कुत्तेको काटा होगा।

नरेन्द्र : जो भी हो, चाहे जो तर्क डॉ० पाल दे या कामेश्वरजी, आप कहे, मै तो कहूँगा अगर आदमीका इतना पतन हो जाये कि वह कुत्तोको काटने लगे तो जरूरी है कि ऐसे आदमीको खत्म कर दिया जाये।

डॉ० पाल : खत्म कर दिया जाये! पर आदमी खत्म नही होता कामेश्वरजी, इसे आप तो जानते है कि नही ?

नरेन्द्र : खूब जानता हूँ। लेकिन नैतिकता न रहनेपर आदमी कुत्तेसे भी बदतर हो जाता है, कामेश्वरजी!

डॉ० पाल : कौन जाने मि० नरेन्द्र, हो सकता है आदमीने कुत्तेको महज अपनी नैतिक रक्षाके लिए ही काटा हो !

नरेन्द्र : जरा धीरे बोलिए आप लोग। यह भीतरसे आवाज़ कैसी आ रही है ? कौन है ? अरे यह क्या बक रहा है ? [अन्दरसे आती हुई आवाज़]

पुरुष-स्वर : छोडो '' छोड दो मुझे मैं कहता हूँ छोड़ दो''' यह समाज''''यह नैतिकता यह, तुम, वह तुम्हारी आकृ-तियाँ' '[सिसकते हुए] मुझे यह परछाइयाँ क्यो घेरे हैं' यह बौनी नन्ही पगु अपाहिज परछाइयाँ '' मुझे इनसे दूर जाने दो ''दूर दूर ''दूर' 'बहुत दूर ' 'हट जाओ''''''''

कामेश्वर : यह शरनको आवाज तो नही है ! लगता है कोई पागल है, लेकिन यह

डॉ० पाल : होगा कोई। कहाँतक चिन्ता कीजिएगा कामेश्वरजी ?

कामेश्वर : लेकिन यह आवाज तो शरनके घरसे आ रही है।

नरेन्द्र : क्या शरन-शरन लगा रखा है ? शरन और सब कुछ हो सकता है, पागल नही हो सकता।

कामेश्वर : हो सकता है उसे भी कुत्तेने काट लिया हो ?

नरेन्द्र : नॉनसेन्स''''मै कहता हूँ यह सब कुछ नही महज एक वहम है आपका।

[मोटरकी आवाज़]

नरेन्द्र : लीजिए अदारकर साहब भी आ गये। आइए-आइए

डॉक्टर साहब ! कहिए खैरियत तो है ? उफ, आप तो काफी भीग गये है ।

डॉ० अदारकर : कहिए। सयोजकजी गायब है न ? मै पहलेसे जानता था। पशु-रक्षिणी-समितिका जनाजा दफनाने गये होगे हजरत ! अगर आप लोग भी तैयार हो तो यह किस्सा ही खत्म कर दिया जाये। टेलीफोन काट दीजिए। फाइल्स उठा ले जाइए। काम करना है तो किसी दूसरेके हाथमे दीजिए। शरन-जैसोसे कुछ नही हो सकता।

कामेश्वर : मेरा खयाल है डॉ० अदारकर''''।

डॉ० अदारकर : आपका खयाल-ही-खयाल है कामेश्वरजी, मै कहता हूँ शरन – शरन निहायत निकम्मा आदमी है, जो आदमी चौबीस घण्टे यही कहता रहता है– बीवी बीमार है, बच्चे बीमार है, पैसे नही है, तबीयत ठीक नही है, उसके बूतेका यह सब काम नही है। वह निकम्मा रहा है और रहेगा।

डॉ० पाल : ऐसा क्यो कहते है डॉक्टर साहब। अपनी तकलीफ आदमी अपनो ही-से तो कहता है, हम सब भी तो एक परिवारके समान है।

नरेन्द्र : देखिए साहब यह परिवार-वरिवारवाली बात आप अपने ही तक रखिए, यही तो सारे दोषका कारण है।

डॉ० अदारकर : हाँ जी, नरेन्द्रजी बिलकुल ठीक कहते है। अभी उस दिन शरन मेरे पास आया था, बोला बीस रुपयेकी सख्त जरूरत है। एक हफ्तेमे दे दूँगा। मुझे भी तरस

आ गया। निकालकर दे दिये। एक हफ्ते बाद जब पैसा नही मिला तो फिर मैंने तकाज़ा किया।

डॉ० पाल : आखिर यह भी तो सोचिए वह आदमी बेकार है। किसी कामका सिलसिला नही है। आमदनीका ज़रिया नही है, जमाना इतना बुरा है।

डॉ० अदारकर : अजी यह सब कहनेकी बाते होती है पाल साहब! मै कहता हूँ जब आमदनी नही है तो खर्च करनेकी ज़रूरत ही क्या है? जब ज़मानेकी हालत खराब है तो ज़मानेके साथ चलो। मत करो डॉक्टरी दवा। क्या होमियोपैथीकी दवा खराब है? उसीकी गोलियाँ खिलाओ। क्या ज़रूरत ज्यादाकी।

डॉ० पाल · आदमीकी मजबूरी ही उसकी सबसे बडी ज़रूरत होती है डॉक्टर साहब।

डॉ० अदारकर : मजबूरी कोई ओढी-बिछायी नही जाती पाल साहब! वह हटायी जाती है। क्यो नरेन्द्रजी?

नरेन्द्र : निकम्मा आदमी मजबूरी क्या हटायेगा, उसे तो सिर्फ शिकायत करना आता है।

डॉ० पाल . हटाइए, मेरा एक सुझाव है। शरनका एक नाटक अभी-अभी रेडियोसे आयेगा, उसके पीछे उसकी आलोचना करनेसे बेहतर है उस नाटकको ही सुना जाये। अभी तो कोरम भी नही पूरा हुआ है।

डॉ० अदारकर : हॉ-हाँ, क्यो नही, चला लो रेडियो। बेचारेको शादीमे मिला है, तुम फायदा उठा लो और भाई, मै तो चला।

कामेश्वर : जाइएगा कैसे ? बारिश भी ऐसी हो रही है कि लगता है घर जाना मुश्किल होगा।

नरेन्द्र : और दोनों ही हालतमें होना है, बाहर जाकर या शरनका नाटक सुनकर। चलिए जरा नाटक ही सुनें।

रेडियो-ध्वनि :

अभी आप साज-संगीतके अन्तर्गत रेकॉर्ड सुन रहे थे। यह आकाशवाणी है। लीजिए अब आप हमारे नाटक आयोजनके अन्तर्गत शरनजीका लिखा हुआ यह नाटक सुनिए 'टूटा आदमी'।

[दरवाज़ा खटखटानेकी ध्वनि]

शशि : जाने कहाँ चले गये हैं ? जानते हैं आजकल तकाजे-वालोंका ताँता लगा रहता है, फिर भी आप हैं कि बस गायब ! आज इस संस्थाकी मीटिङ् है। कल गोष्ठी है। फलाँ बीमार है। ढिकाँके घर शादी है। कितना बरदाश्त करूँ ? कहाँतक बरदाश्त करूँ ?

[दरवाज़ा खटखटानेकी ध्वनि]

शशि : कौन है ? बोलते क्यों नहीं ? आधी रातको खट-खट लगा रखा है। कह तो दिया महिमजीका कुछ ठिकाना नहीं कब आवें; [दरवाज़ा खोलते हुए] अरे····यह तो आप ही हैं, आज इतनी जल्दी ! मैंने तो तय कर लिया था कि आज दरवाज़ा नहीं खोलूँगी ।

महिम तुम्हारे तय करनेसे क्या होता है ? मेरी किस्मत तो तेज

है, जानती हो महिमकी किस्मत जहाँ और मानोमे खराब है वहाँ इस मानेमे तेज भी ।

शशि . हे भगवान् ! कहाँ है इनकी किस्मत जो तेज होगी ?

महिम . भगवान् बेचारेको कोस रही हो ! कोसो, ठीक ही है । भई मै तो किसीको भी कोसनेकी स्थितिमे नही हूँ ! भगवान्ने तो मेरे साथ न्याय ही किया है ! हाँ, अन्याय तुम्हारे साथ हुआ है ! महिमके साथ इस मानीमे कोई अन्याय नही हुआ है ।

शशि : आपका मतलब ?

महिम : यही शशि, मेरा भाग्य तो बडा ही अच्छा था, हर हालतमे अच्छा था जो तुम्हारी-जैसी पत्नी मिल गयी । रही तुम्हारी किस्मत, वह जरूर ही खराब रही होगी, नही तो मुझ-जैसा पति तुम्हे क्यो मिलता ।

शशि फिर वही बाते शुरू कर दी । यह सब आप अपनी उसी चण्डाल-चौकडीको सुनाया कीजिए जो आपको मनसे न चाहते हुए भी चाहनेका अभिनय करते है । मुँहपर तारीफ करते है पीठ-पीछे जाने क्या-क्या कहते है ।

महिम : अच्छा तो यह बात है । जाने दो शशि । वह मुझे बेवकूफ समझते है तो समझने दो उन्हे । हम लोगोको दुनियाको बेवकूफ समझना चाहिए । लाओ तो लुंगी कहाँ है । कपडे बदल लूँ ।

शशि : लुगी नही है ।

महिम : क्यो, क्या हो गयी ?

शशि : बन्दर उठा ले गया। चिथडे-चिथड़े करके रख गया है।

महिम : अच्छा खैर तौलिया तो ले आओ।

शशि : खूब बात करते है आप। तौलिया घरमे कहाँ है ? कुछ पता है ? आज छह महीनेसे तौलिया घरमे नही है।

महिम . खैर मानता हूँ। अच्छा अपनी कोई साडी ही दे दो।

शशि : बस यही है जो पहने हूँ। लेखककी पत्नी हूँ न, इससे ज्यादा जरूरत क्या है ?

महिम : ठीक ही तो है शशि, खैर यह पाजामा ही पहनकर सो जाऊँगा। कल सुबह रामेश्वर हीके यहाँ तो जाना है। हाँ कोई खत तो नही आया था ?

शशि : उन्ही डॉक्टर साहबका है। लिखा है, "मै आपको खानदानी शरीफ समझता हूँ। यही समझकर उस दिन बीस रुपये दिये थे। तीन खत छोड चुका हूँ लेकिन आपने कोई जवाब नही दिया है। वायदे करते जाते है पर पैसा देनेका नाम नही लेते। सच कहता हूँ अगर इस खतके बाद भी रुपया नही मिला तो कानूनी काररवाई करूँगा।" मै कहती हूँ क्यो लेते हो रुपये ?

महिम : तुम बीमार थी। बच्चे बीमार थे। क्या करता शशि ?

शशि : तो सुन लो मै कहे देती हूँ। बच्चे अगर मरते हो तो मर जाने दो। मेरी लाशके लिए अगर कफन न मिले तो उधार लेकर कफन देनेकी कोशिश मत करो लेकिन मै सच कहती हूँ, यह बातें न तुम खुद सुनो और न मुझे सुनाओ।

[सिसकनेकी आवाज़]

महिम : शशि 'शशि'' कितनी कमजोर हो तुम शशि ? किसीके कहनेसे मे नीच खानदानका नही हो जाऊँगा। फिर ये सब तो अपने शुभचिन्तक है! इनकी बातका क्या बुरा मानना !

शशि शुभचिन्तक है। आप दुनियाको दुनियाके रूपमे क्यो नही देखते। क्यो नही समझते कि दुनिया दुनिया है। मै सच कहती हूँ महिम, इन शुभचिन्तकोसे अगर दुनिया-को छुटकारा मिल जाये तो दुनिया सुधर जाये। ये शुभचिन्तक बडे खतरनाक होते है।

महिम : बन्द करो यह बाते शशि। मेरा जी घबरा रहा है। बची-खुची आस्था तो शेष रहने दो। इसे तोडनेकी कोशिश मत करो। इसके टूटते ही मै पागल हो जाऊँगा। बिलकुल पागल !

[सहसा रेडियो बन्द हो जाता है। बारिश और तूफानकी ध्वनियाँ गूँजने लगती हैं।]

डॉ० पाल : क्या बात है ? ओह आप कैप्टेन भरद्वाजजी, ऐसे आ गये कि पता ही नही चला। रेडियो क्यो एकदमसे बन्द हो गया ?

डॉ० अदारकर : ह ह''ह ''बन्द हो गया तो बन्द हो जाने दो। अशिक्षित लोगोकी बकवास है। अपनी ही आत्मकथा लिखी है। फिलासफी बूझना चाहते है। गबनको आदर्श बनाना चाहते है। ठगी और बेईमानीको भावुकतामे छिपाना चाहते है। शरन स्वयं जैसा है, वैसा ही पात्र

भी बनाता है। मै कहता हूँ क्या अन्तर है शरनमे और इस नाटकके महिममे।

नरेन्द्र : कमबख्त नाटक लिखने चले है। नाटककी टेकनीक तक तो मालूम नही। दो पात्र इतनी देरसे बक-बक बक-बक लगाये है, बीचमे कोई घटना ही नही घटती। ऐक्शन तो है ही नही सिर्फ डायलॉगपर नाटक चलाना चाहते हैं। यह महिम नामका पात्र बिलकुल शरनका अवतार है अवतार····

कामेश्वर : जाने क्या लिखता है यह शख्स। नाटक जीवनकी घटनासे लेना चाहिए। यह कोई घटना है ? यह तो मानसिक विक्षिप्तता, पागलपन है !

डॉ० पाल . यही तो नाटक है····

डॉ० अदारकर चुप रहो जी। माना कि तुम नाटक लिखते हो पर तुम्हे भी नाटक लिखना नही आता। तुम्हारी भाषामे तो इतनी गलतियाँ होती है कि ··। फिर भी कोई आदर्श, कोई ऊँची बात तो नाटकमे कहनी ही चाहिए न ? यह कोई नाटक· ·

नरेन्द्र . मै तो कहता हूँ अदारकर साहब, नाटक और आत्म-कथामे अन्तर है। यह जो कुछ आपने सुना यह नाटक नही आत्मकथा है।

भरद्वाज : आत्मकथा 'यानी सेल्फ कन्फेशन····उहूँ····हूँ····देखिए यह सब नाटकमे नही होना चाहिए। यह कन्फेशन हमेशा किसी मजिस्ट्रेटके सामने होने चाहिए।

[फ़ोनकी घण्टी बजती है]

नरेन्द्र : हलो····ओह ··कल्पनाजी · ·शरनजीको पूछ रही है····
बडी देरसे बैठे हुए हम लोग तो उन्हीका इन्तजार कर रहे ····जी घरमे ···अजी कई बार कोशिश की ···कोई बोल ही नही रहा। कभी-कभी कोई पागलकी तरह चीखता-चिल्लाता है। लगता है मिसेज शरन घरमे है। लेकिन आप तो जानती है शायद वह परदा करती है, जी? क्या नफरत – नफरत करती है?· ··एक ही बात हुई मैने शरीफाना अन्दाजमे कहा था, खैर, हाँ-हाँ ·आइए न · आपके बिना तो कोरम ही नही पूरा होगा।

[एक बच्चेका प्रवेश]

डॉ० अदारकर : लीजिए साहब, घर सन्नाटेमे नही है, यह देखिए शरनजीके जॉनशीन आ गये। यही तो है शरनजीका भविष्य।

नरेन्द्र : बापसे भी बढकर बेटा। वही · वही चाल· ·· वही ढाल। पैण्टमे बटन नदारद। कमीजकी बाहे खुली। आस्तीने फटी। क्यो जी कहाँ गये तुम्हारे पापा?

बालक जी ··· पापा तो सुबहके बाहर गये है अभी आये नही। कहा था ऑफिस खोल देना।

नरेन्द्र : अच्छा तो यह बात है। ज़रा इधर तो आओ। तुम्हारे पास कितनी कमीजे है?

बालक · जी मुझे नही मालूम, माताजी जानती है।

डॉ० अदारकर और तुम्हारी माताजी कहाँ है?

बालक · जी घरमे है, बीमारके पास।

नरेन्द्र : अच्छा बेटे, तुम बड़े होगे तो क्या करोगे ?

कामेश्वर : यह क्या है जी नरेन्द्र ? तुम लोग इस बच्चेको क्यों परेशान करते हो ? जो कहना हो शरनको कहो ।

नरेन्द्र : बड़ी ममता है आपकी बच्चोंके प्रति, जानते भी है कामेश्वरजी, मिसेज़ कल्पनाने 'आज'के विमेन्स कॉलममे क्या लिखा है ?

कामेश्वर : कुछ भी लिखा हो नरेन्द्र ! तुम्हे अपने विचारसे मतलब होना चाहिए । कल्पनाजीके विचार लेकर तुम क्या करोगे ?

नरेन्द्र : वाह ! हम स्कॉलर है । हमे हर-एकका विचार जानना चाहिए । और फिर कल्पनाजी !····आह ···ह 'ह' · क्या कहने है ? क्या विचार हैं उनके ?·· मै कहता हूँ बच्चे काफी हद तक एक न्यूसेन्स होते है कहिए ? नही होते ···?

डॉ० अदारकर : न्यूसेन्स ? अजी वह तो कल्पनाजीकी बहस है । मेरे तो एक दर्जन बच्चे है । मै तो कभी परवाह ही नही करता । रही शरनकी बात, खाली आदमी करेगा क्या ? उसके बच्चे भी विक्षिप्त न्यूराटिक और न्यूसेन्स होगे ही !

भरद्वाज : न्यूसेन्स ? डॉ० अदारकर ! न्यूसेन्स नसल तो फौरन बन्द कर देनी चाहिए, राष्ट्रको नौजवानोकी जरूरत है, नौजवानोकी ! न्यूसेन्स पैदा होकर क्या होगे ?

डॉ० पाल वाह, वाह कप्तान साहब वाह ! कहे जाइए·· 'आप

लोग महान् है। एकेडिमेशियन है। मॉडर्न है लेकिन, शायद आदमी नही है।

नरेन्द्र : ओह....फैण्टैस्टिक नानसेन्स !

डॉ० पाल : मै कहता हूँ आप लोगोके पास कुछ और विषय नही है क्या सारा बहस शरन हीको लेकर होगा या

नरेन्द्र : इससे ज्यादा दिलचस्प विषय और कहाँ मिलेगा ? फियूडल और इण्डस्ट्रियल एजके काम्पलेक्सेजका आदमी है शरन...। जूमे रखने लायक है जूमे।

कामेश्वर तुम कुछ कम बोला करो मि० नरेन्द्र ! जितना कुछ पढा है उसे हर जगह उगलना क्यो चाहते हो ? नही हज़म कर पाते या बदहज़मी होती है तो भाई पढना बन्द कर दो लेकिन यह क्या है ....

[भीतरसे फिर आवाज़ आती है।]

पुरुष-स्वर : खोल दो, खोल दो मेरे ये बन्धन, ये ज़जीरे, ये हथकडियाँ, ये घूरती हुई आँखे यह सब मुझसे नही सहा जाता। मेरी दुश्मनी आदमीसे नही है, नही है। कोई तो सुनो, मै प्यासा हूँ, मुझे प्यास लगी है; लेकिन तुम मुझे पानी क्यो नही देते ? क्यो नही मेरी बेचैनी समझते ? क्यो नही मेरी तकलीफ समझते ? समझते.... स....मझते ?

नरेन्द्र यह क्या हो रहा है घरमें। कहाँसे चुन-चुनकर लोग इकट्ठा किये है। घर है या पागलखाना ?

भरद्वाज : ओह ! यह बात है। मै जानता हूँ क्या है। ज़रा क्षमा

कीजिएगा मैं अभी आया। यह शरन तो बहुत खतरनाक आदमी लगता है।

[बैकग्राउण्डसे]

[बैठे हुए गलेसे] नायक सिंह! नायक सिंह [ताली बजाता है] ओ नायक सिंह!

नायक सिंह : जी हुजूर!

भरद्वाज : सिपाही तैयार है [कानमें कनफुस्कीके स्वरमें] चुपचाप इस घरको घेर लो। कड़ा पहरा रखो।

कामेश्वर : क्या बात है कप्तान साहेब? आप जरूरतसे ज्यादा परेशान हैं।

भरद्वाज : जी ·· [कुछ छिपाते हुए] कोई बात नहीं, कोई बात नहीं। मि० पाल, रेडियो तो ऑन कीजिए। जरा देखिए तो शहरकी क्या हालत है। बारिश तो ऐसी है जैसे प्रलयकी।

डॉ० पाल : रेडियो बन्द नहीं है कप्तान साहब लेकिन ··

रेडियो-ध्वनि :

यह आपके शहरका रेडियो है। हमारा ट्रान्समिटर मौसमकी खराबीसे बन्द हो गया था····आँधी-तूफान इतने जोरका चल रहा है कि कुछ भी ठिकाना नहीं कब क्या हो जाये। हम आपको शरनजीका नाटक 'टूटा आदमी' सुना रहे थे। आगेका अंश सुनिए ··

शशि मैं कहती हूँ आखिर अपने मित्र प्रकाशक मि० खन्नासे

कहते क्यों नही ? आज साल-भर हो गये । अनुवादके साथ दो किताबे और भी पडी है । आखिर····

महिम : प्रकाशक नहो वह हमारे मित्र है शशि !

शशि . मित्र ! मित्र ! सभी तो आपके मित्र है । दो-चारसे दुश्मनी भी कीजिए तो शायद कुछ काम चले ।

महिम : बकवाससे फायदा क्या ? चलो अपना काम करो । हमारा-तुम्हारा झगडना ठीक नही ।

शशि . ठीक है ! सुनिए ' जैसे राजनीतिसे इस्तीफा देकर अलग हो गये है उसी तरह साहित्यसे भी इस्तीफा दे दीजिए। अब मै थक गयी हूँ । जबतक बात अपने तक थी ठीक था । अब इसका असर बच्चोपर पड रहा है । यदि यह केवल अभावमे पलेगे तो इनमे विकृतियाँ आयेंगी और और

महिम इस्तीफा दे दूँ ! साहित्यका क्षेत्र छोड दूँ ! फिर बचेगा क्या ? क्या शेष रहेगा ? क्या आधार होगा ? किसके बूतेपर जीऊँगा शशि ? इसे भी सोचा है ? कभी इसपर भी ध्यान दिया है ?

शशि : बहुत कुछ बचेगा— तुम्हारा पिताका रूप-जीवन, पति-का स्नेह, भरा-पूरा घर, अभावोसे मुक्त सन्तान, स्वस्थ जीवन ··

महिम : और इसके अतिरिक्त, इसके अतिरिक्त भी कुछ बचेगा'

शशि : और क्या ? साहित्यकारसे बडा है यह सब कुछ । अपनी अहम्मन्यतामे डूबकर साहित्यकार साधारण

जीवन नहीं जी पाता, वह असाधारणकी खोजमे अपने-
को तोड डालता है ।

महिम : नही, नही । ऐसा नही हो सकता शशि ! साहित्य मेरी
आत्मोपलब्धि है वह मेरी अहम्मन्यता नही है ! वह
मेरा प्रमाद नही है । वह अहंकार नहीं है। नही है''
नही है' '।

शशि : वह आपका जो कुछ भी हो, जीवन नही है। हमारे
जीवनमे और उसमे विरोध है। कही इतनी बडी खाई है
कि उसमे हमारा सब कुछ बिखर जाता है । जो आपका
साहित्यकारका क्षेत्र है वह शायद इतना संकीर्ण है कि
उसमे मै नही आ सकती। यह परिवार नही आ
सकता । यह घर नही आ सकता ।

महिम : यह सब उसमे ही है शशि, मेरी पीडा केवल मुझ
तक ही नही है वह सबकी हो जाती है। वे सभी मेरी
पीडामे भाग लेते है जो मेरी रचना पढते है । वे सभी
मेरे जीवनमे भाग लेते है जो मेरा साहित्य पढते है ।
मेरा परिवार इतना बडा है शशि, कि वह इस घरमे
नही आ पाता । यह घर छोटा है। इतना छोटा कि

शशि : घरका छोटा होना ही तो बुरा है । बहुत बुरा है ।
छोटे घरोमे मस्तक झुकाकर चलनेवाला परिवार होता
है । चौखटके ज़ख्मोसे मस्तक पक जाते है। कभी-कभी
दिमाग भी खराब हो जाता है ।
[शशिके प्रस्थानकी ध्वनि]

महिम : छोटा घर, छोटा परिवार, मस्तक झुकाकर चलनेवाली
नसल' ' चौखटके ज़ख्मोसे पका हुआ मस्तक । नही ।

नही । ऐसा नही होगा [छोटे बच्चेके रोनेकी आवाज़, बच्चेको गोदमें लेता हुआ] नही, नही; तुम्हे चीखने नही दूँगा, तुम्हें बौना नही बनने दूँगा [बच्चा चीखना बन्द कर देता है] लेकिन करूँगा क्या ?

शशि : क्या हो गया है तुम्हे ।

महिम : ऐ यह तुम पूछती हो ! यही तो दुःख है शशि, कुछ हो जो नही रहा है, कुछ होना चाहिए न ! ··

शशि : मै कहती हूँ क्या हो गया है आपको ? कुछ भी तो नही कहा मैने । कह भी क्या सकती हूँ ? जाने क्यो इतनी बात आज मेरे मुँहसे निकल गयी । लेकिन मै भी तो मजबूर थी । आशाएँ जब टूटती है तो विश्वास भी बिखर जाता है । धैर्य अपना साहस छोड देता है ।

महिम : साहस ? तुम्हारा साहस यदि टूट जायेगा शशि, तो मेरी आधी शक्ति ही टूट जायेगी । शशि, मुझसे मेरे सपने छीन लो । आग लगा दो उनमे । उनकी ध्वस्त राखपर हमे नये सिरेसे ले चलो । समझ लो मै निष्क्रिय हूँ । अकर्मण्य हूँ ।

शशि : लेकिन यह तुम कह क्या रहे हो । मै तुम्हारे सपने नही छीनना चाहती । तुम्हारे शुभचिन्तक मुझसे भी बडे है । वह संसारकी बातें सोचते है । विश्व-कल्याण-की बातें सोचते है । वह अधिक बुद्धिमान् है । मै छोटी हूँ । मेरे सपने छोटे है, बहुत छोटे उतने ही छोटे जितनी मै स्वय हूँ ।

महिम : नही शशि, तुम्हारे छोटे-छोटे सपनोका बडा महत्त्व है

क्योंकि उनके छोटे चौखटे नहीं हैं। सिरमें ज़ख्म पैदा करनेवाली सम्भावनाएँ नहीं हैं। दिमागको पकानेवाली असमर्थता नहीं है, उसमें अपूर्णताकी आग नहीं है। महत्त्वाकांक्षाकी जलती विभीषिका नहीं है। उसमें वह लघुता है जो पूर्ण है, अपनेमें ही भरी-पूरी है। वह बड़प्पन नहीं है जो सदैव अधूरा ही रहता है।

[रेडियो सहसा बन्द होता है और तुरत ही फिर ध्वनि आती है]

हम माफी चाहते हैं, जिस कुत्तेको आज सुबह एक पागल और विक्षिप्त आदमीने काटा था आज दोपहरको उसी कुत्तेने शहरके बहुत बड़े समाज-सेवी 'सेवा समाज' के प्रधान श्री अभिलाषचन्द्रको काट लिया था। अभी-अभी हमें उनके देहावसानका समाचार मिला है। हम अपना कार्यक्रम पन्द्रह मिनिटके लिए स्थगित करते हैं और इस बीच दिवंगत आत्माकी शान्तिके लिए आपके सामने गीता-पाठ होगा।

[गीताका श्लोक बैकग्राउण्डमें लगातार गीता-ध्वनि]

नरेन्द्र : बन्द भी करो यार। अजीब लोग हैं, गीतासे क्या होगा? यह मौतका प्रोग्राम मुझे नहीं रुचता।

कामेश्वर : मौतका प्रोग्राम और गीता? नरेन्द्रने ठीक ही कहा, बन्द भी करो, यह गीता बहुत सुन चुका।

नरेन्द्र : और गीता भी उसके लिए जो तमाम ज़िन्दगी समाज-सेवी रहनेके बाद भी समाजका मतलब नहीं जान सका

होगा, समाजकी उत्पत्ति, विकास, पतन, परिवर्तन इसके बारेमे अभिलाषचन्द्र क्या जानेगे ?

कामेश्वर : यह तो तुम्हारा एकेडेमिक विवाद है नरेन्द्र, लेकिन मै समझता हूँ एकेडेमेशियन न होते हुए भी आदमी आदमी-के काम आ सकता है····।

डॉ० पाल : जी, क्या खूब कहा आपने कामेश्वरजी, आदमी आदमी-के काम आये इसके लिए ज़रूरी है कि आदमी आदमी-को जाने, आदमी बिना आदमीकी संवेदना जाने उसका सेवक बने यह मेरी समझमे नही आता ।

नरेन्द्र : मै तो कहता हूँ बिना एकेडेमिक ज्ञानके कोई साइण्टिफिक ज्ञान नही आ सकता और बिना साइण्टिफिक ज्ञानके आदमी आदमीकी सवेदना जान ही नही सकता ।

डॉ० अदारकर . आ गये न आप लोग दिमागी फितूरपर । देखिए मै कुछ कामकी बाते करना चाहता हूँ । मेरी बात मान लीजिए, शरनजी अब इस समय आपसे नही मिलेगे । मै उनको जानता हूँ, उनकी प्रकृति पहचानता हूँ, जब कुल बीस रुपयेके लिए वह मुझे इतना नाच नचा सकते है तब यह तो कच्चा चिट्ठा उधेडकर बात करनेकी मीटिङ् है, इससे वह हमेशा दामन बचायेंगे । इसलिए

[बाहर मोटरकी आवाज़ सुनाई पड़ती है]

नरेन्द्र वह लीजिए मिसेज़ कल्पना भी आ गयी । लीजिए डॉक्टर साहब, अब तो मीटिङ्का कोरम भी पूरा हो गया जल्दी निर्णय कीजिए । मुझे आज अनन्तके यहाँ डिनरपर जाना है । बारिशकी यह हालत है । पर भाई,

मैं तो अँगरेज़ आदमी हूँ। जहाँ वक्त हुआ चला जाऊँगा।

[मिसेज़ कल्पनाका प्रवेश]

नरेन्द्र : ओह नमस्कार कल्पनाजी, आइए, इधर आइए। [मुग्ध भावसे]

कामेश्वर : नमस्कार [आदरसूचक]

डॉ० पाल . नमस्कार कल्पनाजी ! [उपेक्षाभाव]

डॉ० अदारकर : नमस्कार' ''[अकड़के साथ]

मि० कल्पना . ओह ' नमस्कार ' ' नमस्कार ' नमस्कार''''माफ कीजिएगा मुझे बडी देरी हो गयी। मेरे हस्बेण्ड मि० रामका बडा लड़का आया था। जानते है सौतेला लडका ठहरा। कर्टसीमे कुछ-न-कुछ करना पडता है। एक तूफान खडा कर दिया उसने। मि० रामको ब्लड-प्रेशरकी बीमारी है। उत्तेजनासे उनकी तकलीफ बढ गयी। उसीमे देर हो गयी।

नरेन्द्र . अब तो ठीक है तबीयत ! क्या बताऊँ मुझे यहाँसे सीधे डिनरमे जाना है नही तो अभी देख आता। किसी वक्त आऊँगा।

मि० कल्पना : मैने सिविल अस्पतालसे नर्स बुलवा दी है। वह देख-भाल कर रही है। क्या करे ? पब्लिक लाइफमे तो इतने इंगेजमेण्ट्स रहते है कि'

भरद्वाज : इगेजमेण्ट्स ! पब्लिक इगेज़मेण्ट्स ! मैडेम,''''पब्लिक मीन्स कॉमन मैन। और पब्लिक इगेजमेण्ट'''

[सब लोग हँस पड़ते हैं]

डॉ० पाल . खूब ! मानता हूँ कप्तान साहेब, क्या सेन्स ऑव ह्यूमर पाया है आपने ! वाह ! वैसे मिसेज कल्पना करती भी क्या ? नर्ससे ज़्यादा आराम आप मिस्टर रामको नही पहुँचा पाती। वह तो सिर्फ गँवार बीवियाँ ही कर पाती हैं।

मि० कल्पना : ओह यस ! आप ठीक कहते है डॉ० पाल ! वह नौकरो-की तरह अटेण्ड करती है। मैं क्या बताऊँ मै तो बेलेन्स रखती हूँ। क्या करूँ, रखना पडता है। कोई बीमार है ठीक है, दवा कर दो। इससे ज्यादा कर भी क्या सकते है ?

नरेन्द्र : ठीक तो है आपका कहना मिसेज़ कलपना, आप हमेशा बैलेन्स मेण्टेन करती है। अभी आज ही आपका वह लेख पढा है 'चाइल्ड, ए न्यूमेन्स' बडा ही अच्छा है ····बहुत ही साइण्टिफिक और मॉडर्न है····

कामेश्वर : मै थोडा असहमत हूँ····

मि० कल्पना : अच्छा· ··इट इज ए न्यूज़।····बच्चे तो कभी-कभी न्यूसेन्स ही नही ऐण्टीसोशल भी साबित होते है, जैसे मि० रामका बडा लड़का ! और देखिए वैसे तो हम पशुके प्रति भी उदार हैं।

नरेन्द्र : जी हाँ ! आप बिलकुल ठीक कहती है। एकेडेमिक व्यू यही है।

डॉ० अदारकर : खैर साहब, अब तो मीटिङ्की काररवाई शुरू करनी चाहिए····

[फ़ोनकी घण्टी बजती है]

नरेन्द्र : कौन मि० भान....जी ' जी मै हूँ नरेन्द्र। कौन शरन-जी ? अरे साहब, वह मिल जाये तो मुसीबत ही न हल हो जाये। लेकिन घबराइए नही सब ठीक हो जायेगा। क्यो पानीमे कष्ट करेगे ? कल तक वालण्टियर्स जानवरो-की रक्षाके लिए तैनात हो जायेगे। अजी आदमी तो अपनी जान बचा ही लेता है। आप उनकी फ़िक्र छोडिए। जानवर बेचारे तो बेजबान होते है। उनकी रक्षा कीजिए। छोडिए आदमीकी चिन्ता।

डॉ० पाल : ज़रा खामोश हो जाइए। रेडियोसे खबरे आ रही है।

रेडियो-ध्वनि :

जैसा कि अभी आपको बताया गया, मौसम बहुत ख़राब है, सैकडो पेड शहरमे गिरे पडे है, सडक और रास्तेकी सारी स्थितियाँ खराब है, ट्रैफिक बन्द है, आदमीका आना-जाना बन्द है। रोशनियाँ बुझ गयी है, पुराने मकान गिर रहे है, नदीकी बाढका गन्दा पानी घरोमे घुसा जा रहा है, डॉक्टरोका कहना है कि इस बाढ, इस पानी और गन्दगीमे बडे ज़हरीले बैक्टेरिया होते है, डिप्थीरियाका रोग फैलता है, पहला अटैक गलेपर होता है, आदमीकी ज़बान बन्द हो जाती है, आदमी घुट-घुट-कर मर जाता है, आपसे प्रार्थना है आप अपनी नालियो-से होशियार रहिए ताकि पानी घरमे न फैलने पाये। यह आकाशवाणी है। खबरे खत्म हुई। शरनजीका ड्रामा जहाँतक आप सुन चुके है, उसके आगेसे सुनिए :

महिम : छोटा घर छोटा परिवार। मस्तक झुकाकर चलनेवाली नसल, चौखटके जख्मोसे पका हुआ मस्तक और उस मस्तकमे छोटी-छोटी बाते। पडोसीके घरकी नकल, बाबुओकी रिश्वत, साहबको सलाम, बेयरेकी टिप, इन सबका जितना गहरा सम्बन्ध है।

शशि : जाने भी दो उन बातोको, उस घडी मेरी कुछ तबीयत ही खीझ गयी थी, मुँहसे यह बाते निकल ही गयी, गुज़री बातको ढोनेसे फायदा !

महिम : बात ढोनेकी बात नही है शशि, बात समझनेकी है। तुम सबको मेरी वजहसे तकलीफ है न। काश मै भी साधारण आदमी होता। कितने आरामसे रहते। [रुककर] नही, नही शशि, मै इन सबको छोडूँगा, एक रास्ता निकालूँगा।

शशि : रास्ता कोई नही है। रास्ता वही है जिससे तुम चल रहे हो, वही ठीक है।

महिम : लेकिन मै शायद अब साहित्य नही लिख सकता क्योकि मै अभावोमे जी रहा हूँ, मै इन झूठी सामाजिक सेवाओ-का जो अभिनय करता हूँ वह भी व्यर्थ है क्योंकि उसमे मेरी पूर्णता नही है, मै तिलाजलि दूँगा अपनी समस्त कल्पनाओको, साहित्यको, रचनाको

[बाहरसे आती हुई कुण्डी खटखटानेकी आवाज़]

पहली आवाज़ : क्या कर रहे है हज़रत, आखिर आज इतनी देर क्यो हो रही है ?

दूसरी आवाज़ : कौन जाने शीर्षासन कर रहे हो ''

तीसरी आवाज़ . कोई कविता लिख रहे होगे

चौथी आवाज़ : अरे ऐसे लिखाड होते तो

पाँचवी आवाज़ : तो शेक्सपियर हो जाते'

समवेत अभी किससे कम है !

[समवेत हँसी । घृणा तिरस्कारसे भरी हुई । भीतर-की आवाज़]

महिम : फिर वही आवाज । फिर वही, व्यग्य ! फिर भी वही ताने !

शशि : तो क्या हुआ ? अभीतक यह ताने सहते आये है, और भी सहेगे । इन सब तानोको सार्थक बनाना होगा । सार्थक होके रहेगे' ''

महिम : शशि, क्या इन व्यग्योसे घृणा नही टपकती ' इनमे अपमान नही झलकता । लेकिन फिर भी मै इसका विरोध नही करना चाहता क्योकि ये मेरे अन्तिम विश्वास रहे है – इन्हे मै छोड देना चाहता हूँ – इनमे उलझना नही चाहता – इन्हे काटकर निकल जाना चाहता हूँ ।

शशि : तो फिर इनसे मुँह क्यो छिपाते हो ? क्यो नही इनका सामना करते, इनका जवाब देते ?

महिम : क्योकि ये मेरी कमजोरियाँ है शशि, बहुत बडी कमजोरी ।

शशि : तब इन्हे रोकना पडेगा। इनको इनकी सीमाएँ बतानी होगी।

महिम : मत सुनो शशि, इनकी बाते मत सुनो, यह महज बकना जानते हैं, इनका कुसूर नही है

शशि : लेकिन मुझे सुनना ही पडेगा "आवाज जब घरकी चहार-दीवारी पार करके आँगन तक गूँजने लगे, घृणा जब बरसने लगे तब उसे रोकनेमे कर्त्तव्य है! इस घरकी मै मालकिन हूँ! इसे मै रोकूँगी!

महिम : नही! नही शशि, इन्हे मत रोको! मै फिर कहता हूँ, ये मेरे अन्तिम विश्वास है! ये मेरी असमर्थता है! मै इनसे उलझना नही चाहता! ये मेरे शुभचिन्तक है!

[बाहरसे]

पहली आवाज़ : श श 'श 'सुनो, सुनो भीतर नाटकका रिहर्सल हो रहा है।

दूसरी आवाज़ : रिहर्सल? यह क्या कहते हो! बीवो कर्कशा होगी यह नाटक नही है!

तीसरी आवाज़ : अरे मियाँ, सही सलामत चलो, यह बला यहाँ भी आनेवाली है।

चौथी आवाज़ : ह ह ह "क्या खूब फरमाया जनाबने, यहाँ क्यो आयेगी

पाँचवीं आवाज़ : आपकी अकल नापने"

समवेत हँसी : ह ''ह''''ह'' ह'''

[भीतरसे]

महिम . वापस आ जाओ शशि····शशि वापस आ जाओ।

[बाहरसे]

पहली आवाज़ शशिजी ओह शशि भाभी · ·

दूसरी आवाज़ जी, नमस्ते !

तीसरी आवाज़ . नमस्ते जी !

चौथी आवाज ओह भाभीजी, नमस्ते !

पाँचवी आवाज़ आप बोलती क्यों नही, कुछ तो कहिए

शशि : और भी कुछ कहिए ! घावोंपर इतना नमक छिडकिए कि हम पागल हो जाये, जख्मोको कुरेदिए कि खून हो जाये ! आप मित्र है न ? यह तो आपका फर्ज है !

[भीतरसे]

महिम : मेरे साहसकी परीक्षा मत लो शशि ! वापस आ जाओ ! वापस।

[लम्बा मौन]

शशि . आप लोग भी चुप हो गये, कहिए कहिए न, इतना कहिए कि मेरे अन्धे कूएँसे कान आपकी सारी बातें सुन लें। मेरा धीरज तिलमिला उठे। आप सब शुभचिन्तक है न, आशीर्वाद दीजिए। बोलिए; लेकिन आप नही बोलेंगे, मै जानती हूँ आप नही बोल सकते क्योकि आपमे कही कायरता भी है शायद इसीलिए आप खामोश है··· लेकिन यह अधूरापन बडा ही कटु है, दिलमे गुबार रखना ठीक नही, कह डालिए आज-जैसा अवसर

आपको फिर कभी नही मिलेगा''''सच मानिए आप लोगोकी खामोशी मुझे खलती है ·

पहली आवाज़ शशि'' 'भाभी ''भा ''भा भाभी'

शशि : हाँ, हाँ आप काँप क्यो रहे है । मै मात्र स्त्री हूँ, केवल स्त्री, मुझसे क्या डरना । मै तो वही हूँ जो किसी उपन्यास, कहानी, नाटकमे चित्रित होती हूँ। जिसके अंग-अगके रसके लिए कवि, नाटककार, उपन्यासकार बनना पडता है। फिर आप मुझसे डरते क्यो है ? कह डालिए !

[भीतरसे]

महिम : आगे कुछ मत कहना शशि, बिलकुल नही। आगे कुछ मत कहना। ये सब मेरे शुभचिन्तक है। शुभ-चिन्तक

[बाहरसे]·

शशि : लेकिन मै एक अन्तिम वाक्य कहे बिना नही रह सकती। मै कहूँगी क्योकि वह मेरा अधिकार है। क्योकि यह आवाजे अपनी सीमा लाँघकर मेरे आँगनमे गूँज रही हैं।

[भीतरसे]

महिम : सारा जहर निचोडनेकी क्या यही अवधि है शशि, और 'और' ·

[बाहरसे]

शशि : और वह यह कि आप सब लोग मेरे घरसे चले जाइए। कृपा करके चले जाइए। आप लोगोका घर बहुत बडा है लेकिन आप बौने लोग है। मेरा घर बहुत छोटा है लेकिन

[महिम भीतरसे बाहर आ जाता है, सब लोग उठकर चले जाते हैं।]

पहली आवाज़ : चलिए खन्नाजी

दूसरी आवाज़ : चलिए

तीसरी आवाज : चलिए साहब !

चौथी आवाज़ : और क्या

महिम : उफ्। कितना अकेला हूँ मै। शशि, तुमने मुझे अकेला कर दिया। तुमने अपने घरके चौखटे और छोटे कर दिये। आँगनमे तुमने धुएँके बादल बिखेर दिये। मेरा आधार ही नष्ट कर दिया।

शशि : आधार मनुष्य ढूँढ निकालता है। आधार मै ढूँढूँगी, विश्वास इनमे नही, आदमीमे मिलेगा, मिलेगा ' मिलेगा

[समाप्ति-सूचक संगीत और उद्घोषणा]

अभी आप शरनजी-द्वारा लिखित नाटक 'टूटा आदमी' सुन रहे थे। इस समय रातके आठ बजा चाहते हैं और अब आप सुगम सगीतके रेकॉर्ड सुनिए।

नरेन्द्र : चलो बकवास बन्द हुई। क्या था इस नाटकमे ? बकवास।

डॉ० पाल : बकवास भी एक बहुत बडा यथार्थ है नरेन्द्रजी, आदमी

जब टूटता है, अपना आधार खो चुकता है तब ···

नरेन्द्र : तब वह कामका नही रह जाता, बकवासी हो जाता है, शरन-जैसा हो जाता है या यूँ कहे महिम-जैसा हो जाता है ।

डॉ० अदारकर : अपनी कमज़ोरियोको छिपानेका यह एक बहाना है, अपनी कमज़ोरियोपर मुलम्मा चढाया करता है, हीरो बनना चाहता है ।

नरेन्द्र : जब आदमी कहीसे भी सहानुभूति नही पाता तब वह अपने शरीरपर बनावटी ज़ख्म पैदा करके दूसरोकी त्रस्त कल्पनासे सद्भावना निचोडना चाहता है । वही महिमने किया है, वही शरन करता है !

कामेश्वर : लेकिन नरेन्द्रजी, ड्रामा तो कम्प्लीट है । इसमे कमी क्या है ?

नरेन्द्र : कमी ! क्या कहते है कामेश्वरजी ? इसमे लैक ऑव विज़न है ।

डॉ० अदारकर : और सामाजिक चोरी है ! मै कहता हूँ साहित्यकारको कौन-सा सुरखाबका पर लगा है ? वह कोई भी अन्य काम क्यो नही करता ? सिनेमाके पोस्टर लिखे । दवा बेचनेवालोके लटके क्यो नही लिखता ? खासी आमदनी होती है साहब, सौ-सौ पेजके जासूसी उपन्यासोके दो-दो सौ रुपये मिलते है । साहित्यकार क्यो नही लिखता इसे ?

मि० कल्पना : देखिए आप लोग इतने पर्सनल क्यो हो जाते है – मुझे डिस्ट्रिक्ट फ्लड रिलीफ कॅमिटीकी एक मीटिङ्मे जाना

है। पन्द्रह मिनिटका समय और है। मीटिङ्की कारखाई जल्द शुरू कीजिए।

डॉ० अदारकर मै तो कभीसे कह रहा हूँ। मेरे खयालमे एक प्रस्ताव पास करके हम नये आदमीका चुनाव कर ले।

मि० कल्पना : देखिए प्रोसिडियोरकी गलती मत कीजिए! पहले शरनजीके खिलाफ अविश्वासका प्रस्ताव पास कर लीजिए, फिर पशु-रक्षिणी-समितिके नये संयोजकका प्रश्न उठता है।

कामेश्वर · मेरा खयाल है श्रीमती कल्पनाको ही चुन लीजिए ···

मि० कल्पना : देखिए बात यह है कि मेरे पास वैसे ही पाँच कुत्ते है। बुल डॉग है, एक हाउण्ड है, एक एलसेशियन है, एक पहाडी कुतिया है। और फिर मिस्टर रामका भी स्वास्थ्य ठीक नही रहता। आप क्या समझते है, इतना करनेके बाद भी मेरे पास पशु-रक्षिणी-समितिके कार्यके लिए समय बच रहेगा?

नरेन्द्र वैसे तो मै ही इस कामको ले लेता लेकिन इसके लिए तो ऐसा आदमी चाहिए जिसमे थोडी मिशनरी स्पिरिट हो।

कामेश्वर : यह आप कह रहे है मिस्टर नरेन्द्र, मैंने तो वैसे तय किया है कि इस साल मै केवल लिखनेका काम करूँगा। सिर्फ़ क्रीएशन।

डॉ० पाल : अच्छा ·· तो ···

नरेन्द्र . मि० पालको क्यो न चुन लिया जाये।

डॉ० पाल : जी मैं इस सस्थासे इस्तीफा देना चाहता हूँ। वैसे मै

समझता हूँ, डॉ० अदारकरको यह काम दीजिए। बडी संजीदगीसे करेंगे।

डॉ० अदारकर : आप तो कमाल करते है पाल साहब, मवेशी-डॉक्टर होनेके नाते मै तो यह नित्य प्रति करता हूँ। रह गये आप लोग, सो अब यह काम आपका है।

मि० कल्पना : देखिए वैसे मै यह काम स्वीकार लेती। लेकिन हमारे सेवा-समाजके मन्त्री महोदय नही रहे। मुझे उनका काम सँभालना ही पडेगा।

नरेन्द्र : नही अदारकर साहब, आप आइए भी, क्या रखा है इसमें !

डॉ० अदारकर : यदि मै यह न ग्रहण करूँ तो शायद ज्यादा अच्छी तरह काम कर सकूँगा।

कामेश्वर · नही-नही अदारकर साहब, इस साल हमारे शहरमे अखिल भारतोय पशु-सम्मेलन होगा। आप रहेंगे तो बडा काम बन जायेगा।

डॉ० अदारकर : नही, नही साहब !

कामेश्वर : ठीक है, मै थोडी देरके लिए आपकी बात माने लेता हूँ। लेकिन डॉक्टर साहब, आप यह बताइए कि सिवा आपके पशु और आदमीमे सम्बन्ध-समानता कौन स्थापित करेगा ?

नरेन्द्र हटाइए भी साहब ! चलिए किसीको भी मन्त्री बनाइए ! लेकिन फिर इसके बाद क्या होगा ?

मि० कल्पना यह कैसे हो सकता है। पहले शरनजीके खिलाफ प्रस्ताव रखिए।

डॉ० अदारकर : जी, प्रस्ताव यों है —

पशु-रक्षिणी-समितिकी यह बैठक शरनजीकी कार्य-विधिके प्रति असन्तोष प्रकट करती है और उनके विरुद्ध यह प्रस्ताव।

नरेन्द्र : यह लीजिए थिक ऑव द डेविल····ही इज़ देयर····

मि० कल्पना : कौन मि० शरन ?

कामेश्वर : लगता है सुबहका भूला शामको घर लौटा है।

मि० कल्पना : फेमिलीके लिए तो कुछ फीलिङ् ही नही है····ही इज ए···

डॉ० पाल : चलिए···आये भी तो वैद्यराजको लेकर

[शरन प्रवेश करता है 'पीछे-पीछे वैद्यजी और उसके पीछे एक पानवाला]

शरन : चले आओ, महादेव पनवाडी···चले भी आओ····

[भीतर जाकर]

वैद्यजी आज दो दिन हो गये होश ही नही आया इसे, जब कभी होश आता है तो बस···

[सहसा मरीज़को होश आ जाता है]

कौन कहता है मैंने कुत्तेको काटा है···वह सब गलत है· मुझे छोडो· मुझे छोड दो, यह पानी यह बाढ यह तूफान यह नालीसे घुसता हुआ गन्दा पानी, यह सब मेरी जान लेकर रहेगे· 'मेरी' · मेरी 'जान' जान लेकर

वैद्य : आप बाहर जाये, मै देखता हूँ

[शरन बाहर आ जाता है]

शरन तो महादेव ! तुमने मुझे पान खिलाया है। लेकिन आज ज़रूरत ही ऐसी आ पडी है। यह रहा रेडियो। उठा ले जाओ। मै रुपया भी नही लेता लेकिन घरमे एक मरीज़ है।

महादेव : जैसी मरजी सरकार, मैने तो कहा था हुजूर पैसा ले जाये।

शरन : ठीक है। ठीक ही तो है। लाओ रुपये ! लो यह रेडियो ले जाओ।

कामेश्वर : अजीब आदमी है। हम लोगोसे बात ही नही करता। स्नॉब कहीका।

नरेन्द्र . चलिए डॉक्टर साहब

मि० कल्पना : ऑल हम्बग ···ह्वॉट् इज दिस ·

डॉ० पाल : नाटकका एक पहलू है कल्पनाजी, नाटकका।

महादेव : यह लीजिए सरकार, पूरे डेढ सौ हैं। गिन लें हुजूर !

[इधर मुड़कर]

शरन : कामेश्वरजी, मिसेज़ कल्पना · डॉ० पाल ···

डॉ० अदारकर . जी हाँ ! हम सभी है। शायद आपको याद न हो। आज आपने मीटिङ् बुलायी थी। सारी बातोपर विचार करनेके बाद हम सब एक साथ इस रायपर पहुँचे हैं कि आप पशु-रक्षिणी-समितिका काम नही कर सकते। इस

लिए हम आपसे महज इतना ही चाहते है कि आप अपना चार्ज दे दीजिए।

शरन किसका चार्ज आप लेना चाहते हैं कोठारी साहब ! जानवरका! पशुका ! तो, वह तो अस्पतालमे है ! और अगर आदमीका चार्ज लेना चाहते हो तो वह मर चुका है ! पागलखाने जानेकी नौबत ही नही आयी !

[महादेवका प्रवेश]

महादेव : सरकार''''सरकार

शरन : तुम महादेव तुम लौट आये ?

महादेव नदीका पानी मेरे घरमे घुस आया है हुजूर, रेडियो यही रख ले। घरकी दीवारे गिर रही है।

शरन : तुम्हारी मरजी, रख दो। और सुनो प्लग भी लगा दो। 'बाबू' लोग रेडियो सुन रहे थे न। लगा दो इसे

[वैद्यजी, घबराकर जाते हुए]

वैद्य : कुछ नही हो सकता '''कोई नही बचा सकता, वात, पित्त, कफ, किसीका विकार नही हैं फिर भी आदमी पागल हो जाये, कुछ समझमे नही आता

शरन : वैद्यजी वैद्यजी,

वैद्य : ब्रेन 'हामोराज' है, दिमागकी नस फट गयी है, कुछ नही हो सकता शरनजी, रोगी मर गया है

रेडियो-ध्वनिः

रातके साढे दस बज चुके है। स्पेशल न्यूज बुलेटिनके समाचार सुनिए :

विश्वस्त सूत्रसे ज्ञात हुआ है कि जिस आदमीने कुत्तेको काट लिया था वह इस समय इसी शहरके एक साहित्यकारके घरमे है। सी० आई० डी० सुपरिण्टेण्डेण्ट मि० भरद्वाजने उस साहित्यकारका घर घेर लिया है, साहित्यकारको ऐसे खतरनाक जुर्म करनेके लिए गिरफ्तार किया जायेगा।

कुत्ता अस्पतालमे है, कुत्तेकी हेल्थ बुलेटिनमे डॉक्टरोने कहा है कि अभी आदमीके जहरका प्रवेश बहुत बढेगा। दरअसल आदमीका जहरीला खून और कुत्तेका खून जब मिल जाता है तो यह जहर बडा खतरनाक साबित होता है। कुत्तेकी ज़िन्दगी खतरेमे है, आदमीके बारेमे पता नही नदीमे बाढ बडे ज़ोरकी है शहरका गन्दा पानी शहरसे बाहर नही निकल पा रहा है, हेल्थ आफिसरका कहना है कि हर नागरिकको घरकी नालियोके प्रति सावधान रहना चाहिए।

डॉ० अदारकर : मि० शरन ! आपको चाहिए कि लाशको जल्दसे-जल्द बाहर कर दें ! ··जहर घरमे भी फैल सकता है।

शरन . जहर तो फैल चुका डॉक्टर, आदमी मर गया है ·

[अन्दरसे डरी हुई सिसकियाँ सुनाई देती हैं, क्षण-भर सन्नाटा, फिर अकस्मात् पुलिस लॉरीके आनेकी ध्वनि]

भरद्वाज . मि० शरन, आप हिरासतमे है। नायकसिह, आपको लॉरीमे बिठाओ।

पाल : मगर क्यों ? क्या किया है शरनजीने ?

रद्वाज . इन्होंने खतरनाक जुर्म किया है। इन्होंने उस पागल आदमीको पनाह दे रखी थी जिससे सारे शहरके पागल हो जानेका खतरा था ! उसको देखते ही शूट कर देने-का हुक्म था

मि० कल्पना. : [चीखकर] और इन्होंने उसको अपने घरमे छिपा रखा था। हाउ इर्रेस्पॉन्सबल ! अपनी फेमिली तककी सीक्योरिटीका खयाल नही इस आदमीको।

नरेन्द्र : [तुरन्त] हाँ, वह आदमी किसी बच्चेको ही काट खाता तो ?

शरन : [दबी हुई कड़ुवाहटसे] हाँ, मिसेज कल्पना ! जुर्म तो मुझसे हो गया। बात यह थी कि मै भूल गया था कि मै पशु-रक्षिणी-समितिका संयोजक हूँ, पशुओको पनाह देनेका अधिकारी था, पागल आदमीकी रक्षा करनेका नही !

मि० कल्पना : मि० शरन, चूँकि अब वह सस्था मेरे हाथमे सौपी गयी है अत. अब आप उसपर व्यग्य करनेपर उतारू हो गये है।

नरेन्द्र नान्सेन्स। शरनजी, अपनी कटुता सस्थाके गलेमे क्यो मढते है ? सस्थाका विधान पशुओकी रक्षा करनेका आदेश देता है, पर आदमीकी रक्षा करनेकी मनाही तो नही करता !

डॉ० पाल नही नरेन्द्रजी ! समितिका विधान आदमीकी रक्षा करनेकी मनाही कहाँ करता है, वह तो सिर्फ यही

आग्रह करता है कि पहले आदमीको पशु बनाओ तब उसकी रक्षा करो, बिना पशु बनाये उसकी रक्षा करना खतरनाक है।

मि० कल्पना लेकिन डॉ० पाल

डॉ० पाल : नही मिसेज कल्पना, आप इसे केवल अपनी सस्थापर ही न ले। सभीका आग्रह इसी बातपर है। सभी आदमीकी रक्षाका दायित्व लेते है, पर रक्षाके पहले आदमीको पशु बनाना चाहते है।

[बाहरसे आती हुई लाउडस्पीकरकी आवाज़]

भरद्वाज : बहसका कैसा अजीब मौका चुना है आप लोगोने। आप लोग शायद भूल रहे है कि मि० शरन हिरासतमे है, और उन्हे अभी लॉरीपर बिठाकर ले जानेके लिए मै बाध्य हूँ। मि० शरन, आप लॉरीमे बैठनेकी

डॉ० अदारकर : पर ठहरिए। पहले इस कागजपर दस्तखत कर दीजिए। मि० शरन। आपके इस्तीफा देनेके पहले ही हमने प्रस्ताव पास कर दिया था कि कि

नरेन्द्र : कि आप पशु-रक्षिणी-समितिके सयोजनके योग्य नही है और ···

डॉ० पाल : केवल मिसेज़ कल्पना ही उस महान् दायित्वको सँभाल सकती है।

शरन : लाइए दस्तखत कर दूँ। [दस्तख़त करता है] बधाई, मिसेज़ कल्पना! नही—नही, इसे व्यग्यमे न ले। मै सचमुच अपनी असमर्थता पहचानता हूँ। बात यह है

मिसेज़ कल्पना कि आप और आपके पति मि० राम करुणाको नकाबकी तरह ओढ सकते है। जब चाहे उतारकर आराम कर सकते है। मुझसे यह नही हो पाता। इसीलिए, शायद मै इस सस्थाके अयोग्य हूँ, इसीके लिए नही, इस सारी व्यवस्थामे 'मिसफिट' हूँ।

डॉ० अदारकर : आप 'मिसफिट' है इसलिए आप तमाम दुनियापर ऐसी व्यवस्था लादना चाहते है कि आदमी कुत्तोको काटे और अपना ज़हर फैलाये !

शरन : अपना नही, आप लोगोका। इस श्रद्धा और करुणाके नकाबके नीचे आपके जहरीले दाँत है। और जो आदमी-से ज्यादा उन पशुओको मात देते है जो पूँछ हिलाकर आपके इर्द-गिर्द चक्कर लगाये। और आजसे नही, सदियो-से जिसने आदमीकी तरह तनकर आपका नकाब चीर फेकनेकी कोशिश की है उसे जमीनमे गडवाकर आपने उसपर कुत्ते छोडे है। [बहुत तेज़ पड़कर रुँधे हुए गलेसे] और और मै निडर कहना चाहता हूँ कि अगर सदियो तक आदमी आतकको चुपचाप पीता रहा है तो यह शर्मकी बात है और आज अगर उसकी प्रतिक्रियामे पागल होकर उलटकर वह कुत्तेको काट बैठा तो यह बेहतर है, उस चुपचाप घुटते जानेसे, उस निस्सहाय घुटनेसे'

नरेन्द्र : [बिलकुल घबराकर] शरन पागल तो नही हो गया।

मि० कल्पना : ओह ! मै इसकी बातें नही सुनना चाहती। मै फेण्ट हो जाऊँगी।

रेडियो-ध्वनि :

यह आकाशवाणी है। मार्वजनिक रूपसे यह सूचित किया जाता है कि नगरमे आयी बाढके कारण सभी नाले रुक गये है और नगरका निचला भाग पूर्ण रूपसे जलमग्न हो गया है। गन्दा पानी बढता जा रहा है। अत हर नागरिकको पूरी सावधानी रखनी चाहिए, घरोके दरवाजे बन्द रखने चाहिए और अपनी एव सम्पत्तिकी रक्षा स्वय करनी चाहिए"

भरद्वाज : [अधीरतासे] मि० शरन !

शरन मै तैयार हूँ मि० भरद्वाज ! पर पहले उस आदमीकी लाश तो बाहर निकालिए। घरमे लाश सड रही है।

भरद्वाज : उसकी फिक्र छोडिए। वह हमारा काम है। उसकी चिन्ता नही। आप पहले लॉरीमे बैठे।

शरन : उसकी चिन्ता नही ! ठीक है, खतरा तो आपको ज़िन्दा आदमियोसे है। खतरा तो आपको मुझसे है। ज़हर तो मुझसे फैल रहा है ? क्यो [हँसता है] चलिए, अब आप लोग जाये, मै आप सबका आभारी हूँ।

[क्षण-भर सन्नाटा छाया रहता है। फिर काना-फूसी-के स्वर और पुलिस लॉरीके स्टार्ट होने और चलनेका दूर जाता हुआ स्वर]

उस रातके बाद

पात्र-पात्रा

प्रकाश : आयु छब्बीस वर्ष

रतन : आयु बाईस वर्ष

सन्तोष : आयु पचास वर्ष

विनोद : आयु साठ वर्ष

विकास : आयु साठ वर्ष

कौशल्या : पैतालीस वर्ष

मिसेज़ चन्द्रा : चालीस वर्ष
(सुधा)

अतिमा . बीस वर्ष

कला : बीस वर्ष

[तेज़ आँधी-तूफ़ानोंवाली एक रात ! तेज़ हवाके झकोरोंके साथ दरवाज़े और खिड़कियोंके पल्लोंकी एक दूसरेसे टकरानेकी आवाज़ें। रिमझिम-रिमझिम बारिशमें बदल जाते हैं बहुत दूरसे रेलकी सीटी सुनाई देती है। एक तेज़ गाड़ी जैसे बहुत दूर तीव्र गतिसे किसी पुलसे गुज़र जाती है और सारे वातावरणको हिला जाती है। घड़ीसे बारहकी घण्टियाँ बजती हैं। सहसा दरवाज़ेपर खटकनेकी आवाज़]

मि० चन्द्रा (सुधा) : कौन ? [एक तेज़ हवाका झोंका गुज़र जाता है और एक सर्द आह भरकर मिसेज़ चन्द्रा फिर बैठ जाती है] कोई नही है। यह मेरी ही परछाइयाँ है जो मुझसे ही टकरा रही है। [फिर दरवाज़ेसे खटकनेकी आवाज़ आती है, मिसेज़ चन्द्रा चौंक जाती हैं।] कौन है ? [फिर एक दर्द-भरे लहजेमे] यह खिड़-कियाँ है, आपस मे ही टकराकर एक हलचलका फरेब पैदा कर रही है। [फिर एक गाड़ी दूर पुलसे गुज़र जाती है] पिछले तीस वर्षोंसे इस पुलसे ठीक इसी वक्त यह गाडी गुजरती है । चिराग गुल करनेका समय आ गया, चलूँ यह चिराग गुल कर दूँ [चलकर चिराग गुल करनेकी ध्वनि] ताकि अँधेरा छा जाये और चारो ओरसे मुझे घेर ले और गुमनाम रोशनीका दाग उस अँधेरेके सीनेपर न उभर सके न उभर सके·· उठो मिसेज़ चन्द्रा, यह बोझिल जिन्दगी कट ही तो जायेगी !

[एक हल्की ध्वनिमें प्यानोकी आवाज़ गूँज जाती है ।]

लेकिन यह खिडकी तो अभी भी खुली है और उस सामनेवाले मकानकी पीली रोशनी बरबस ही मेरे इस कमरेके अँधेरेको छेड जाती है, क्यों ? किसलिए ?

[दूर दरवाज़ेपर दस्तकें]

जाने क्या हुआ है मुझे ? एक अजीब वहम है, बार-बार ऐसा लगता है जैसे कोई दरवाजेकी कुण्डी खटखटा रहा है ।

[दूर दरवाज़ेपर दस्तकें]

लेकिन कोई नही है 'सिर्फ मेरा वहम है''''सिर्फ वहम

[फिर वही दरवाज़ेकी दस्तकें]

वहम, महज़ वहम 'सिर्फ वहम

[फिर दरवाज़ेपर दस्तकें]

कौन है ? कोई है क्या

[उठकर दरवाज़े तक जाती है। फ़र्शपर उसके पैरोंकी आवाज़ गूँज जाती है, फिर वह दरवाज़ा खोलती है' ']

कौन हो तुम लोग । इस तूफानमे यहाँ क्यो आये हो । ओह । तुम दोनो तो काँप रहे हो ' लगता है इस सर्दी और बारिशमे काफी भीग गये हो । मेरा मुँह क्या

देख रहे हो, चले आओ, अन्दर चले आओ न ! · बेवकूफ लोगो [वे भीतर चले आते है मिसेज़ चन्द्रा दरवाज़ा बन्द कर लेती है फिर कुछ सोचकर कहती हैं] तुम दोनो पति-पत्नी हो न !

रतन : नही सिर्फ दोस्त है हम लोग

मि० चन्द्रा : दोस्त · ·दोस्त क्या बला है ? [डाँटते हुए] मुझे बेवकूफ बनाते हो, एक नवजवान लडका और दूसरी नवजवान लडकी यह दोनो सिर्फ दोस्त नही हो सकते ·और फिर तुम्हारे चेहरेपर उदासी भी है पति-पत्नी नही तो होगे, बोलो तुम लोग कौन हो ?

अतिमा : जी, हम लोग सहयात्री है।

मि० चन्द्रा : सहयात्री क्या बला होती है ·तुम औरत हो· ··तुमने इस मरदको अपना सहयात्री क्यो चुना ?

अतिमा : जी !

रतन : जी SSS !

मि० चन्द्रा . मेरा मुँह क्या देख रहे हो ? बैठ जाओ। [फिर डॉटकर] मै कहती हूँ बैठते क्यो नहीं बैठ जाओ

[दोनो बैठ जाते हैं।]

मि० चन्द्रा बेवकूफ लडकी, जा उस बगलवाले कमरेमे···भीगे हुए कपडे बदल आ ··इस ठण्डमे काँप रही है और कहती

है हम सहयात्री है, जा `जा, जा न, मै आग सुलगाती हूँ। [लड़की कुछ दूर चलती है कि मिसेज़ चन्द्रा फिर आवाज़ देती है] चाय पीयेगी या कॉफी ?

अतिमा : जी

मि० चन्द्रा : जी क्या ? कामकी बात पूछ रही हूँ और कहती है जी !
[लड़केकी तरफ़ मुड़कर] और तुम खडे-खडे क्या देख रहे हो, कपडे बदल लो

रतन : जी, ठीक है, मै ठीक हूँ

मि० चन्द्रा : तो तुमको बेठीक कौन कहता है, लेकिन, तुम [एक सूखी हँसी हँसकर] तुम कपडे कैसे बदलोगे, यहाँ किसी मरदका कपडा जो नही है [कुछ सोचकर] ठीक है, तुम रुको, मै लाती हूँ, मेरा खयाल है, एक सेट कपडा मेरे पास अब भी है वही नीला सूट `[ कुछ पुरानी बातोंको याद करते हुए ] खैर, जाने दो `तुम यही बैठो `मै अभी आयी [प्रस्थान]

रतन . अजीब औरत है, मै तो सिर्फ पनाह लेने आया था, इस तूफानी बारिशमे, इस अँधेरी रातमे, बिना वेटिङ् रूमके इस स्टेशनपर रहना जो मुश्किल था ` `

अतिमा . चलो अच्छा हुआ जो उस बस्तीसे दूर नही इस निराले-मे बने हुए मकानकी ही ओर भटक गये, बेचारी कितनी शरीफ है, लगता है, जैसे वनवासमे हमे हमारी माँ मिल गयी हो

रतन : वनवास, वनवास कैसा, और माँ, कैसी माँ`` `

अतिमा : तो तुम इसे वनवास नही मानते रतन, यह वनवास तुम्हे नही लगता।

रतन : मुझे तो जाडा लग रहा है अतिमा, बडी ठण्डक है।

मि० चन्द्रा बडी ठण्डक है, हैं न, यह लो यह सूट पहन लो' ''

रतन : जी, रहने भी दीजिए, मेरा काम चल जायेगा' '

मि० चन्द्रा : काम चल जायेगा, काम कैसे चल जायेगा, आँधी रातको बारिशमें भीगते हुए [जैसे भूली बातें याद करती हुई] बिलकुल ऐसी ही रात थी वह आँधी और तूफान-मे डूबी हुई रात ''

अतिमा आँधी और तूफानोमे डूबी हुई रात

मि० चन्द्रा : तुम लोग यही अँगीठीके पास बैठो मै अभी आयी ' अभी आयी 'अभी आयी

[फ़ेड आउट]

[स्टोवके जलनेकी आवाज़के साथ पानीके उबलनेकी ध्वनियाँ 'मिसेज़ चन्द्रा किचेनमें चाय तैयार कर रही हैं ' धीरे-धीरे स्टोवके सुलगनेकी ध्वनियाँ तीव्र होने लगती हैं, स्मृतियोंकी तीव्रताके साथ स्टोवके सुलगने और पानीके उबलनेकी गतिमें भी तीव्रता आ जाती है, प्यानोकी गतिके साथ उसकी स्वर-लहरियाँ क्रमिक रूपमें आरोहपर जाकर शान्त हो जाती हैं।]

मि० चन्द्रा ऐसी ही अँधेरी रात थी''''यही स्टेशन था''''प्रकाशके साथ मै भी भीगती हुई इसी तरह इसी मकानमे

आयी थी, प्रकाश बाबूकी वृद्ध माँको पहली बार देखा था मैने, प्रकाश और मै भीगी थी इसी तरह उन्होने हमे कपडे दिये थे, अपने हाथसे उन्होने चाय बनायी थी, प्रकाशने कहा था····

[फ्लैश बैक]

प्रकाश सुधा, जाने क्यो आज तुम्हे देखकर माँ कुछ बोली नही, लगता है

सुधा : लगता क्या है प्रकाश, माँ माँ जो होती है न· !

माँ : माँ [एक रहस्यात्मक हँसी] मै माँ नही हूँ प्रकाश प्रकाश· ·

प्रकाश माँ, माँ यह तुम क्या कहती हो ·· ? मैने जिसे आज तक ··

माँ : मै ठीक कहती हूँ, मै तुम्हारी माँ नही हूँ, आज यही बतानेके लिए मैने दोनोको यहाँ बुलाया है, मेरे पास आ जाओ और नज़दीक आ जाओ· और नजदीक

प्रकाश फिर तुम कौन हो माँ

माँ · एक ऐसी ही रातमे अनायास ही मसल दी गयी एक कामना है तुम्हारी माँ, खैर जाने दो ·

प्रकाश : मेरी समझमे कुछ भी नही आ रहा है माँ, मै तो यहाँ तुम्हारी हालत सुनकर आया था, सन्तोप बाबू कल मेरे घर आये थे उन्होने ही बतलाया· ·

माँ : सन्तोष··· तुमने सन्तोषका नाम भला लिया, तुम नही जानते हो सन्तोषको, आज रात वह भी आनेवाला है,

बहुत दिनों पहले उसने मुझे वचन दिया था कि वह मुझसे मिलने आयेगा अभी कल रात उसका तार मिला है, वह आयेगा, जरूर आयेगा''

प्रकाश : लेकिन माँ, तुम यह सब क्या कह रही हो, मेरी समझमे कुछ नही आता''''मै नही जानता यह सन्तोष बाबू कौन है ?

माँ · और तुम नही जानते कि प्रमोद कौन है ? तुम शायद यह भी नही जानते कि कला कौन है ? और सुधा तुम '''

सुधा : जी, मै क्या जानूँ 'आप क्या कहना चाहती है ?

माँ : लेकिन तुम्हे जानना चाहिए, उस खण्डित सत्यको जानना चाहिए जिसमे तुम दोनो अपरिचित हो

सुधा : हमे आशीर्वाद दो माँ, अतीतके खण्डित सत्य लेकर हम क्या करेंगे, हमे भविष्यके स्वप्न दो ।

माँ : ह '''ह''' ह 'ह''''भविष्यके स्वप्न ? भविष्यके स्वप्न मुझे भी नही मिले है, मै उनसे वंचित रही हूँ, क्या मेरी प्रवंचना तुम ले सकोगी''''मेरा व्यंग्य ' 'मेरा उपहास '' मेरी''''

सुधा : मै यह सब कुछ नही जानती''''

प्रकाश : सुधा, तुम भी रहो, अपनी इस मूक सवेदनाको अधिक विषाक्त मत बनाओ, चलो'''

माँ : हूँऽ ' प्रकाश, यह मत भूलो कि मैंने तुम्हे तुम्हारे बचपनसे लेकर आज तक केवल स्नेह ही दिया है ।

प्रकाश : शायद इसलिए माँ, कि तुम उस स्नेहके बदलेमे मुझसे मेरे हर्षकी बूँद-बूँद छीन लोगी' ''

माँ : नही, नही, मै तुम्हारा हर्ष नही लेना चाहती, तुम्हारी आस्था खण्डित भी नही करना चाहती····

सुधा : लेकिन माँ, वह कौन-सा सत्य है जिसे तुम···

प्रकाश : खत्म भी करो सुधा, होगा कोई सत्य, लेकिन मेरा उसमे विश्वास नही है, वह सत्य मेरे कामका भी नही है, मैने केवल उसे जान-बूझकर त्याग दिया है

सुधा : लेकिन यथार्थको मै नही त्यागना चाहती, आप कहे माँ, मै सुनूँगी ।

माँ · तुम्हे नही, मै प्रकाशको बताना चाहती हूँ····

प्रकाश : तो मै भी सुनूँगा, माँ, यदि तुम्हे उन विषाक्त क्षणोको सुनानेसे ही सन्तोष मिलेगा तो मै ज़रूर सुनूँगा ।

माँ : तो सुनो, मै तुम्हे आज यह सारी व्यथा-कथा बताये देती हूँ ।

[एक ज़ोरसे खाँसनेकी ध्वनि, वृद्ध स्वर····बग़ल-वाले कमरेसे खाँसता है । थोड़ी देर तक खाँसनेके बाद वह सरकता हुआ कमरेमे आता है ··]

प्रमोद ठहरो, [साँस खीचता हुआ, जैसे उसकी साँसें उखड़ रही हो] यह मेहमान बनकर हमारे घर आये है, हम इनका स्वागत करेंगे····[साँस खींचते हुए] आओ बेटी·· तुम प्रकाशकी पत्नी हो, तुम्हें देखकर मुझे बडी प्रसन्नता हुई है, लगता है जैसे ज़िन्दगीकी तमाम कुम्ह-लायी हुई क्यारियोमे बहार आ गयी है । अरे कौशल्या खुशीके दिये जलाओ, फूल चढाओ, जशन मनाओ ।

[और फिर ज़ोरकी खाँसी आती है और वह हाँफकर चुप हो जाता है ।]

मॉ मैने तुमसे कहा है कि तुम चुपचाप चारपाईपर पडे रहो, अगर इस बार दिलका दौरा आया तो तुम्हे भगवान् भी नही बचा सकते प्रमोद''

प्रमोद : मुझे अब जीनेकी लालसा भी नही है, लेकिन कौशल्या

[खॉसने लगता है]

माँ : मै कहती हूँ बात करना बन्द कर दो। [नौकरको बुलाती हुई] रामू 'रामू ''

रामू : जी, माँजो !

माँ . साहबको कमरेमे ले जाओ, आज सर्दी बहुत तेज़ है'' 'काफी ओढा दो'

रामू चलिए साहब

प्रमोद : नही, मै नही जाऊंगा मुझे छोड दो, मुझे छोड दो ''' मुझे छोड दोऽऽऽ''' [प्रमोदको बड़ी तेज़ खाँसी आती है, खाँसते-खाँसते वह बेहोश होकर जैसे थक जाता है]

माँ : इतना मना किया था किन्तु मानते ही नही, सेनेटोरियमसे भागकर यहाँ आये है, ज़िन्दगीके व्यंग्योको अब स्वीकार करते है

प्रकाश : ज़िन्दगीके व्यग्य क्या ?

माँ : सब कुछ आज ही जान लोगे, मै जो बताना चाहती हूँ क्या तुम उसे नही सुनोगे ?''''

प्रकाश : सुनूँगा माँ, लेकिन यह अपरिचित वयोवृद्ध रोगी''''

माँ : रोगी····जो लोग ज़िन्दगीकी कटुताको रोषके साथ नही स्वीकार करते है वही रोगी होते है, प्रमोदने भी ज़िन्दगी-की कटुताको चिन्ताके साथ स्वीकार किया है, इसीलिए यह बिसरे हुए है, टूटे हुए है, चिन्तित और परेशान है····

प्रकाश लेकिन इनकी चिन्ताका कारण क्या है ?

माँ : तुम केवल तुम··

प्रकाश : मै····केवल मै ?

माँ : हाँ तुम· केवल तुम····

प्रकाश : जिसे मै जानता नही, जिसे मैने कभी देखा नही, उसकी चिन्ताका कारण मै हूँ····

माँ हाँ तुम हो, आजसे बीस वर्ष पहलेकी बात है, एक रात-को प्रमोद और कला दोनो ही मेरे पास आये थे·· · प्रमोदने कहा था कि मै सन्तोषके जीवनसे हट जाऊँ, उससे अलग हो जाऊँ ··मैने पूछा क्यो ? इसपर विनोद-ने मुझसे केवल इतना ही कहा था कि मात्र कलाके लिए। मैने कलासे उसका कन्धा झँझोडकर पूछा, उसने कहा कि बरबस ही सन्तोष उसके जीवनमे आ गया है, मैने कहा, जीवनमे आनेसे क्या होता है, पता चला प्रमोद और कलाका पारस्परिक सम्बन्ध टूट रहा है, कलाका मै आदर करती थी, मेरी अन्तरंग मित्रोमे थी वह, लेकिन फिर भी मैने उसकी बातोको स्वीकार नही किया, कुछ दिनो बाद स्वयं सन्तोषने मेरे पास लिखा कि वह मुझसे नही, कलासे सम्बन्धित है, कला उसकी आत्मा है। प्राण है। मैने प्रमोद ·

प्रमोद : ठहरो कौशल्या, मैं कहता हूँ ठहरो, किसी भी बातको कहनेके पहले उसके नतीजोपर गौर कर लो, मेरी जिन्दगीसे, मेरी कहानीसे, मेरी ज़िन्दगीके व्यंग्योसे प्रकाशका क्या सरोकार है, ज़िन्दगी मुझे जिस रूपमे भी मिली मैने उसे स्वीकार किया, मेरी स्वीकृति अपनी थी, फिर मै क्या करता अपनी सहज प्रतिक्रियाके साथ उसे झेल लिया …उससे अधिक मेरे• पास उसका कोई महत्त्व नही है •

मॉ : महत्त्व तुम्हारे लिए नही है लेकिन, यह वह कड़ियाँ है जिन्हे ज़िन्दगीमे प्रवेश करनेके पहले जान लेना जरूरी है।

प्रमोद जरूरी है, हूँऽ, पानीसे भीगे हुए उस सर्दीमे यह दोनो यहाँ खडे है, तुम्हे इसका खयाल नही आया कि इन्हे कपडे बदल लेनेके लिए कहो 'तुम्हे 'तुम्हे रामू' ' रामू [आवाज़ लगाता है] अच्छा मैं ही लाता हूँ, वही नीला सूट, वही तो एक बचा है हमारे पास, हूँ हूँ····लो, पहन लो प्रकाश····

[कट]

[सहसा स्टोवकी आवाज़ तेज़ होती है, पानीके उबलनेकी ध्वनियाँ सामने आती हैं, वृद्धाके स्वरमें मिसेज़ चन्द्रा अपने ही से बोल पड़ती है]

मि० चन्द्रा : ओह ! पानी तो जला जा रहा है, उँह, जाने क्या हो गया है मुझे, वही नीला सूट तो मैंने रतनको भी दिया है, वैसी ही भयानक सर्दी है, भीगे हुए यह नवयुवक और

वह लडकी, रतन और अतिमा, वही नीला सूट है वही दिन, वही घडी, वही समय'' 'कितनी अजीब रात है आजकी, लगता है, मै खुद ही अपना बीता हुआ जीवन देख रही हूँ' ' लगता है'

[बाहर फिर दरवाजा खटकता है ।]

आयी, यह चाय भी तैयार हो गयी, फिर खानेके लिए भी कोई चीज निकालूँ, उँह '''होगा ऐसे ही दे दे, अमीर या गरीब, इनसान है यह लोग भी, इस आधी रातको जाने कहाँ निकल पडे है '

[सहसा फिर बारिशका झोका आता है और दरवाज़ो-के खटकनेकी ध्वनि आती है ।]

मि० चन्द्रा : कौन ?

विकास मै हूँ विकास

[मिसेज़ चन्द्राके हाथसे प्याला छूटकर गिर पड़ता है ।]

मि० चन्द्रा : तुम हो विकास ?

विकास : हाँ मै हूँ विकास, केवल विकास

मि० चन्द्रा : और वे दोनो कहाँ गये है, रतन और अमिता'''

विकास : : मिसेज़ चन्द्राका मकान ढूँढने'''

मि० चन्द्रा : क्या बकते हो ?

विकास : बक नही रहा हूँ मिसेज़ चन्द्रा, मेरा मतलब सुधाजी ' मै कोई बकवास नही कर रहा'' 'उनको देखते ही मै समझ गया' ''

मि० चन्द्रा : कहाँ गये वह इस घोर बारिशमे, वह भीगते हुए चले गये तुमने उन्हे रोका भी नही ·

विकास यह उम्र ही इस जोखिमकी होती है मिसेज चन्द्रा, तुम्हे भी शायद अपना ज़माना याद पडता होगा· ·

मि० चन्द्रा . कैसा जमाना ? क्या बकवास करते हो ?

विकास : मै बकवास नही कर रहा। मुझे तो ज़िन्दगी चाहिए मिसेज चन्द्रा, जिन्दगी

मि० चन्द्रा : जिन्दगी और तुम ? ···दूसरोकी ज़िन्दगी तबाह करनेवाले ज़िन्दगीका मतलब कभी भी नही समझ सकते,····'' तुम्हे क्या पता ·

विकास : मुझे सब पता है, बेकारकी कोशिश मत करो। यह बताओ, मेरी बच्ची कहाँ है, वह बच्ची ·वही जिसे मै तुम्हारे पास छोड गया था।

मि० चन्द्रा मै नही जानती वह कहाँ है।

विकास . तुम्हे जानना चाहिए सुधा, तमाम ज़िन्दगी इसीलिए तुमसे नही मिला ताकि तुम उसको जिस तरह चाहो रखो, जैसे चाहो पालो—उसकी देख-भाल करो। आज मै अपनी अमानत वापस लेने आया हूँ, बोलो वह कहाँ है ?

मि० चन्द्रा : उसे लेकर अब क्या करोगे· एक ज़माना था जब तुमने उस समय मुझे ठुकराया था उस अनजान बच्चीको फेक दिया था। आदमीकी नैतिकता केवल एक बार परखी जाती है, निकल जाओ यहाँसे· ·

विकास	ओ हो ! नैतिकता ? नैतिकताका तो मैने उस रातके बादसे गला घोट दिया था और वो

मि० चन्द्रा	: जिन्दगी कोफ्त हो गयी थी, तमाम भटकनो, उलझनो, परेशानियोक बावजूद मैने जिसकी रक्षा की, जिसे बचाया, जिसे यह नही जानने दिया कि उसके ऊपर किसीकी मनहूस छाया है, तुम आज उसीको जानने आये हो, उसी जख्मको छेडने आये हो' ''निकल जाओ यहाँसे

विकास	मै तो चला जाऊँगा लेकिन उस रातके बादसे आज तक मैने सिर्फ जीनेकी कोशिश की है और मौतने मुझे बराबर काली परछाईंकी तरह घेरा है। मैने जीवनको मुट्ठियोमे कसकर रखना चाहा है और जिन्दगी एक रिसती रेतकी तरह मेरी मुट्ठियोसे खिसकती रही है''''
तुम्हे याद है वह रात 'दूर''''शहरसे दूर, उस निराले रेलवे स्टेशनपर जब मै तुम्हे साथ लेकर उतरा था। सारी दुनियाको ठुकराकर हमने साथ-साथ चलनेका वायदा किया, समाज, परम्परा सबका विरोध किया था, तुम''''तुम शायद नही मानोगी, उस रातके बादसे मैं बदल गया था।

मि० चन्द्रा	: उस रातके बादसे ही मुझे लगा था कि तुम आदमी नही पशुसे भी गिरे-गुज़रे हो, बिलकुल गिरे-गुज़रे'''' कठोर, दायित्वहीन, गैर-जिम्मेदार, जब तुम वचन दे रहे थे उसी समय मुझे ऐसा लग रहा था कि तुम जितना ही अधिक चिल्ला-चिल्लाकर विद्रोह कर रहे हो उसमे कही बनावट है, कही कृत्रिमता है, कही

झूठापन है, लेकिन मैं अन्धी थी ···बिलकुल अन्धी, नही तो

विकास : मैं उन सब वादोको खत्म करने आया हूँ सुधा, मुझे सिर्फ एक बार उस नन्ही बच्चीको दिखा दो ·

मि० चन्द्रा : हूँ, हूँ, हूँ ···खैर, विकास, तुम उस बच्चीको देखना चाहते हो जिसे तुमने गलीज कहकर कूडेमे फेक दिया था, जिसे तुमने हमारे आपसी सम्बन्धके बीच खटकने-वाला कांटा कहा था, जिसे तुमने विवाहित जीवनका अभिशाप कहा था, यही रेलवे स्टेशन है, तुम्हारे घरसे निकलनेके बाद जब मैं निराधार निरालम्ब चल पडी थी, तो जाने क्यो डेढ-दो सौ मील लम्बी यात्राके बाद मैं यही उतर गयी थी, क्यो उतर गयी थी इसका कारण मैं पिछले तीस वर्षोंसे खोज रही हूँ, जानना चाहती हूँ लेकिन नही जान पाती, जिन्दगीकी इस मोडको मैं पहचानती हूँ लेकिन वह रात नही भूल सकती, यह सुनसान निराला स्टेशन और उसके बरामदेमे यो ही बारिश और तूफानमे अकेली मैं और वह नन्ही-सी बच्ची····थोडी देर बाद किसीने दरवाजा खोला, एक रोशनी अन्धकारमे तैरती हुई आयी, उसने मुझे छू दिया····

[फ्लैश बैक]

प्रकाश : तुम कौन हो, बोलती क्यो नही, बोलो····

मि० चन्द्रा : कोई नही, इस बारिशमे केवल बचनेके लिए रुक गयी हूँ ·

प्रकाश : भीतर आ जाओ, बरामदेमे हवा और बौछार है, बच्चे-की तबीयत खराब हो जायेगी, आओ-आओ···मैं कोई शैतान नही हूँ देवीजी, आदमी हूँ आदमी ओह ! यह मेरा चेहरा क्यो घूर-घूरकर देख रही हो, आ जाओ··

[मिसेज़ चन्द्राका प्रवेश, दरवाज़ा बन्द होना और फिर एकदमसे चीख पड़ना]

प्रकाश : क्या हुआ तुम्हे ? तुम चीख क्यो पड़ी, ओह ! यह खुली हुई शराबकी बोतल देखकर, यहाँ इस कमरेमे इतने सारे शेर और चीतोकी खाल देखकर, घबराओ नही, यह सब मेरा नही है, मेरे चाचाजी है सन्तोष बाबू उन्हीका है ! मैने शराबकी एक बूँद नही चखी है, मै उसका स्वाद भी नही जानता, मेरे चाचाजीको शेरके शिकारका शौक है, दिन-रात बन्दूक और कारतूस-की ही बाते करते है, लेकिन इतने शिकारी होनेपर भी क्या दिल पाया है उन्होने, बिलकुल भीम-जैसा · ओ तुम ···तुम अभी बैठी नही, बैठ जाओ, सर्दी लग रही है ? अगीठी जला दूँ, नही ! अच्छा-अच्छा 'लो यह कम्बल ओढ लो' दूँ कितनी बेवकूफ हो तुम, बिना किसी बिस्तर-सामानके चल पडी हो, खैर किसके यहाँ जाओगी ·· बोलो भी·· कुछ बोलती क्यो नही ?

मि० चन्द्रा : किसीके यहाँ नही····

प्रकाश : किसीके यहाँ नही ? हूँऽऽ यह भी खूब रही, तो फिर तुम यहाँ उतरी किसलिए हो' ··

मि० चन्द्रा : मुझे खुद नही मालूम, बस उतर पडी हूँ····

प्रकाश : ओह ! यह बात है ! क्या किसी फ़िल्मकी नायिका हो ? लगता है तुम्हारे प्रेमीने तुम्हे ···इ 'है। इस बच्चीको साथ लेकर तुम किसी निराली जगहमे आत्म-हत्या करने आयी हो' ··

मि० चन्द्रा : नही, आत्म-हत्याको मै कायरता मानती हूँ ··

प्रकाश : ओऽ ··तो किसी उपन्यासकी नायिका हो ?

मि० चन्द्रा : धन्यवाद ! अब जा रही हूँ, आप किसीका दु.ख और दर्द समझनेमे सदैव असमर्थ रहेगे···

प्रकाश ओह तो यह बात है, खैर· लेकिन क्या तुम्हे नही लगता कि हमारा-तुम्हारा यहाँ इस अँधेरी रातमे एक-दम अचानक मिल जाना बिलकुल रोमैण्टिक फिल्मी दुनियाके किस्से-सा लगता है। खैर अब आ ही गयी हो तो आओ मै आपका हृदयसे स्वागत करता हूँ।

[सहसा मिस्टर सन्तोष और कलाजीका प्रवेश]

कला : प्रकाश, क्या हो रहा है यहाँ ? यह लडकी कौन है ?

सन्तोष : **[अँधेरी रातमें अचानक एक फ़ायर खिड़कीके बाहर करते हुए]** होगी कोई, तुम्हारी आदत है कि· ·

कला . चुप रहिए, लेकिन यह तो अजीब है।

प्रकाश नही माँ, यह मेरे मित्रकी बहन है, चाचाजीके पास आयी है।

कला : सुनते हो ? यह लडकी तुम्हारे पास आयी है, ओह, तुम कहाँसे आ रही हो ?

मि० चन्द्रा : रतनपुरसे !

कला : प्रकाश, इसे मेरे कमरेमे भेज दो; कही रात-भर बच्चे-को लेकर आराम करे, फिर सुबह तुम्हारे चाचाजी इसे देख लेगे, लगता है लिवरकी बीमारी है, हो ही जाता है। तुम्हे नही मालूम होगा प्रकाश, बचपनमे तुम्हे भी निमोनिया हो गया था

डॉ० सन्तोष : और तुम्हारी माँ तुम्हे लेकर यहाँ आयी थी [व्यंग्यसे] लेकिन तुमको देखकर कलाजीकी तबीयतमे जाने क्या आया कि बस तुम्हे अपने ही यहाँ रख लिया, माँ तुम्हारी अब भी मेरठमे है, लेकिन

कला : क्या बकते हो, जानते नही, प्रकाश इस घरमे बेगानेकी तरह रहता है और···

डॉ० सन्तोष : लेकिन इसका जिम्मेदार कौन है ? क्यो नही तुम वह सारी घटना बता देती। जिसे तुम बरसोसे छिपा-कर खुद दूर रही हो और प्रकाशको भी तोड रही हो !

कला : नही, मै ऐसा नही कर सकती, उससे कौशल्याका दिल टूट जायेगा सारा जीवन उसने प्रकाशकी माँका अभि-नय किया है सन्तोष · प्रकाशकी न होते हुए भी वह प्रकाशकी माँ है और मैं प्रकाशकी माँ होते हुए भी उसकी माँ नही हूँ। ओऽ ! उधर इस अँधेरेमें कहाँ बन्दूक़ चला रहे हो ··

डॉ० सन्तोष : इसी अँधेरेको तोडना चाहता हूँ, रोशनीकी एक किरन चाहिए, पता नही कहाँ विनोद पडा चीख-चिल्ला रहा होगा, सच कला, क्या तुम्हे उसकी कभी भी याद नही आती।

कला : तुम्हे हो क्या गया है, यह सब क्या बक रहे हो ?

डॉ० सन्तोष : आज तीस साल हो गये है इस नाटकको चलते, सोचता हूँ इसका अन्तिम दृश्य क्या होगा, इसका समापन किस दिशामे होगा, पता नही ।

कला : इसपर फिर बाते होगी, चलो, उधरसे प्रकाश आ रहा है·

[फ़ेड आउट]

मि० चन्द्रा : पता नही प्रकाशने कितनी सहानुभूति दी थी मुझे, लेकिन एक मै ही थी कि सबसे डरती थी, प्रकाशपर भी मेरी आस्था नही थी । मुझे बराबर यही लगता था कि वह भी एक दिन यो ही तोडकर चला जायेगा, मै भी· टूक टूक होकर भी बच नही पाती थी, इसी संघर्षमे जीवन चल रहा था, लेकिन इसी बीचमें मैने दूसरा रास्ता चुना, प्रकाशको मैने जीवनमे स्वीकार कर लिया, सन्तोष बाबूने मेरी लडकी ले ली, पता नही कहाँ होगी वह, देश-विदेशमे पढती भटकती । लेकिन विकास, आज प्रकाश बाबूको भी मरे हुए दस साल हो गये, तुम अब भी जीवित हो ···

विकास तुम्हे आश्चर्य होता है, यह मत समझो सुधा, कि मुझे मालूम नही है, मै जानना चाहता हूँ यह रतन कौन है, यह अतिमा कौन है, यह सब· ··

मि० चन्द्रा मै नही जानती यह कौन है · ·और अगर जानती भी हूँ तो उसे मै तुम्हे नही बताऊँगी·· ·

विकास हूँ···जाने क्यो मुझे उनको देखकर लगा जैसे वे अपने हो बिलकुल अपने

मि० चन्द्रा अपने ?····हूँ··तुम्हारा भी कोई अपना हो सकता है, मै पूछती हूँ आखिर मेरे जीवनमे बरबस तूफान उठाने क्यो आया है ?

विकास ताकि वह सत्य, जिसे तुम तूफान समझती हो, उसे अपनाकर तुम वास्तविक शान्ति पा सको मै पूछता हूँ, तुम अतिमासे डरती क्यो हो ? तुम रतनसे डरती क्यो हो, तुम जानती हो कि उन दोनोने विवाह कर लिया है, तुम्हे यह भी मालूम है कि अतिमा तुम्हारी लडकी है, तुम उसकी माँ हो· भली हो, बुरी हो, जो भी हो, फिर भी··

मि० चन्द्रा मै जानती हूँ, वे हमसे घृणा करते है·

विकास : तुमसे नही वे हमसे घृणा करेगे, ले चलो न मुझको उनके पास, मै उनकी घृणा सहन कर लूँगा।

मि० चन्द्रा तुम मै तुम्हारी छाया भी उनपर नही पडने देना चाहती, इसलिए मै खुद भी उनसे नही मिलती क्योकि मेरे साथ भी तुम्हारी मनहूस छाया लगी हुई है।

विकास : तुम·· तुम क्या कह रही हो सुधा, अगर ज़िन्दगीमें मैंने गलती की तो· ··तो

मि० चन्द्रा : तो मैने तो तुम्हे क्षमा कर दिया, लेकिन मै नही चाहती कि तुम्हारी सन्तान तुम्हे क्षमा करे। तुम केवल उपेक्षा-के ही अधिकारी हो विकास, केवल उपेक्षा ·· मुझे अकेले छोड दो, जाओ यहाँसे, चले जाओ।

विकास : लेकिन जानेके पहले मैं यह जानना चाहता हूँ ····

मि० चन्द्रा · तुम कुछ नही जानना चाहते· तुम सिर्फ मुझे प्रताडित करना चाहते हो · लेकिन मैं अब प्रताडित नही हूँगी, जाओ जाओ यहाँसे, भूली हुई सुधियाँ मत याद दिलाओ, मत याद दिलाओ, मैं कहती हूँ चले जाओ ··· जाओ ··[सिसकियाँ]

[फ्लैश बैक]

कौशल्या . मैंने तुमसे बार-बार कहा है प्रमोद, अपनी कृत्रिम छाया प्रकाशपर मत पडने दो, सन्तोषने मुझे धोखा दिया है और कलाने तुम्हे, लेकिन इसके लिए न तुम्हे प्रकाशसे बदला लेना चाहिए न मुझे जिन्दगीमे ये भावनाके क्षण बडी कठिनाईसे आते है, मैं उन्हे झूठा नही मानती, हो सकता है वह जिन्दगी ही बदल डाले, मै उन्हे झुठला नही सकती प्रमोद बाबू !

प्रमोद · लेकिन मै, भावनाओसे वंचित केवल एक यन्त्र नही हूँ····मैं जीवनकी पूर्णतामें तब भी विश्वास करता था और आज भी विश्वास करता हूँ, तुम····

कौशल्या : ठहरो प्रमोद, मनुष्यको जीवनमे विश्वास करनेके लिए तपस्या करनी पडती है, जीवनकी पूर्णता बिना उसके नही आती ·

प्रमोद लेकिन वह पूर्णता मिले कहाँ कौशल्या · तुम· ··प्रकाश, कला· 'नही, नही····नही इनमे-से कोई नही ··

कौशल्या : इनमे-से यदि कोई तुम्हे पूर्ण जीवनकी दृष्टि नही देता

तो क्या तुम इनमें-से एक-एकको खण्डित करके जीना चाहते हो, क्या तुम चाहते हो कि ˙˙

प्रमोद : मै और कुछ नही चाहता कौशल्या, मेरे पास पैसा है, यश है, नाम है, वैभव है किन्तु मेरे पास शान्ति नही है, और फिर अशान्त व्यक्ति सब कुछ कर सकता है, दूसरो-का जीवन खण्डित भी कर सकता है˙

कौशल्या : लेकिन उस खण्डित जीवनका अर्थ क्या होगा˙˙˙एक घुटन। एक घुलती हुई मौत˙˙˙˙

प्रमोद : यदि मौत ही मुझे शान्ति दे सकती है तो मुझे वह भी स्वीकार होगी ˙˙˙

[सहसा प्रकाश और सुधाका प्रवेश]

प्रकाश : हूँऽ, तो माँ, यह बात है˙˙˙˙मै जानना चाहता हूँ माँ, कि आखिर प्रमोद बाबूको यहाँ ˙˙

माँ : केवल इसलिए कि यह चल-फिर नही सकते, इनके दोनो फेफडे खराब हो चुके है, मौतकी घडियाँ गिन रहे है˙˙˙

प्रकाश : तो इनके जीवनकी अन्तिम इच्छा भी पूरी कर न दीजिए ˙

माँ . मैं नही जानती कि इनके जीवनकी अन्तिम इच्छा क्या है˙˙˙˙

प्रकाश : आपको जानना चाहिए माँ˙˙˙˙जीवनके सत्योको एकदम-से छिपा देनेसे लाभ˙˙˙˙

माँ : लाभ-हानि मै नही जानती और न मै उसे जानना ही चाहती हूँ ।

प्रकाश : तो लो, मै पूछे लेता हूँ ··

माँ नही प्रकाश···तुम एक दबे हुए तूफानको जबरदस्ती उभार दोगे· 'हमसे हर एक जो पूरी जिन्दगी केवल अविश्वासमे ही बिता दे, उन अविश्वासके क्षणोको लेकर क्या करोगे, मुझे भय है प्रकाश, कही वे तुमसे तुम्हारा सुख, तुम्हारी शान्ति भी न छीन लें ··

प्रमोद : नही प्रकाश, मुझे लगता है तुम्हारी माँ ठीक ही कहती है, तुम मात्र इतना ही समझो कि ·

प्रकाश : कि मै कोई नही हूँ कि मै केवल दो गैर-जिम्मेदार लोगोके बीचकी जनमी हुई चिनगारी हूँ, अभी-अभी बुझ जानेवाली चिनगारी ·

माॅ : नही, तुम दो अनास्थाओके बीच जनमी हुई हम सबकी आस्था हो, तुम अक्रूर हो, उठो, बढो और पनपो ।

सुधा : लेकिन लेकिन माँ, यह अतिमा ·· यह मेरी छोटी

माँ · इसे मुझे दे दो, जीवनमे मैने और कुछ नही किया है, केवल भविष्यमे विश्वास रखकर ही चलनेकी कोशिश की है ··

प्रमोद : [खाँसते हुए] खत्म भी करो यह किस्सा, खत्म भी करो यह बात, मेरी साँसे फूल रही है····[खाँसने लगता है]

सुधा : माँ

माँ : प्रमोद बाबू ···

प्रमोद : मेरे नज़दीक आओ और नज़दीक आओ, मुझे जाने क्या हो रहा है प्रकाश'' 'प्रकाश''''प्रकाश''''

सुधा : चलिए न प्रकाश बाबू !

प्रकाश : मै चल भी कहाँ रहा हूँ सुधा, मै ठहरा हुआ हूँ, लगता है मेरी जिन्दगी जहाँसे शुरू हुई थी वही खत्म भी हो रही है।

प्रमोद : ज़िन्दगी शुरू करो ज़िन्दगी कभी खत्म नही होती ''' जहाँसे पकडमे आ जाये वहीसे शुरू करो।

[दरवाज़ेपर दस्तकोंकी आवाज़, पृष्ठभूमिमें स्टोवके जलनेकी आवाज़]

मि० चन्द्रा · कौन है ?

अतिमा मै हूँ माँ ! [बग़लके कमरेसे निकलते हुए]

मि० चन्द्रा : तुम ' क्या तुम यही थी बेटी क्या इसी कमरेमे ही तुम लोग थे।

अतिमा . जी

रतन · विकाम बाबूने कहा, तुम इसी कमरेमे बैठो, तुम्हे तुम्हारी जिन्दगीकी झलकियाँ मिल जायेंगी' '

मि० चन्द्रा : [क्रोधसे] विकास '

विकास : इस रातके बाद तुमने ज़िन्दगीको नये अन्दाजसे शुरू किया था सुधा, आज इस रानके बादसे इनको जिन्दगी-को नये तरोकेसे शुरू करने दो आओ, ओ ओ रतना' ''आओ आओ अतिमा''''आओ' '

मि० चन्द्रा : यह क्या कर रहे हो····

विकास . कुछ नहीं, केवल स्टोवकी आवाज़ धीमी कर रहा हूँ।

मि० चन्द्रा : लेकिन नहीं, पानी अभी और उबलने दो, चाय तैयार करनी है 'हटो यहाँसे ···

[धीरे-धीरे स्टोवकी आवाज़ फ़ेडआउट कर जाती है।]

आकाशगंगाकी छायामें

पात्र-पात्रा

अमित

शिरीष

गार्ड

मधु

शशि

नर्स

[स्टेशनकी भीड़-भाड़ शोर-गुल। चलते-चलते गाड़ी रुक जाती है। सारा शोर-गुल जैसे कम्पार्टमेण्टमे घुस जाता है··· धीरे-धीरे सब शान्त होता है।]

मधु . कौन-सा स्टेशन है अमित ?

अमित : बरेली है मधु, देख रहा था शायद तुम्हारे चाचाजी आये हो।

मधु : नही अमित, चाचाजी कभी भी नही आयेगे · पिछले दस सालोसे वे नही आ रहे है, मुझसे नाराज है न

अमित : तुम्हीने कहा था इसलिए उनको तार भेज दिया था।

मधु : मौत जब नज़दीक होती है अमित, तो जाने क्यो हर पुरानी स्मृति ताजी हो आती है ।

अमित . [चौंककर] मधु····मधु····देख रही हो मधु····देख रही हो····

मधु : [चौककर] क्या ? क्या बात है अमित ?

अमित : वह देखो · वह ·· इनवैलेड चेयर देख रही हो, देख रही हो उसपर कौन है, देख रही हो उसके साथ कौन ···लगता है वह इसी कम्पार्टमेण्टमे आ रहे है।

मधु . कौन है ? शिरीष–अन्धा और अपाहिज शिरीष और उसके साथमे शशि भी है न, वह जला हुआ कुरूप चेहरा, है, सच लगता है वह इधर ही आ रहे है ··

अमित : नही, नही·· [एक ठण्डी साँस लेकर] चलो, वह लोग बगलवाले कम्पार्टमेण्टमे चले गये, रात हो रही है, इन लोगोसे भेट नही होगी ।

[ट्रेन स्टार्ट करती है, कुछ दूर चलनेके बाद]

मधु सर्दी है । खिडकियाँ बन्द कर दो अमित !

अमित शाल ओढ लो मधु, सर्दी तेज़ है । कही टेम्प्रेचर न बढ जाये ।

मधु अब टेम्प्रेचर बढने-घटनेका डर मालूम नही होता अमित· ·वैसे अब तो बता दो हम कहाँ जा रहे है ?

अमित कुछ नही मधु, बस ज़रा भुवालीमे डॉक्टरोको दिखा ले, एक शक है दिमागमे ··दूर हो जाये ··घबरानेकी बात नही है । सब ठीक हो जायेगा ।

मधु [व्यंग्यसे] सब ठीक हो जायेगा ह···ह··· ह· ·· [सहसा रुककर] सुनो अमित····मुझे बीचवाली बर्थ-पर सो जाने दो ।

अमित : क्यो· ·?

मधु : वहाँ हवा कम लगेगी, जरा-सा सहारा दो ।

अमित . सहारा [व्यंग्य] ठीक है, उठो ।

[ट्रेनकी स्पीड तेज़ हो जाती है, मधु उठती है और गिर पड़ती है]

अमित . मधु ·मधु· मधु बेहोश हो गयी,· उठाकर बर्थपर लिटा दूँ ।

[उठाकर बर्थपर लिटा देता है]

अमित यह जिन्दगियाँ जैसे झेलनेसे भी बच रहती है, इसमे कुछ ऐसा है जिसे झेला नही जा सकता, कुछ अजीब है मधु, यही मधु तो है आजसे दम वर्ष पूर्व लगता था मोम और फूलको गलाकर इसका सारा जिस्म रचा गया था

[मधुको जैसे थोड़ा-थोड़ा होश आता है लेकिन अर्ध-मूर्च्छित दशामे कुछ बड़बड़ाती-सी कहती है ।]

मधु : शिरीष' ''नही नही शिरीष' ' मेरी शकल मत देखो, मत देखो 'यह रूप, यह शरीर, यह सब सारे शृंगारो-के बावजूद 'सारे शृंगारोके बावजूद ' शिरीष शिरीष '''[मधु फिर बेहोश हो जाती है, एक मूर्च्छनामे जैसे उसे विस्मृत घटनाएँ याद हो आती हैं। उल्लास-पूर्ण सगीत बजने लगता है '''सहसा सगीत जो नस-नसमे हर्ष, उल्लास और उन्माद भर देता है ।]

[फ़्लैश बैक]

शिरीष मधु ' !

मधु : क्या है !

शिरीष यह चाँदनी 'यह ठण्डी रेत उधर सामनेके ढहते कगार यह सब कैसा लगता है'

मधु [शोख़ीके साथ] बहुत अच्छा''''

शिरीष : जादू-जैसा'' ?

मधु सपना-जैसा ? बिलकुल झिलमिले सपने-जैसा····[शिरीष चुप हो जाता है]

मधु : तुम चुप क्यो हो गये शिरीष

शिरीष : जाने क्यो मेरी नजर तुम्हारे बालोमे उलझ गयी

मधु : नही तो तुम तो मेरी घडीकी तरफ देख रहे थे, तुम बात बना रहे हो

शिरीष : हूँ 'आखिर घडीकी तरफ देखना गुनाह है क्या ?

मधु नही लगता है यह घडी तुम्हे खटकती है

शिरीष . क्यो ? इस घडी बेचारीने क्या किया है ?

मधु : शादीमे इसे अमितने दिया था न

शिरीष : अमित एकदम ज़िन्दगीको गीतकी तरह बितानेवाला, पागल

मधु : पागल ! [कुछ विस्मयसे]

शिरीष क्यो ? क्या तुम्हे मेरा कहना बुरा लग गया क्या ?

मधु : नही तो

शिरीष : लेकिन तुम कुछ उदास हो गयी मधु' ' अमित शायद····

मधु . अमित अमित अमित आखिर रहते-रहते तुम्हे अमितकी याद क्यो आ जाती है ?

शिरीष [कुछ गम्भीर होकर] कुछ नही····तुम बुरा मान गयी ? [बात टालते हुए] अब मै अमितका कभी भी नाम तक नही लूँगा।

मधु : मुझे लगता है····

शिरीष : मुझे कुछ नही लगता मधु, चलो बजरा खडा है, थोडी देर नावपर''

मधु : नही' अब घर चलो

शिरीष : अभीसे देखो आज मै अपनी प्रयोगशालामे नही गया 'महज़ इसलिए कि तुम्हारे साथ यहाँ इस वातावरणमे कुछ समय बितायेगे लेकिन

मधु लेकिन बीचमे अमित आ गया शिरीष, मैने तुम्हे सदैव चाहा है तुम्हारे रूपकी मैने पूजा की है। यह रूप यह यह यह

शिरीष : रूप ह - ह रूपकी बात जब तुम मेरे रूपकी प्रशसा करती हो तो जाने क्यो मुझे शशिकी याद आ जाती है, लगता है जैसे मैने अन्याय किया है, उसके सुन्दर रूपको जलाकर विरूप बनानेवाला मै हूँ, मेरी ही प्रयोगशालामे उसका चेहरा जलकर भयानक हो गया था''' सोचता हूँ क्या रूप बदल जानेसे दृष्टि भी बदल जाती है, मै तुमसे सच कहता हूँ मधु, प्रयोगशालामे शशि जब जली थी और महीने-भर बाद उसके चेहरेका प्लॉस्टर खुला था तो देखकर मै चीख पडा था मुझसे वह कुरूपता देखी नही गयी थी

मधु और उसी व्यंग्यको शायद तुम मेरे ऊपर करते हो ? तुम यह क्यो भूलते हो शिरीष, कि मैने तुम्हे चुना है ' तुम्हे मैने'

शिरीष मुझे नही मधु, शायद मेरे इस रूपको, वैसे मधु, तुम अमितके साथ ज्यादा प्रसन्न रहती''' वह रोज़ तुम्हारे

साथ घूमने जाता, पिकनिक, तफरीह···मजा · जिन्दगी-की तमाम दिलचस्पियाँ तुम्हारे साथ होती और आज जो तुम मुट्ठी-मुट्ठी-भर रेत लेकर यो ही उछाल रही हो, यह हालत न होती। तुम्हारा यह रूप यह

मधु : और भी कुछ कहना है शिरीष··

शिरीष : क्या मै कुछ कह रहा था·

मधु : नही सिर्फ अपनी चुटकियोमे रेत भरकर तुम एकदम मेरे निकट आ गये थे। तुमने चाहा था कि मेरी माँग-मे तुम यह रेत भर दो लेकिन मैने तुमको रोक लिया था ·

शिरीष : मैने ऐसा क्यो चाहा था मधु, शायद इसलिए कि मुझे तुम्हारी यह सिन्दूर-भरी माँग अच्छी नही लगती··

मधु वह क्यो अच्छी लगेगी जिन चुटकियोमे शशिके लिए अब भी दर्द बाकी हो ·क्यो · तुम उठकर खडे क्यो हो गये ?

शिरीष : इसलिए कि हमे जाना है

मधु : लेकिन कहाँ

शिरीष : वही अपनी प्रयोगशालामे 'आकाशगंगाकी छायामें मैं भूल गया था, आज मुझे फिर जाना है

मधु : लेकिन

शिरीष : लेकिन कुछ नही मधु, मुझे जाना है, मैं जाता हूँ

मधु : ठहरो मै भी चलती हूँ, तुम्हारे साथ ही चलूँगी, चलो।

शिरीष : नही तुम घर जाओ ··

मधु : मै भी प्रय गशालामे ही जाऊँगी' 'चलो

[चेंज़ ओवर]

मधु . अमित अमित ' '

अमित [नींदसे जगते हुए] क्या है मधु ?

मधु : देखो अमित, तुम बिलकुल मेरे पास' रहो 'मेरे नजदीक।

अमित : क्यो''''? बात क्या है मधु ''

मधु : लगता है अमित, कि जैसे शोशेके उस पारसे शिरोप, शशि, और जाने किस-किसकी शकले मेरे एकदम पास आ रही है 'उनकी व्यग्य-भरी हँसी बन्द कर दो अमित उस सामनेवाले आईनेपर परदा डाल दो ' परदा' '

अमित : तुम्हे वहम हो गया है' लगता है तुमने कोई खौफनाक सपना देखा है खैर कोई बात नही, मै तुम्हारे नज़-दीक आ जाता हूँ चलो सो जाओ !

मधु : नीद भी तो नही आती अमित' 'आँखे बन्द कर लेती हूँ तो अजीब भयानक सपने मुझे आकर घेर लेते है और आँखे खोलती हूँ तो यह सामनेका आईना अजीब-अजीब शकलें दिखाता है' '

अमित : तुम भूल जाओ सारा सब कुछ' ''शिरीष, शशि, चाचा-जी सबको त्याग दो' ''सबकी तसवीरें दिमाग़मे तुम्हारे घूमती है मधु, आईनेमे कुछ भी नही है।

मधु — तुम तो मेरी बात ही नही समझते अमित····मै कहती हूँ यहाँ आओ वह आईना तुम देखो' 'देखो है न वह शिरीषकी शकल बिलकुल वैसी ही शकल उसमे दिखाई देती है

अमित — अच्छा-अच्छा होगा भाई मान लिया लेकिन अब तो तुम सो जाओ आँखे बन्द कर लो 'बिलकुल बन्द कर लो, तुम्हे कुछ नही दिखाई देगा'

मधु — [आँखे बन्द करती है लेकिन फिर चीख़ पड़ती है] नही नही मुझे किसीकी कृपा नही चाहिए किसी-की कृपा नही चाहिए ।

अमित — [मधुको जगाते हुए] मधु ' 'मधु'···होशमे आओ मधु ···

मधु — सारे नियम तुमने इतने कठोर बना दिये है अमित, कि मुझसे उनका निभना कठिन है ' 'अभी-अभी मैने तुम्हारे कहनेसे अपनी आँखे बन्द कर ली थी कि सहसा शशि-का वही जला हुआ चेहरा मेरे सामने आ गया' ''मेरे रोगटे खडे हो गये ' मुझे लगा जैसे उसकी आँखे मुझे निगलनेको दौडी आ रही है बोलो-बोलो अमित, ऐसा क्यो होता है····क्या शशिका कोई पत्र आया है इधर ?

अमित — जब इलाहाबादसे चले थे उसी दिन शामको शशिका पत्र मेरे पास आया था, लेकिन उसमे कोई खास बात तो ऐसी नही थी'' '

मधु — मुझे तुमने क्यो नही बताया'' '

अमित	इसलिए कि तुम फिजूल उसमे उलझ जाती''' वही पुरानी बाते शिरीष शशि 'मै 'तुम
मधु	लेकिन शशिकी याद आते ही मुझे भय-सा क्यो लगने लगता है ?
अमित	वह तुम्हारी कमजोरी है मधु '''यह लो''''यह स्लीपिङ् डोज''''लो'''तुम थोडा-सा पी लो और सो जाओ
मधु	इस दवासे नीद मुझे नही आती अमित !
अमित	आज नीद आ जायेगी क्योकि तुम्हारा टेम्प्रेचर आज कम है
मधु	अब कम होकर भी क्या करेगा' ''खैर लाओ। लेकिन मै जानती हूँ नीद नही आयेगी
	[प्रयोगशालाका दृश्य। मशीनोकी कुछ ध्वनियाँ]
मधु	तो शशि आज भी जिन्दा है ? विवाहके आज पाँच वर्ष बाद तुमने मुझे यह बताया कि तुम्हारे मनमे शशिकी गहरी छाप है शायद तुम उसे ही अपना स्वप्न, अपना सत्य समझते हो मैं बीचमें यो ही आ पडी हूँ
शिरीष	मै आजसे पाँच वर्ष पहले जब तुमसे मिला था तो मेरे मनमे कोई दुविधा नही थी। शशिके प्रति मेरा आकर्षण नही रहा था
मधु	लेकिन वह आकर्षण आज पाँच साल बाद क्यो जागा है ? क्यो नही तुम अपने अन्तरकी इस आवाजको पहले सुन सके थे ' आज तुम्हारी आवाज़मे पछतावा क्यो बोल रहा है ?

शिरीष · पछतावा नही मधु, शायद मेरी कायरता बोल रही है'' 'मुझमे साहसकी कमी थी' 'एक ज़मानेमे शशि ही मेरे लिए सर्वस्व थी ' 'आकाशगंगामे तैरते नक्षत्रोको देखते-देखते हम तमाम रात बिता देते थे प्रयोगशालाकी छतपर उन नक्षत्रोकी दौड-धूपमे, उनकी छायामे जैसे एक धूल-भरा संसार था जो सहसा उठा, उगा और खामोश हो गया ।

मधु फिर क्या हुआ '? [व्यंग्यपूर्ण स्वरमें]

शिरीष : होता क्या ! घटनाने सब कुछ बदल दिया आजसे पाँच साल पहलेकी वह रात

[फ्लैश बैक]

शशि मै देख रही हूँ शिरीष, वह वहाँ । उस क्षितिजसे वह धूमकेतु उठा है । तुम ठीक कहते हो । तीन घण्टे तक तो यह अपनी विलक्षण ज्योतिसे चमकता रहा है, इसकी रोशनी और तेज़ होती जा रही है और तेज । लेकिन यह फिर डूब रहा है, शिरीष, डूब रहा है
[एक अत्यन्त करुणाजनक तीव्र गतिवाला संगीत]

शिरीष . अब उस मशीनके पाससे हट जाओ शशि मै पिछले दस वर्षोसे उसे हर पाँच वर्षके बाद इसी तरह उभरते देख रहा हूँ पाँच वर्षमे एक ही बार यह दिखाई पडता है, लेकिन जब यह डूबने लगता है तो जाने क्या हो जाता है इस मशीनको । यह एकदम गरम हो जाती है यह काबूमे नही रहती ।

शशि : लेकिन आज कुछ नही होगा शिरीष, क्योकि मेरी

आँखोमे डूबनेवाले सपने नही है, मै आज इसे डूबते हुए देखूँगी देखूँगी कि वह कैसे धीरे-धीरे इस आकाश-गगामे डूब जाता है। डूबने दो इसे डूब जाने दो।

[मशीनकी आवाज़ तेज़ हो जाती है]

शिरीष मशीन काबूके बाहर जा रही है शशि, मशीनसे दूर हट जाओ 'हट जाओ '

शशि : मै देख रही हूँ शिरीष उस अग्नि-पिण्डका रंग बदलता जा रहा है एकदमसे लाल, लालसे पीला, पीलेसे नीला, नीलेसे बैगनी उफ् कितना सुन्दर रंग है लगता है लगता है जैसे एक रग दूसरेमे मिलता जा रहा है। कोई एक दूसरेसे अलग नही है। सब एक दूसरेमे मिलते जा रहे है अनन्त, अबाध और तेज़ गतिसे

[एक अत्यन्त करुण तीव्र गतिवाला संगीत]

शिरीष : [घबराकर] शशि वहाँसे हट जाओ मशीनमे आग लग गयी है शशि, दूर हटो हटो

शशि और यह घना अन्धकार जो प्रकाश-पिण्डके पीछे-पीछे आ रहा है। लगता है जैसे समूची आकाशगंगाकी छाया है, जो उसे निगल लेती लगता है, जैसे उसकी घनी चादर एकदम तीव्र गतिसे उसपर छायी जा रही है चलो रोको उसे रोको

[सहसा चीख़कर बचाओ-बचाओ, सगीत और तेज़ हो जाता है ''लगता है एक भूकम्प-सा आ गया है'''सारा वातावरण झनझना जाता है'''सारी दिशाएँ गूँज जाती हैं।]

शिरीष : शशि ''शशि''''

शशि : इस बढते अन्धकारको रोको शिरीष '''वह उगता हुआ धूमकेतु जो प्रत्येक पाँच वर्षके बाद निकलता है सहसा इस अन्धकारकी गोदमे समा जाता है। जाने कितनी शक्ति है इस अन्धकारमे जो इतने प्रचण्ड और प्रदीप्त प्रकाश-पिण्डको यूँ ही निगल लेता है। बचाओ'''' बचाओ बचाओ

[सहसा सारा वातावरण झनझनाकर टूट जाता है, एक मरघट-जैसी शान्ति छा जाती है शिरीष शशि-शशि कहता हुआ समीप आता है, शशिके जले हुए चेहरेको देखकर चौंक पड़ता है, शशि धीरे-धीरे कराहती रहती है।]

[फ्लैश बैक : समाप्त]

शिरीष हर पाँच वर्ष बाद इसी प्रकार यह धूमकेतु निकलता है आज फिर निकलेगा आज मै इसे देखूँगा, अन्त तक देखूँगा देखूँगा कि कैसे वह प्रकाश-पिण्ड एकदम अन्धकारके गर्भमे समा जाता है

मधु : नही नही शिरीष, ऐसा न करना। सुनो, मै तुमसे कह रही थी

शिरीष : क्या कह रही थी तुम ?

मधु यही शिरीष कि शशि नही आ रही है, शायद अमित आनेवाला है, चाचाजीका कोई सन्देशा होगा।

शिरीष . अमित आनेवाला है''''?

[बाहर कुण्डी खटखटानेकी आवाज]

शिरीष : [कुछ तेज़ रूपमे] कौन ? कौन है ? बोलते क्यो नही ?

अमित . [व्यग्यके स्वरमें हँसते हुए] कोई बात नही डियर तुम नाराज भी होते हो तो बडे वैज्ञानिक ढगसे, तीन रीडिङ् लेनेके बाद

शिरीष : ओह तो तुम हो अमित, कहो, आज इतनी रातको इस प्रयोगशालामे कैसे ?

मधु . मै जानती थी आज तुम जरूर आओगे अमित, अखबार-मे पढा था कि आकाशगगाके नक्षत्रोकी संख्या तुमने गिन ली है' पढा था कि आकाशगगाके रहस्यका उद्घाटन तुम करनेवाले हो सोचा, लगे हाथ तुमसे पूछता चलूँ । वैसे तुम बस आकाशगगाके ही होके रह जाओगे, है न !

शिरीष : क्या मतलब ? तुम कहना क्या चाहते हो ?

अमित : कुछ नही पर हाँ 'मधुको इस प्रयोगशालासे तुम दूर ही रखो यही कमरा है ' यही जगह है जब पहली बार आकाशगगाकी ओर घूरते-घूरते तुम्हारी मशीनमे आग लग गयी थी और मशीनके फट जानेसे शशिका चेहरा जल गया था । आकाशगंगाके नक्षत्र तो जहाँके-तहाँ रह गये थे । लेकिन शशि उसका अभिशाप अभी-तक भोग रही है '

मधु : लेकिन शशिके लिए तुम क्यो बेचैन हो ?

शिरीष : पुरानी बाते सुनाके मुझे डराना चाहते हो मधु, जाने दो '

अमित — मै तुम्हे यह सुनाने नही आया, सिर्फ शशिका पता पूछने आया हूँ, कहाँ है वह ' कैसी है कभी-कभी उससे भी

शिरीष — मुझे नही मालूम कि वह कहाँ है

अमित — जिसके बगैर तुम एक मिनिट नही रह सकते थे, उसका पता भी नही है तुम्हारे पास, दुनिया बडी तेजीसे बदलती है तुम नही जानते शायद

शिरीष — और मै जानना भी नही चाहता अमित

मधु — जाननेकी जरूरत भी क्या है ?

अमित — जरूरत' है हं''' है' हे खैर' ''कई महीने हुए शशि मुझे मिली थी। उसका जला हुआ कुरूप चेहरा देखकर पहले तो मै पहचान नही पाया लेकिन वह मुझे पहचान गयी। मेरे पास आकर उसने नमस्कार किया'''' बोली मुझे पहचानते है आप, मै खुद दुविधामे पड गया फिर साहस करके सोचा, जब मै नही ही पहचान पाया तो फिर

शिरीष — तो फिर उसने तुमसे बताया कि वह शशि ह शायद उसने तुम्हे यह भी बताया कि मै बहुत बुरा आदमी हूँ, क्योकि मैने उससे विवाह नही किया, क्योकि मैने उसके रूपका अपमान किया' ''यही न !

अमित — यह सब तो उसने कुछ नही कहा, लेकिन मैने इस सबका अनुमान लगा लिया था। मै जानता था कि तुममे इतना नैतिक साहस नही हो सकता क्योकि तुम आकाशगगाकी ज्योतिका लेखा-जोखा लेनेवाले आदमी

हो, तुमको इस धरती और मिट्टीकी सुविधा-असुविधासे क्या काम ?

मधु — चुप रहो अमित, क्या बके जा रहे हो ?

शिरीष — मै मै मजबूर था अमित बेहद मजबूर शायद · बेबस

अमित — हाँ बेबसी भी तो कई प्रकारकी होती है शिरीष, लेकिन शायद ऐसी ही किसी बेबसीको स्वर्ग भी कहते है · · खैर जाने दो इन बातोको, मै देखता हूँ कि शशिकी तसवीर अब भी तुमने अपनी प्रयोगशालामे लगवा रखी है, आखिर

शिरीष — आखिर तुम्हे आपत्ति हो ही गयी न आकाशगगाके नक्षत्रोका प्रयोग मेरे जीवनमे सबसे अमूल्य वस्तु है अमित शशिने मुझे इस कार्यमे जो योग दिया था मै उसे कभी भी भुला नही सकता। शायद वह मेरे जीवनकी सबसे महान् स्मृति है

मधु — शिरीष !

अमित — ठीक कहता है स्मृतियाँ रखना ही शायद सभ्यताकी सबसे बडी निशानी है, हम सब सभ्य है क्योकि हम अपनी-अपनी स्मृतियोमे आज भी अपने पूर्वजोका इतिहास जिन्दा रखे है · शशिकी स्मृति सजीव रखी है वैसे सभ्य होनेमे तुम्हारे भी कोई कसर नही है।

शिरीष — व्यग्य करनेकी तुम्हारी आदत आज भी वैसी ही है अमित तुम बात नही समझते, काश कि तुम यह

जान पाते कि अच्छेसे-अच्छा आदमी कभी बेबस मजबूरियोमे इतना बुरा लगने लगता है कि

अमित — कि वह बुरा भी नही लगता यही न !

शिरीष — हूँऽ· 'तुम चाहो तो इस तरहसे भी कह सकते हो लेकिन·· ·

अमित — लेकिन मेरे साथ यह बात नही है। बुरा लगनेवाला आदमी मुझे बुरा ही लगता है, मै आदमीकी कोई भी मजबूरी ऐसी नही मानता जो उसे कायर बना दे और

शिरीष — खैर छोडो इन बातोको मधु, इन्हे घर ले जाओ, मै एक घण्टे बाद आऊँगा, जाओ अमित, घर आकर तुमसे रात-भर बातें करूँगा'

मधु — चलो अमित, घर चले।

[फ्लैश बैक . समाप्त]

[धीरे-धीरे ट्रेन रुकती है। धक्का लगनेसे मधु फिर जग जाती है]

मधु — अमित····

अमित — क्या है मधु ?

मधु — यह डिब्बेकी खिडकियाँ बन्द कर दो, जाने क्या हुआ है, मुझे लगता है जैसे तुम उस खिडकीसे कूदकर बाहर जा रहे हो।

अमित — तुम पागल तो नही हो गयी हो····

मधु : नही अमित, लगता है जैसे मेरा विश्वास टूट रहा है ··

अमित मै कही नही जा रहा हूँ मधु मै कही नही जाऊँगा, तुम सो जाओ सो जाओ न।

मधु : मुझे नीद लगती है तो भयानक सपने परेशान करते है, जागती हूँ तो लगता है, तुम खिडकीसे कूदकर मुझे छोडकर भाग जाना चाहते हो

अमित आँखे बन्द करके सो जाओ सो जाओ मधु, पिछली बाते भूल जाओ !

मधु कैसे भूल जाऊँ। अतीत तो भूत बनकर मेरे पीछे पडा है

[फ्लैश बैक]

मधु लेकिन तुम्हे यहाँ बुलाया किसने था ?

अमित अपने स्वार्थने पाँच वर्ष हो चुके थे, तुमने भी तो मुझे नही भुलाया था तुम्हारे प्रत्येक खतमे मुझे एक विचित्र प्रकारकी पीडा-मिश्रित वेदना दिखती थी। लगता था जैसे तुम अनायास ही किसी पिंजरेमे कैद हो, बार-बार तुम उस पिंजरेकी विवशताको जबरदस्ती ओढना चाहती हो ·लेकिन

मधु लेकिन यह सब होते हुए भी मैने किसी पत्रमे यह तो नही लिखा था कि तुम यहाँ आ जाओ, मैने यह तो नही कहा था कि तुम शिरीषसे जो मनमे आये वह बाते करो ··

अमित : मैने कोई विशेष बात नही की। मैने उसे बार-बार

केवल यही बतलाया कि तुम उसकी किसी भी हालतसे नही हो सकती 'उसने कहा, नही वह मुझे बहुत चाहती है मेरी पत्नी है मैने कहा तुमने कभी मधुका उदास चेहरा देखा है कभी उसकी आत्माकी पीड़ाको पहचाननेकी कोशिश की है, कभी उसकी डबडबायी आँखोको देखा है, उसकी प्यासी आत्मा, कुतूहलपूर्ण नेत्र कम्पित अधर एक नितान्त तड-पती प्यास ।

मधु — बस-बस बन्द करो बन्द करो यह सारा प्रलाप। तुम तुमने यह सब क्या किया क्यो किया " तुमको मैने अपना विश्वास दिया था अपनी श्रद्धा दी थी··· अपनी पूजा दी थी इसलिए नही अमित, कि तुम मुझे कलकित करो इसलिए भी नही कि तुम उसका बदला अपनी राक्षसी प्रतिहिंसात्मक मनोवृत्तिसे लो।

अमित — प्रतिहिंसात्मक हूँ मै ? ह ह ह ह ये शब्द भी क्या है तुम्हारे। इन्हे जीवनका आभूषण बनाता है दूसरो-पर आरोप लगाकर सुखी बननेकी चेष्टा करता है" मै पूछता हूँ, क्या तुम प्रसन्न हो ? क्या तुम शिरीषको चाहती हो ? क्या उसके प्रति ईमानदार हो ?

मधु — यह सब प्रश्न बेकार है····जीवनमे मैने शिरीषको चुन लिया है और हर चुनी हुई वस्तुके प्रति एक मर्यादा निभानी ही चाहिए····मै उस मर्यादाको निभाना चाहती हूँ ··

अमित — यह मर्यादा कौन-सी बीमारी है ? मेरी समझमे कुछ नही आता, शिरीष मनसे शशिको अपना जीवन-साथी

चुनना चाहता है, लेकिन उसने उसे नही चुना है फिर भी वह कहता है कि वह शशिके प्रति मर्यादा निभाना चाहता है, तुम शिरीषसे प्रेम नही करती फिर भी तुमने उसे जीवन-साथी चुन लिया है और तुम भी मर्यादा निभानी चाहती हो' · मैं पूछता हूँ · ·

मधु : तुम सब कुछ पूछ लेना चाहते हो, शायद तुम आदमीको आदमीकी तरह देखना भी नही चाहते।

अमित · मैं आदमीको आदमीकी ही तरह देखना चाहता हूँ मधु, लेकिन तुम लोग आदमीको देवता बनाना चाहती हो ··· शिरीष भी आत्माकी दोहाई देता था। कहता था, शशिकी आत्मासे उसे प्रेम है लेकिन उसके विरूप चेहरेमे शशिकी आत्मा खो गयी है। यानी यह कि विरूपतामे आत्मा खो जाती है ·

[सहसा एक धड़ाकेकी आवाज़ होती है। मधु चीख़ पड़ती है, पृष्ठभूमिमे ट्रेनका स्वर . फ्लैश बैक समाप्त]

मधु रोको····रोको····बचाओ····

अमित : क्या बात है मधु, मधु होशमे आओ ··· ।

मधु . [स्वप्न ही मे] कौन ? शिरीष····तुम

अमित . मैं····मैं शिरीष नही अमित हूँ मधु, मधु होशमे आओ, बात क्या है ···

मधु . जाने क्या बात है अमित, मुझे जब भी हलकी-सी नीद लगती है तो मै एक भयानक सपना देखती हूँ। लगता

है यह ट्रेन एकदम अँधेरी गुफामे चली जा रही, और गिर रही है और उसमे मैं हूँ, तुम हो ' शिरीष है, शशि है सभी एक भयकर रेलकी दुर्घटनामे घायल पडे है।

अमित तुम फिजूल ही इतनी बाते सोचती हो मैं कहता हूँ भूल जाओ भूल जाओ उस पिछले स्वप्नको।

मधु नही भूल पाती अमित, मेरे सामने वही दृश्य आ जाता है'' 'वही, जब रेल-दुर्घटनामे घायल हो शिरीष अस्पतालमे पडा था उसकी आँखे जाती रही थी। वह अन्धा हो गया था, सहसा उसी अस्पतालमे तुमने शशिको नर्सके रूपमे देखा था''''तुम चीख पड़े थे ' तुम ' ' तुम''''तुम ''[फिर बेहोश हो जाती है ।]

[फ्लैश बैक]

अमित : शशि शशि तुम तुम यहाँ नर्सका काम करती हो

शशि [होठपर अँगुली रखते हुए] श श 'श शिरीष बाबूके कानमे मेरा नाम न पडने पाये

अमित : क्यो ?

शशि : उन्हे शॉक लगेगा, उनको दिमागी परेशानी होगी।

अमित क्यो, तुम अब भी शिरीष बाबूको उतना ही चाहती हो !

शशि : छोडो इन बातोको। डॉक्टर आ रहे है, मुझे जाने दो।

अमित : अजीब बात है, शिरीष कहता है कि विरूपता के बावजूद भी उसके मनमे शशिके लिए स्थान है' ''शशि कहती है ''

मधु : शशि कुछ भी कहे अमित, जाने क्यो मुझे दोनोसे भय लगता है ''जबसे शिरीषकी आँखें जाती रही है, मुझे उधर देखनेकी इच्छा नही होती, मुझे चाचाजीके यहाँ पहुँचा दो अमित !

अमित . तुम होशमे तो हो मधु, पतिको अस्पतालमे छोडकर तुम जाओगी, दुनिया क्या कहेगी ।

मधु : दुनिया जो भी कहे अमित, मुझसे यह नही सहा जाता

अमित : लेकिन लोग कहेगे कि मधु अमितके साथ चली गयी

मधु . मै उसके लिए भी तैयार हूँ, मै ऊब चुकी हूँ इस जीवन-से अमित, मुझे ले चलो

अमित : ठहरो, उधर सुनो – शिरीष और शशि क्या बाते कर रहे है ?

[क्लोज़ कन्वरसेशन]

शिरीष : नर्स, तुमने पिछले महीने-भरसे मेरी बडी सेवा की है

नर्स : वह तो मेरा फ़र्ज़ था

शिरीष : फर्ज़ ! नर्स

नर्स : जी

शिरीष एक बात पूछूँ ?

नर्स : पूछिए ।

शिरीष : तुम्हारा नाम क्या है ?

नर्स : नर्स

शिरीष : नर्स, मैने तुम्हारा पेशा नही नाम पूछा था····।

नर्स : दोनोमे कोई अन्तर नही है शिरीष बाबू !

शिरीष : अन्तर ! तुम्हे कैसे बताऊँ नर्स ! अगर आज मेरी आँखे होती तो शायद मै और अच्छी तरह समझ सकता काश मै तुम्हे देख सकता तो यह प्रश्न ही नही पूछता !

नर्स : प्रश्न ज्यादा नही पूछना चाहिए, सो जाइए ।

शिरीष : नही नर्स, तुम्हे आज अपना नाम बताना होगा। बताओ !

[दूरसे आती हुई ध्वनियोमें ताँगा आनेका स्वर]

शिरीष : कौन ? कौन आया है नर्स ?

नर्स : कोई आया नही है, कुछ लोग जानेवाले है । उन्हीके लिए सवारी आयी है ।

शिरीष : किसी मरीजको छुट्टी मिल गयी शायद · ·

नर्स : हाँ, मरीज ही थे ।

शिरीष : क्या हुआ था ?

नर्स : यह तो आप ही बता सकते है, क्योकि वे मरीज़ तो आपके साथ आये थे ।

शिरीष : तुम्हारा मतलब इस रेल दुर्घटनामे····

नर्स : जी हाँ ।

शिरीष : क्या नाम था, इसलिए कि शकलसे तो अब पहचान नही पाऊँगा ?

नर्स : एकका नाम मधु है।

शिरीष : मधु ?

नर्स : जो।

शिरीष : और दूसरेका ?

नर्स : अमित।

शिरीष : और तुम शशि हो न ? बोलो, बोलो तुम शशि हो न ? शशि····शशि ·

नर्स : हाँ, और मैं शशि हूँ।

शिरीष . और मै शिरीष अन्धा शिरीष, जो तुम्हारी विरूपता नही देख सकता, जो शायद कुछ भी नही देख सकता···· सिर्फ पहचान सकता है पहचान ।

[फ्लैश बैक समाप्त : मधु फिर चौंक पड़ती है उठकर बैठ जाती है]

मधु : अमित····!

[कोई आवाज़ नहीं आती]

मधु : अमित· अमित····अमित ···[पुकारते-पुकारते गाड़ीका चेन पकड़कर खीच लेती है, गाड़ी रुक जाती है, चारों तरफ़ शोर-गुल बढ़ जाता है, अमितका कुछ पता नही चलता]

गार्ड : चेन आपने खीची है श्रीमतीजी ?

मधु : हाँ गार्ड, मेरा पति मुझको छोडकर भाग गया है, मै

मरीज हूँ गार्ड ! मैं अकेले इस डिब्बेमे नही रह सकती, मुझे खौफनाक सपने परेशान करते है ।

गार्ड : आपको भुआली जाना है न ?

मधु : जी ।

गार्ड : लेकिन गाडी अब काठगोदाम पहुँच गयी है, कुछ ही दूर है, आप वहाँ अपना इन्तजाम कीजिएगा ।

[गार्ड ह्विसिल देता है, तभी शशि आ जाती है]

शशि : कौन मरीज़ है गार्ड ? उसकी देख-भाल मै कर लूँगी · ·

मधु . शशि तुम !

शशि : कौन शशि ? तुम्हे वहम हुआ है, मैं नर्स हूँ नर्स !

मधु : लेकिन तुम तो शशि हो ! ··शशि · शशि·

शशि : सो जाओ, लगता है रात-भर नीद नही आयी तुम्हे !

मधु : भयानक सपने जो देखती हूँ, एकदम भयानक···अमित भी मुझसे डर गया, आधे रास्तेमे छोडकर चला गया · चला गया चला गया

[फ़ेड आउट]

रबरका बबुआ

पात्र-पात्रा

विनय आयु लगभग तीस वर्ष
सुरेन्द्र आयु लगभग पैंतीस वर्ष
विपिन आयु लगभग बीस वर्ष
बड़े बाबू : आयु लगभग पचपन वर्ष
जमादार : आयु लगभग पैंतीस वर्ष
फिलिप आयु लगभग पैंतालीस वर्ष
ठेलेवाला आयु लगभग तीस वर्ष

शकुन आयु लगभग पचीस वर्ष
आधुनिका
सुधा आयु लगभग पचीस वर्ष
विनयकी पत्नी

बच्चे

[एक गलीमें दूरसे आती हुई ध्वनियाँ । बच्चोंका शोर···उस शोर-में-से ठेलेपर खिलौने बेचनेवालेकी ध्वनि धीरे-धीरे निकट आती जाती है, निकट और निकट । गलीका शोर भी बढता जाता है ।]

[ठेलेवालेकी ध्वनि]

ले लो बाबू चार आना
रबरका बबुआ चार आना
सस्ता मद्दा चार आना
नया आदमी चार आना
बिक गया बाबू चार आना
रबरका बबुआ चार आना
बिका आदमी चार आना

बच्चा : ऐ' ऐ कैसा आदमी है ? देखे '

ठेलेवाला [रबरका बबुआ बजाता हुआ] यह है आदमी – आँखपर चश्मा, गलेमें टाई, घिसा-पिटा दफ्तरका बाबू, फटी-चिटी यह छवि है छायी, बोल रहा है – सुन लो भाई !

[आवाज़ बबुएकी]

दूसरा बच्चा : ये चार आनेसे कममें नही बेचोगे कुछ तो कम करो ?

ठेलेवाला अरे साहबजादे, यह आदमी है आदमी । इसकी कितनी क़ीमत गिराये ? घास-पातका बना होता तो भी तो इतना

सस्ता नही होता, फिर यह तो रबरका है भाई जान'' ' रबरका ! [फिर बबुआ बजाता है]

दूसरा बच्चा चाहे रबरका हो चाहे मिट्टीका और चाहे घास-पातका, पर दाम तो इसका बहुत ज्यादा है। देखो न, यहाँसे इसका रंग छूट रहा है, इतनी पालिश इसकी छूट गयी है और देखो न यहाँसे यह टूट रहा, यह जोड भी कुछ दिनोमे खुल जायेगा

ठेलेवाला हो न इस बसन्तपुर मुहल्लेके, तुम लोगोकी नस-नसमे शरारत भरी रहती है' 'जो भी हो, उसमे नुक्स निकालनेके लिए तैयार रहते हो''' अमाँ, यह रबरका आदमी न होता तो इतना सस्ता देता क्यो ? ऐ है। क्या नक्शे है ले जाओ साहबज़ादे, आदमी इससे सस्ता नही मिल सकता ।

पहला बच्चा हमे आदमी नही चाहिए हमे रबरका बबुआ चाहिए बबुआ, चाहे तो टबमे बैठाकर नहलाये, चाहे तो नालीमे फेंक दे, चाहे तो बादशाह बनाकर खेले और चाहे तो चपरासी बनाकर छोड दें, क्यो जी, ठीक है न ?

दूसरा बच्चा ठीक तो कहता है रमेश, आदमी हमे नही चाहिए, तुम अपने आदमीको चाहे जिस दामपर बेचो, पर यह रबरका बबुआ इसका दाम तो बहुत ज्यादा है चार आने, चार आनेका कौन खरीदेगा इसे ?

पहला बच्चा : हाँ-हाँ, दो-दो पैसेमे, टके-टकेमे देना हो तो दे जाओ, समझे ?

ठेलेवाला : नही जी, मै नही बेचूँगा आदमी मेरा है, रबरका हुआ तो क्या, मै नही बेचूँगा आखिर दाम गिराने-की भी कोई हद होती है कितनी कीमत गिरा दूँ इसकी ?

[बच्चोका समवेत स्वर]

तो चले जाओ हम यह रबरका आदमी नही लेगे, चले जाओ जाओ

[ठेलेवाला भी चिल्लाता हुआ चला जाता है—]

ले लो बाबू चार आना ऽ ऽ ऽा
बिका आदमी चार आना ऽ ऽ ऽा
रबरका बबुआ चार आना ऽ ऽा

[पाज़]

विनय : मानता हूँ दोस्त, तुम भी आदमी कमालके हो, तमाम जिन्दगी रबरके बबुए बेचनेमे बिता दिया तुमने भी, क्या कमाल है साहब ! तुम्हारे ऊपर तो एक नाटक लिखा जा सकता है । [जम्हाई लेकर] लेकिन कौन लिखेगा ? मै ? हूँऽ अगर यही दफ्तर रहा मि० विनय, तो अजब नही कि तुम्हारा जनाजा भी दफ्तरसे ही निकले '। निकलना भी चाहिए मेरे दोस्त !

सुधा मै कहती हूँ यह कमरेमे किससे बातें हो रही है ? शेव-का गरम पानी यहाँ ठण्डा हुआ जा रहा है ।

विनय : आ रहा हूँ भाई, क्या बीवी मिली है मुझे भी बिलकुल रेलवेकी टाइम टेबिलकी तरह, बिलकुल ठीक ।

चलो मेरे साहब, अर' ' र'' 'र, यह तो मै भूल ही गया खैर कोई बात नही, अभी कहे देता हूँ।

सुधा क्या कर रहे हो, उठते नही बनता, मुझे भी जाडा लगता है ?

[विराम]

विनय : अरे, सुधा सुधा

सुधा क्या है ? सुबहसे ही चिल्ला रहे हो ?

विनय : मुझे आज ऑफिस जल्दी जाना है भाई, फिलिप साहबके साथ बैठकर एरियर करना है एरियर ! [स्वतः] क्या जिन्दगी पायी है मैने भी, सिर्फ दफ्तर सिर्फ दफ्तर

सुधा · देखो जी, मुझे यह सब बिलकुल पसन्द नही है, समझे, बार-बार याद दिलाते रहनेसे ही मै कोई काम नही कर सकूँगी, मुझे मालूम है।

विनय . अच्छा-अच्छा देवीजी, क्षमा चाहता हूँ, भूल हुई। मै नही जानता था कि आपको याद दिलानेसे इतनी परेशानी हो जायेगी।

[सायकिलकी घण्टियोकी आवाज़ लगातार निकट आती जाती है]

विपिन : अरे मैने कहा बाबू विपिनकुमार बी०ए०, एल०एल०बी०

विनय : धत् तेरीकी, यह भी इसी बीच आ टपका, मैने कहा, सुधाजी सुधा देवी

सुधा : तुमको तो जैसे चेत ही नही पडती, अब क्या है जी ?

विनय : मैं क्या बताऊँ, वह देखो विपिन आया हुआ है, ज़रा दरवाजा खोल दो और यही ऊपर भेज दो, कम्बख्त क्लर्कको नौजवान कभी नही होना चाहिए। यह फाइलो-मे भी रोमान्स भिडाते फिरते है

विपिन ओ हो ss ! वाह हज़रत, यह नक्शे है ! बाबू साहब, अभी आप सो ही रहे हैं। आठ बज गये हजरत, जानते है वहाँ वह जो मलकुलमौत मुन्शी अम्बिका-प्रसाद सिन्हा यानी कि हेड क्लर्क गरजोके वह बडे बाबू है न, वह सात ही बजेसे दाखिल-दफ्तर हो चुके होगे, और जहाँ हम लोगोमे देरी हुई वहाँ वह नौजवानो-को पचास झिडकियाँ सुनायेगे।

विनय अमाँ बैठो भी, क्या धरा है इन बातोमे

विपिन अरे देखो भई, यह खामखाहकी मस्ती मुझे नही अच्छी लगती, चलो चाय पिओ और दफ्तर चलो

विनय : चाय, नाम मत लेना मेरे दोस्त ! देखो, तुम जरा अपनी भाभीको आवाज़ दो।

विपिन : क्यो ?

विनय इसलिए कि सुबहसे मै सैकडो बार बुला चुका हूँ, रात ही से कुछ पारा चढा हुआ है। ज़रा ड्रामाके रिहर्सलसे लौटनेमे देरी हो गयी बस

विपिन : अच्छा, तो यह बात है, ऊपरसे बेचारी भाभीको ही दोष देते हो।

विनय : अमाँ, चुप भी रहो, ज़रा धीमे-से चायकी फरमाइश कर दो न !

विपिन · तुम भी क्या कहोगे, विनय बाबू ! [आवाज़ देता है] भाभीजी, मैंने कहा, मै आ जाऊँ, थोडी मदद कर दूँ ? यह विनय तो महज़ नालायक है, और आपने तो इसे बस रबरका बबुआ बना रखा है बबुआ

सुधा : अजी क्या कहने है, हम ही तो आप लोगोको बनाते है ! दूधके धोये हुए है आप लोग ? [चाय रखनेकी ध्वनि, चम्मच और बरतनोंकी खनक] यह लीजिए चाय ।

विपिन : आप भी तो बैठिए भाभीजी

सुधा मैं क्या करूँगी यहाँ बैठके, अपने भाई साहबसे कहिए शकुनजीको बुला ले, चायका वक्त है, बात भी बन जायेगी

विपिन शकुनजी ! क्या बात करती है भाभीजी, कहाँ आप और कहाँ शकुनजी !

सुधा : यह तो अपने भाई साहबसे पूछिए ।

विनय : [मस्तीके स्वर] हूँ ऽ बात तो ठीक ही है विपिन, बात यह है कि बीवी

विपिन : बस आगे मत कहना विनय, जानते हो न मुझे ? वह गत बना दूँगा कि अरे, भाभीजी तो चली गयी, तुम बडे शैतान हो विनय !

विनय मैं शैतान हूँ ? ठीक ही है भाई जान, मियाँ-बीवीमे-से एकको शैतान होना ही चाहिए, दोनो अगर देवता हो गये तो बात बिगड जाती है ।

विपिन : यह भी खूब कही, और अगर बात बिगडे न तो बनती

भी नही   खैर, यह तुम कहते हो   लेकिन मैं   सोचता हूँ

विनय   तुम सोचना बन्द कर दो ! देखो, यह सोचनेका मर्ज हर आदमी नही पाल सकता, समझे । जल्दीसे चाय पियो, फाइल उठाओ और दफ्तरकी ओर चल दो ।

सुधा   : अभीसे दफ्तर ? तुम तो कह रहे थे दस बजे जाओगे ? अब नौ ही बजे दफ्तर लगने लगा ? कमाल है ! फिर क्या है, मिलवालोसे कहिए बिस्तर भी वही लगवा दिया करे ! दिन-रात वहीं रहा कीजिए न आप लोग !

विनय   : बात तो यह ठीक कहती है, लेकिन कम्बख्त मानेगे नही ! खैर कोई बात नही, किसी वक्त मौकेसे आपकी यह बात कही जायेगी, यकीन मानिए इसपर गौर किया जायेगा !

सुधा   . आप तो गौर करेगे ही, आपको क्या ? सुबह दफ्तर, शाम क्लब । छुट्टियोमे ड्रामेके रिहर्सल, रिहर्सलके बाद नाटक और जाने क्या-क्या ?

विनय   : [हँसते हुए] लगता है, सुधा, तुम्हे मुझसे कोई गहरी शिकायत है । ठीक भी है । अच्छा सुनो, मै बहुत जल्द यह सब छोडनेवाला हूँ । जरा धीरज धरो, बस ।

सुधा   क्या करोगे यह सब छोडकर ? मै जो हूँ सब कुछ भुगतनेके लिए । बाजार-हाटसे लेकर खाना पकाना तक तो कर ही लेती हूँ ।

विपिन   नही भाभी, यकीन मानिए, ज़रा यह नाटक हो जाने दीजिए। अगर यह रास्तेपर नही आया न, तो मारते-मारते धोबी बना दूँगा धोबी।

विनय   अरे विपिन, छोडो इन बातोको। जरा रेडियो ऑन करो। यार, शायद कोई अच्छा भजन ही सुनाई दे जाये ·

विपिन   अमाँ, देर हो जायेगी। फिज़ूलके लिए अगर कही भजन-की धुन तुम्हे पसन्द आ गयी तो जमकर बैठ जाओगे और यहाँ मौत हो जायेगी।

विनय   लगा भी यार, तू तो पूरा दफ्तरी हो गया है दफ्तरी!

विपिन   ठीक है, लगाये देता हूँ।

[विपिन रेडियो ऑन करता है, कुछ ही सेकेण्डमे स्त्री-स्वरमे यह भजन आता है]

भजु मन राम चरन सुखदाई ·
भजु मन राम चरन सुखदाई !

विपिन   सुन लिया न, अब तो चलो।

विनय   भाई, मै तो बिना पूरा भजन सुने उठनेवाला नही हूँ।

विपिन   अच्छा तो हुजूर मै चला।

विनय   अमाँ, रुको भी!

विपिन   : नो सर, नौकरी इज नौकरी

[रेडियोपर भजन चलता रहता है। सायरन और मिल मशीनोकी आवाज़े। बाहर कुछ शोर-गुल, कभी कोई गाती हुई ध्वनि सुनाई देती है। कभी बोझ उठानेवालोकी ध्वनि 'हैइय्या, हैइय्या' के स्वर,

कभी भीड़-भाड़, कभी ठेलेवालोंका स्वर····'रबरका बबुआ चार आना। ले लो बाबू चार आना। फोनकी घण्टी बजती है।]

बड़े बाबू हल्लो। पेपर मिल प्लोज ···येस, जी नही, मि० विनय-कुमार अभी नही आये है। जी, आपका मतलब क्या है ? आप उनसे मिलना चाहती है तो पेपर मिल-का पता बताये देता हूँ, चली आइए न ? अच्छा आपकी मरजी मरजी ·

[फोन रख देता है]

अजोब मुसीबत है। यह दफ्तर न हुआ, आशिकोंके पता-ठिकानेका इन्क्वायरी दफ्तर हो गया। जबसे आया हूँ तीन बार फोन अटेण्ड कर चुका। अबकी बार अगर फिर घण्टी बजी तो

[फ़ोनकी घण्टी बजती है]

बड़े बाबू [खीझकर] हल्लो पेपर मिल यस····नही मिस्टर विनयकुमारका कोई पता नही है, आप कौन है ? जी, मिस शकुन, जी नही, मै आपको नही जानता। मिस्टर विनयकुमार साढे दस बजे आयेगे। ' जी नही ···मेरा दिमाग खराब नही है मै मुन्शी अम्बिकाप्रसाद हेड क्लर्क पेपरमिल्स बोल रहा हूँ, देखिए आप खुद आकर उनसे मिल लीजिए।

[फ़ोन रख देता है]

बड़े बाबू : सुना तुमने विपिन, फिर उसीने फोन किया है'

विपिन : कौन बडे बाबू ?

बड़े बाबू : अरे वही वह छोकरी जो है, क्या नाम है उसका जो साहबके साथ मोटर ड्राइव करती हुई आती है ··?

विपिन : मिस शकुन ?

बड़े बाबू . हाँ हाँ, वही मैंने भी डाँटके कह दिया

विपिन क्या कह दिया बडे बाबू ?

बड़े बाबू यही कि मै तुम्हारा नौकर नही हूँ।

विपिन यह कह दिया आपने बडे बाबू !

[**मिस शकुनका प्रवेश**]

शकुन हल्लो बडे बाबू'

बड़े बाबू : [कुछ घबराकर] जी··· जी····यह आप' ··

विपिन : हाँ तो फिर मिस शकुनने क्या कहा ?

शकुन : ऐई मिस शकुन मै हूँ 'मै !

बड़े बाबू [काँपती हुई आवाज़मे] कुछ नही, कुछ नही शकुन देवी, यो ही। भला मै आपको क्या कह सकता हूं ?

विपिन ओह तो आप ही है मिस शकुन ! अभी आप ही का फोन आया था ?

शकुन : जी अभी-अभी मैंने ही फोन किया था। आप जानते नही विनय हमारे क्लबका हीरो है !

विपिन : हीरो ! क्या मतलब आपका ?

शकुन . मेरा मतलब हमारा क्लब एक नाटक कर रहा है, उस नाटकमे विनय हीरोका पार्ट कर रहा है ··

बड़े बाबू : हीरोका पार्ट ! तब तो बहुत अच्छा है, हमारे लिए गर्वकी बात है। क्यो जी विपिन ?

विपिन जी क्यो नही, क्यो नही, आखिर यह हौसलेकी बात तो है हां।

शकुन यही नही, देखिए यह टिकिट है। आप लोगोको लेना ही चाहिए।

बड़े बाबू : टिकिट !

विपिन : टिकिट लगाकर ड्रामा होगा क्या ?

बड़े बाबू : यह तो आप लोगोकी ज्यादती है।

शकुन ज्यादती क्या है बड़े बाबू, अब देखिए न, दिसम्बरमे बेबी-शो होनेवाला है, उसमे इनाम देनेके लिए हमे चन्दा लगाना जरूरी पड गया।

बड़े बाबू बेबी-शो देखिए न कुमारीजी, यह सब बेबी-फेबी शो मेरे समझके बाहरकी बात है, मै तो उस जमानेका हूँ जब बच्चोको काजल लगाया जाता था ताकि उनको नजर न लगे। मै तो इस बेबी-शोको पसन्द नही करता।

शकुन अच्छा नाटक देखना तो आप पसन्द करते है, वह जो मि० फिलिप्स है न, वही तो इसे डाइरेक्ट कर रहे है। वह तो आपके मैनेजर है, क्या उनके लिए आप इतना छोटा-सा भी काम नही कर सकते ?

विपिन बडे बाबू, देखिए तो वह फाइल न०····नं० ··न०

बड़े बाबू : चपरासी चपरासी····

चपरासी जी हुजूर !

बड़े बाबू : वह साहबकी मेज़-वेजसाफ किया कि नही ? तुम लोगोको कोई काम खुद अपने-आप करने नही आता !

शकुन और देखिए न बडे बाबू, मि० फिलिप्स यानी आपके मैनेजर

बड़े बाबू : अबे, यहाँसे क्या साफ कर रहा है, साहबकी मेज़ साफ कर।

शकुन कुल दो रुपयेके तो टिकिट है

बड़े बाबू . दो रुपये ! जमादार ओ जमादार

शकुन : बडे बाबू !

जमादार जी हुजूर !

बड़े बाबू अबे, अभीतक साहबके कमरेमे झाड़ू नही लगायी ?

जमादार लगा चुका हूँ ।

बड़े बाबू फिरसे सफाई करो, जानते नही ज़रा-सा कूडा रहनेपर साहब कितना नाराज होते है ?

शकुन : मि० विपिन !

विपिन : बडे बाबू, वह डिस्पैच रजिस्टर

शकुन [**खीझकर**] आप लोगोको ज़रा भी एटिकेट नही आती। मै एक लेडी होकर टिकिटके लिए कहती हूँ और आप है कि कर्टसी छू तक नही गयी है।

बड़े बाबू देखिए बीबीजी, हम लोग क्लर्क है, जानती है आप···· सिर्फ दो वक्त दाल-रोटी खाकर तीस सालसे नौकरी कर रहा हूँ, घीके नामपर पिछले दस सालोसे एक बूँद नही नसीब हुआ है, आप लोगोको ब्रेक फास्ट, लंच, टी,

डिनर वगैरह मिलता है, हमारे बच्चे सिर्फ दाल-रोटी। बेबी-शोमे पैसा देनेसे अच्छा तो है कि एक-एक आने हम अपने बच्चोको दे तो बत्तीस दिन तक कुछ खिला सकते है। आप जाये हमे टिकिट नही चाहिए।

शकुन इसके माने यह हुए कि

विपिन इसके माने जो कुछ भी है बहुत साफ है।

[शकुन भुनभुनाते हुए चली जाती है]

शकुन यू, क्लर्क्स! यू आर डूम्ड टू बी सो····पिटिऐबल इन्सेक्ट्स···

[समवेत हँसी]

जमादार जाव-जाव मेम साहेब, ई गिटिर-पिटिरकै मायाजाल इहाँ न चली

चपरासी आयी रही साहेब कै रोब डारै, हमसे कहिन तौ हम कहि दिहा जाओ ऊ साहब पै रोब डारौ, हमरे पास का है?

बडे बाबू यह सारी शरारत उसी विनयकी है।

विपिन अरे नही बडे बाबू, टिकिट बेचना आजकलकी लडकियोका फैशन है·

बड़े बाबू . आग लगे ऐसे फैशनको··बडी लडकियाँ बिना सकोचके निकल पडती है

विपिन और अपने उस रबरके बबुआको क्या कहूँ, बडा ही धूर्त है।

बड़े बाबू होगा जी, मै तो इसके सख्त खिलाफ हूँ।

चपरासी मेज़ साफ कर दिया बड़े बाबू!

जमादार : और झाड़ू भी लग गयी बाबू!

बड़े बाबू अबे, जा भी, मै बात टालनेके लिए कह रहा था। जा 'जा' '।

[घड़ीमे दसका घण्टा बजता है]

सुरेन्द्र नमस्कार बडे बाबू,

बड़े बाबू कौन ? सुरेन्द्र ? और आज तुम अपने पडोसीको कहाँ छोड आये ?

सुरेन्द्र : आपका मतलब ?

विपिन हाँ-हाँ, बडे बाबूका मतलब है रबरका बबुआ कहाँ छोड आये ?

बड़े बाबू अच्छा तो अब समझा, तुम भी विपिन मजेके आदमी हो, नाम देनेमे तुमसे ज्यादा शातिर कोई नही मिलेगा।

सुरेन्द्र . जी बडे बाबू, देखिए न उधर विनयको तो रबरका बबुआ कहना शुरू कर दिया है और इधर आपको मलकुलमौतके नामसे सुशोभित कर दिया है।

बड़े बाबू खामोश! मै यह सब बदतमोज़ी नही पसन्द करता। कलके लडके अभी-अभी तो यूनिवर्सिटीसे निकले है, लेकिन गर्रा है कि बस '' जानते हो मै मुन्शी अम्बिकाप्रसाद हूँ अम्बिकाप्रसाद, बडे-बडे अँगरेज़ अफसर मेरा लोहा मानते थे, मौका पडनेपर नचा देता था नचा''''।

सुरेन्द्र — अजी जाने भी दीजिए बडे बाबू, यह विपिन क्या समझेगा आपको। अभी उस दिन जब साहबको अपना बिल पास कराना था, ऐसा गिडगिडा रहे थे कि लगता था···

बडे बाबू — जी, आप तो थे ही उस दिन, तीन बार उनका बिल वापस आ चुका था, मैंने भी सोचा कि चलो चलने दो, एक-न-एक दिन तो साहबको भी मेरे पास आना पडेगा। और आये ! आखिर तजरबा भी तो कोई चीज़ होती है !

विपिन — चुप चुप ! वह देखिए रबरका बबुआ आ रहा है, क्या चाल है क्या मस्ती है क्या अकड है ! दूरसे देखनेमें लगता है किसी दफ्तरका साहब है साहब !

बड़े बाबू — अरे, साहब बननेसे क्या हुआ, है तो मेरी मातहत ! आजकलके छोकरे बस यूनिवर्सिटीसे निकले कि उनका दिमाग खराब हुआ, समझते हैं सारी काबिलियत कपडे पहननेसे आ जायेगी !

विपिन — हाँ बडे बाबू, देखिए न, जिस कपडेका साहबने सूट बनवाया है उसी कपडेका इसने भी बनवाया है, कह रहा था बडे बाबू, कि इस बार होलीमें वह आपको एक टोपी भेंट करेगा। कहता था, उफ कितनी चीकट-दार आपकी यह गोल टोपी है

सुरेन्द्र — फिर वही ऊल-जलूलकी बात करते हो विपिन, अभी बडे बाबूने कहा है कि पुरानी चीज़ोंकी क्या कद्र है, यह मौके-मौकेपर पता चलता है, तुम क्या समझते

हो, बडे बाबूकी यह टोपी ऐसी है जिसके सामने न जाने कितने अँगरेज़ सिर झुकाकर चले गये ।

विपिन : हाँ जी, पुरैठ होनेका बडा असर पडता है !

बड़े बाबू : तुम्हे ताज्जुब होगा विपिन कि, यह टोपी मैंने कर्नल शिपानाजेके वक्त खरीदी थी । आज दस साल हो गये लेकिन साहब क़द्र-दाँ तो अँगरेज़ थे, ···क्या कद्र करते थे, बगैर मुन्शी लगाये नाम नही लेते थे ।

सुरेन्द्र : बीस साल-यानी कि बडे बाबूके बडे लडकेके बराबर इस टोपीकी उम्र है, देखते-देखते बडे बाबूने अपने सिर-पर एक पीढी उगा ली है ।

[विनयका प्रवेश]

विपिन : जै रामजीकी विनयबाबू, यार आज यह गुलाबका फूल भी क्या चमक उठा है ! रोज़ तो तुम एक नन्ही-सी कली लगाते थे यार, आज यह फूल ·

सुरेन्द्र : तुम समझे नही विपिन, कली तो इन्होने परसो लगायी थी, फूल तो आज हो गयी बेचारी ! क्यो विनय-बाबू ठीक है न·····?

विनय : तो यह बात है, आज तो बडो मूडमे हो यार, कहो तो क्या-क्या तीर मारे ?

विपिन : [गला बैठाकर धीमे स्वरमें] तीर क्या मारता, बडे बाबूकी गोल टोपी है न उसीपर निशाना लगाया था, बीच ही में तुम आ धमके ।

सुरेन्द्र ज़रा-सी देर हो गयी दोस्त, नही तो तुम्हारी हीरोइन भी यहाँ आयी थी।

विनय : तुम्हारा मतलब मिस शकुन ··· ?

बडे बाबू मिस्टर विनयकुमार बी० ए०, एल-एल० बी०, ज़रा इधर आइए तो !

विनय · क्या बात है बडे बाबू, आप तो इतने आदरसे बुला रहे है कि डर लग रहा है।

बड़े बाबू : बात यह है मिस्टर विनयकुमार, कि मै जरा पुराना आदमी हूँ, मुझे तुम्हारी नये किस्मकी नोटिड्-ड्राफ्टिड् पसन्द नही आती, भला बताइए बिना अलकाब आदाब-के भी कही पत्र लिखा जाता है ? अरे साहबज़ादे, यह सब आप अपने ऑफिसरको भेज रहे है न ? फिर यह क्या मज़ाक़ है ? लिखना चाहिए—सर विथ ड्यू रिस्पेक्ट आई बेग लीव टू सब्मिट दि फालोविड् · मेरा मतलब श्रीमान् सेवामे विनम्र निवेदन है कि····

विनय : लेकिन इसकी कोई ज़रूरत नही मालूम पडती, बात सीधी क्यो न कही जाये ?

बड़े बाबू : सो तो ठीक है, लेकिन सीधी बात कहनेके लिए नौकरी नही की जाती। क्लर्की करनेके साथ सीधी बात कहना मज़ाक बन जाता है, और क्लर्क ज़िन्दगोमे सिर्फ अपने साथ मज़ाक करता है· यह तुम्हारा नाटक नही है विनयकुमार !

विनय : यह तो मै भी जानता हूँ कि यह नाटक नही है, लेकिन मुझे ज़िन्दगी-भर क्लर्क बनके नही रहना है बडे बाबू,

मै बी० ए० एल-एल० बी० हूँ, मेरे लिए बहुत-से रास्ते है, इस क्लर्कीमे क्या धरा है, मैने तो महज वक्त काटनेके लिए नौकरी की है....

बड़े बाबू : यही मिस्टर विनयकुमार बी० ए० एल-एल० बी॰ यही ! हर नौजवान अपनी क्लर्कीकी जिन्दगी इसी उम्मीदसे शुरू करता है, मै भी जब इस दफ्तरमे आया था तो यही एक सपना लेकर, नायब तहसील-दारीका इम्तहान दिया था । सोचा था जबतक नतीजा नही निकलता इसी दफ्तरमे रहूँगा, लेकिन हर इरादेके बावजूद यही रहना पड़ा । नायब तहसीलदारसे लेकर डिप्टी कलेक्टरी तकका सपना टूट गया और आज महज़ बडे बाबूके नामसे जाना जाता हूँ !

विनय : मै तो इसमे आपकी ही कमज़ोरी मानता हूँ, यदि आप चाहते तो इस दफ्तरसे निकल सकते थे ।

बड़े बाबू यदि आप चाहते ? क्या मजाक करते है आप जनाब ? जैसे मै चाहता ही नही था, यह दुनिया बडी अजीब है विनयबाबू, यहाँ बस वही नही हो पाता जिसे हम चाहते है और फिर हम बाबुओकी जिन्दगीमे साहबकी सलामी हजार नियामत बन जाती है खैर, आप यह फाइल्स ले जाइए ।' ''फिरसे ड्राफ्टिड् करके दीजिए । और हाँ यह अलकाब-ओ-आदाब दुरुस्त रखिएगा, याद रखिए क्लर्क हमेशा लिखा हुआ डायॅलाग बोलता है, उसके पास अपनी भाषा नही होती, समझे ! [जानेकी ध्वनि, विपिन और सुरेन्द्रकी व्यग्य-भरी हँसी]

समवेत स्वर : हि ''हि'' हि ''

विपिन : सुन लिया ? बडे बाबूको भी यार मै मानता हूँ, कम्बख्त पुराने ज़मानेका मैट्रिक पास है लेकिन अँगरेजी वह लिखता है कि बस' देखा न, मिस्टर विनयकुमार बी० ए० एल-एल० बी० की अँगरेजीको भी धता बता दिया !

सुरेन्द्र . अमाँ, दो दिनमे यह जो दिमाग आसमानपर है न····
ज़मीनपर उतरता नजर आयेगा, अभी तो दो-चार रद्दे बाकी है, जरा पड जाने दो फिर देखना

विपिन : लेकिन यार, जानते हो, मिस शकुन जो साहबके साथ आती है, अरे वही यार जो अकसर मोटर ड्राइव करते हुए यहाँ लचके टाइमपर आती है····

सुरेन्द्र . हाँ ' हाँ जानता तो हूँ, लेकिन क्यो, क्या बात है ?

विपिन . यार, लगता है इस विनयने उसपर भी कुछ जादू-सा कर दिया है, अब तो वह रोज़ लचके टाइमपर आती है लेकिन उसे किसीकी चिन्ता नही रहती, वह सीधे विनयके कमरेमे जाती है, दोना उठकर बाहर जाते है जाने क्या-क्या बाते होती है ?

सुरेन्द्र : अमाँ, होगा यार हमे इस दुनियाके पचरेसे क्या काम ? यहाँपर ले-देके एक बीवी है सो तो छुट्टी ही नही मिलती कि उसकी देख-भाल करूँ, फिर यह बिजनेस कौन करे हाँ एक बात तो बताओ, इस विनयकी तो शादी हो गयी है न ?

विपिन अच्छा जी, तो जैसे मै ही इसका पडोसी हूँ !

सुरेन्द्र : नही यार, बात यह है कि ये दोनो खूब लडते है, बात-बातपर दोनोमे कुछ-न-कुछ हो ही जाती है ।

विपिन : हाँ ...तुम औरतोको क्या समझते हो, यह सब जानती हैं ।

सुरेन्द्र : हश श श' चुप-चुप वह देखो "साहबकी मोटर आ धमकी ।

[मोटरके आनेकी आवाज़, हार्न....बाहरसे आती हुई ध्वनियाँ]

फ़िलिप : कम ऑन डियर, ओह ! छोडो भी उसे, तुम ज़रा देर बैठो, मै लचमे तुम्हे छोड आऊँगा ।

शकुन : थैंक यू , मुझे अभी सुरजीतके यहाँ जाना है, [मोटर स्टार्ट करते हुए] टा टा

फ़िलिप ऑल राइट '[आवेशमे] चपरासी ' चपरासी

चपरासी : जी हुजूर !

फ़िलिप : फाइल्स ले चलो, इडियट खडा-खडा क्या देखता है ?

चपरासी कुछ नही, कुछ तो नही हुजूर !

[जूतेकी ध्वनिसे प्रवेश समवेत]

फ़िलिप · बडे बाबू बडे बाबू ! चपरासी चपरासी ! [घण्टियाँ भी लगातार बजाता है]

चपरासी : जी हुजूर !

फ़िलिप : बडे बाबूको भेजो ।

बड़े बाबू : मै तो खुद ही हाजिर हो रहा था हुजूर, आप नाहक परेशान हो रहे है ।

फ़िलिप : होनेकी बात ही नही है, सारा काम एरियरमे पडा है और देखिए अगर आपसे काम नही हो सकता तो छुट्टी

ले लीजिए' मेडिकल लीव आपकी ड्यू है न, फौरन लीजिए नही तो क्या फायदा साल आध-साल आपको नौकरी करनी है, कही इस बीच मुझसे कुछ लिख-लिखा गया तो दाग लग जायेगा।

बड़े बाबू : जी, जैसी आपकी मरज़ी।

फ़िलिप : और हाँ, बडे बाबू बडे बाबू''' अरे क्या आपको सुनाई नही पडता ?

बड़े बाबू : सुन रहा हूँ हुजूर !

फ़िलिप : क्या सुन रहे है आप ? दफ्तरमे घुसते ही चिल्लाना पडता है, विनयको भेजिए तो ज़रा' ''और हाज़िरीका रजिस्टर भी '''यह दफ्तर है कि तमाशा ''सारेके-सारे लोग देरसे आते हैं ? हाँ, उस नये क्लर्कका क्या हुआ ?

बड़े बाबू · जी हो क्या सकता है, उसकी बीवी बहुत सख्त बीमार है, अस्पतालमे पडी हुई है, दरखास्त आयी है।

फ़िलिप : हम क्या कर सकते है ? टेम्परेरी आदमी, छुट्टी है ही नही, उसे नोटिस भेज दीजिए। समझमे नही आता लोग बीवियोके पीछे इस कदर परेशान क्यो रहते है''''?

बड़े बाबू . क्या करे हुजूर, हम क्लर्कोकी जिन्दगीमे मदद देनेवाली तो महज़ बीवी है, उसकी परेशानी तो झेलनी ही पडती है हुजूर !

फ़िलिप · हूँऽ तो झेलिए ' खुशीसे झेलिए ' कौन रोकता है। आप लोगोको तो इसीमे मजा आता है, अपने घाव खोल-खोलकर दिखानेकी आदत-सी पडी रहती है आप

लोगोंकी। जाइए' एक हफ्तेमें एरियर समाप्त होना चाहिए। समझे ?

[फ़ोनकी घण्टी बजती है]

फ़िलिप : हलो, कौन ? शकुन ! हल्लो डियर···तुम उसकी चिन्ता छोड़ो, हाँ हाँ 'अच्छा, अभी तो भूमिका ही बँधी है सब ठीक हो जायेगा [हँसता है] ह ''ह··· ह' बात यह है शकुन, कि यह जो क्लर्कवर्ग है न, इससे प्रार्थना करनेसे काम नहीं चलता··· खैर, [विस्मयसे] अच्छा, चलो यह भी ठीक ही हुआ ··· लचके बाद विनयको ठीक है···[फ़ोन काटकर] चपरासी चपरासी [घण्टी बजाता है]

चपरासी : हाज़िर हुआ हुज़ूर !

फ़िलिप : विनय बाबूको बुलाओ।

विनय : मैं खुद ही हाज़िर हूँ साहब !

फ़िलिप : बात यह थी मि० विनय, कि ' कि तुम्हें एक काम करना है ''यानी तुम्हें ' चपरासी 'तुम यहाँ क्या कर रहे हो'' 'जाओ 'बाहर बैठो''''सिरपर सवार रहते हैं बेहूदे'''' [थोड़ा रुककर] हाँ तो मि० विनय, तुम्हें नाटकमें हीरोका पार्ट मिला है न''''?

विनय : जी, वह तो मिला ही है ''

फ़िलिप : मेरा ख़याल है कि नाटकके बाहर तुम्हें हीरो नहीं बनना चाहिए ''रिहर्सलके बाद तुम्हें अपना पार्ट भुला देना चाहिए, समझे''' !

विनय जी, मै समझ नही पाया आपका मतलब ?

फ़िलिप : समझ नही पाये ' खैर, अभी समझमे आ जाता है, नोट्स लीजिए ' लिखिए—डियर मैडम, हमे खेद है कि आपको मेरे कार्यालयके सदस्य मि० विनय-द्वारा अपमानित होना पडा, यह एक बहुत बडा जुर्म है, मै इसकी जाँच कर रहा हूँ। उचित काररवाईके बाद आपको सूचित किया जायेगा, धन्यवाद ! आपका '' पता लिखिए कुमारी शकुन पॉल, १२ साऊथ हॉल''' इलाहाबाद।

विनय : लेकिन, साहब, यह गलती है।

फ़िलिप : मै गलत-सही कुछ नही जानता, पूरे आफिसमे तुम्ही एक ऐसे हो जिसके खिलाफ शकुनकी शिकायत है, मै पूछता हूँ क्या यह बात सही है कि शकुनने बर्थ-डेपर तुम्हे महात्मा बुद्धकी मूर्ति दी थी ?

विनय · जी हाँ ' ।

फ़िलिप : यह भी क्या सही नही है कि मिस शकुनसे यह नाजायज तोहफा लेकर तुमने क्लबके निमन्त्रण छपवानेके कागज मिलसे बिना पैसा दिये भेजवाया था ?

विनय · यह झूठ है, बिलकुल गलत है ''।

फ़िलिप . खैर यह तो मौका लगनेपर पता चलेगा, तुम बहुत ही ज्यादा डिसकर्टियस हो।

विनय : मै नही जानता कर्टियस होनेका मतलब आप क्या समझते है, पर'''

फ़िलिप : सब समझमे आ जायेगा, जाइए ' और हाँ यह बा
मिस शकुनको न मालूम हो, समझे ।

[फ़ोनकी घण्टी बजती है]

फ़िलिप . हल्लो•••ओह तो तुम हो ! क्या ? तुम आ रही हो ? कोई बात नही, कार अपने ही इस्तेमालमे रखो, मै रिक्शेसे आ जाऊँगा। चपरासी 'रिक्शा बुलाओ, मुझे अभी जाना है ।

[मिलका सायरन बजता है : लंचका अवकाश]

विपिन . देख लिया बडे बाबू आपने ?

सुरेन्द्र . अरे देखना क्या है जी, यह सब ताम-झाम मैने बहुत देखे है, लेकिन बडे बाबू, हमारी यह निश्चित राय है कि अगर फिलिप साहबका यह व्यवहार है तो हम लोगोमे-से कोई भी टिकिट नही खरीदेगा, यह क्या मजाक है ?

बड़े बाबू . फिर वही ना-तजुरबेकारीकी बात करते हो ! हटाओ, दो-दो रुपयेकी बात है, दे डालो 'नही तो

विनय : नही तो फिजूलकी लडाई होगी, यही न ? मै लडाईसे नही डरता ।

बड़े बाबू : फिर वही ना-तजुरबेकारीकी बात करते हो, तुम जानते नही विनय, वह जो शकुन है न, उसने जाकर साहबसे शिकायत की है और देख लिया साहबका रुख' '

विनय : सब देखा हुआ है, लेकिन साहबको इस नाटकसे क्या ? यह दफ़्तर है ' 'यहाँ यह बेजा जोर दबाव' ''

बड़े बाबू : यह सब चलता है मेरे दोस्त, मैंने तीस सालकी नौकरीमे घाम नही छीली है, ये साहब लोग अपने मनका काम करते है, इनकी हाँ-मे-हाँ नही मिलाओगे तो यह बिना एरियरका एरियर निकालेगे, बीवीका गुस्सा तुमपर उतारेगे, मोटरकी खराबीसे फाइले गोडेगे प्रेमिकासे अपमानित होनेके बाद तुम्हे अपमानित करेगे · ·

विनय : लेकिन हम इनका अपमान बरदाश्त क्यो करे ?

बड़े बाबू : क्यो करे, तुम अभी बिलकुल ना-तजुरबेकार हो, देखो साहब, जोर-जिन्दगीमे कुछ कडवी घूँटे भी पीना सीखो, मिट्टीके शेर बनो अगर असलियतमे शेर बन गये तो गोलीके निशाना बन जाओगे ·

विनय : शेर शेर ही होता है बडे बाबू, मिट्टी मिट्टी ही होती है ! आप क्या जाने, मिट्टीका शेर भी कभी-कभी दहाड सकता है, वह भी गरज सकता है, वह भी मौतके मुँहमे जा सकता है

सुरेन्द्र . शाबाश मेरे मिट्टीके शेर शाबाश ! गरजते जाओ, लेकिन देखना कही टूटना नही मेरे दोस्त, क्या तैश है · 'मजाल है कि शिकारी जाल बिछा मके । मिट्टीका ही हुआ तो क्या हुआ, है तो जानदार !

विपिन . और क्या समझ रखा है मेरे रबरके बबुए "या तो गरजेगा नही और अगर गरजेगा तो फिर बस इसी तरह

[फ़ोनकी घण्टी]

बड़े बाबू : हलो पेपर मिल स्पीकिड्' ' यस' 'कौन ? मि०

विनयकुमार ? होल्ड आन" , लो विनय, तुम्हारा फोन है····

विनय · हल्लो ···कौन ? शकुनजी,··· हूँ····हूँ····लेकिन सुनिए यह क्या मजाक है, मै इसे पसन्द नही करता, आखिर आप हम लोगोको क्या समझती है, कोई बेजान पुतले है जो आपने जैसा चाहा वैसे ही उठाना शुरू कर दिया ' क्या कहा जी हाँ, नाटक क्लबका मेम्बर मै हूँ '' मिस्टर फिलिप्स है न कि मिस्टर फिलिप्सका सारा दफ्तर 'मै कुछ नही जानता इस बारेमे मै कोई बात नही कर सकता ! [फ़ोन रखनेकी ध्वनि]

बड़े बाबू . अरे अरे, यह क्या गज़ब कर दिया तुमने विनय, शायद तुम जानते नही 'इसका नतीजा बहुत बुरा होगा ! तुम तो अभी टेम्परेरी हो, तुम्हारे सिर तो यह बीत जायेगी'

विनय क्या बडे बाबू आप भी मुझे ऐसा डराते है कि जैसे मुझे निगल जायेगे साहबजादे, दुनियामे हर चीज सस्ती हो सकती है लेकिन आदमीकी जिन्दगीसे सस्ती कोई चीज नही है !

[फ़ोनकी घण्टी]

विनय . हल्लो····विनय स्पीकिङ् 'जी '', आपको मेरे पास फोन करनेकी क्या जरूरत है, आप मिस्टर फिलिपसे कहे, सारा काम ठीक हो जायेगा !····जी ' 'जी हाँ ' हाँ' ' अरे हटाइए भी शकुनजी, आपके बेबी-शोमे तो बेचारे पापा लोगोकी मौत हो जायेगी और सुनिए····मै

न तो अब ड्रामेमे दिलचस्पी ले सकता हूँ और न कर सकता हूँ, पता नही कब आपका अपमान हो जाये····मै ज्यादा बात नही चाहता····! [फ़ोन रखनेकी ध्वनि]

बड़े बाबू : मिस्टर विनय !

विनय · जी बड़े बाबू !

बड़े बाबू : देखिए साहब, आपके जो जीमे आये कीजिए ··अब तीस साल इस नौकरीमे खटनेके बाद मेरे अन्दर यह बूता नही है कि मै आपका साथ दूँ, समझे! दो रुपये-की बात है, फिलिप साहबकी मरजी ···मै तो दे दूँगा ।

विनय : जी····आप जो चाहे करे लेकिन मै इसके लिए शकुनको क्षमा नही कर सकता

बड़े बाबू . यह आपकी बात है, आप जाने, मुझे जो कहना था, वह मैने कह दिया !

विनय . ठीक है साहब !

[फ़ोनकी घण्टी]

विनय हल्लो· मैने कह दिया न शकुन, कि मै इसके बारेमे कोई बात नही करना चाहता ···क्या ? एक बार तुमसे घरपर मिल लूँ ? · खैर ·मेरा इन्तजार करना, आऊँगा · ·मै आज ही आऊँगा ···हाँ हाँ, मै जानता हूँ··· · ।

[शकुनका घर]

शकुन : हल्लो डियर, आज तुम उदास क्यो हो ?

विनय : बात यह है कि ···यह तुम्हारा घर है, तुम्हे सब कुछ कहनेका अधिकार है, चाहो तो मुझे उदास साबित करो या बेहद खुश क्योकि

शकुन कि आज फिलिप साहब तुम लोगोपर बहुत नाराज हो गये है बात दरअसल यह थी विनय, कि वह जो तुम्हारा बड़ा बाब है न ·उसने मेरी इन्सल्ट कर दी थी ·

विनय : और आपकी इन्सल्ट इतनी बडी चीज है कि आप उसके लिए एक आदमीकी रोजी ले सकती है, क्यो यही न ?

शकुन : रोजी लेनेके लिए तो मैने फिलिपसे नही कहा था, यो ही बात-बातमे मैने यह बता दिया था कि तुम्हारे ऑफिसमे कुछ लोग ऐसे है जो मामूली कर्टसी भी नही जानते

विनय : देखो शकुन, तुम्हे लेकर अजीब-अजीब तरहकी बातें होती है, तुम मुझसे रोज मिलती हो न, वहाँ·· उस दफ्तरमे फिलिप साहबको शायद यह नागवार गुजरता है·

शकुन उँह···छोडो भी इन बातोको, तुम अपने दफ्तरके बारेमे इतना ज्यादा क्यो सोचते हो ?

विनय : इसलिए कि मुझे वहाँ नौकरी करनी है, तुम्हारा क्लब तो मेरा पेट नही भर देगा · और····

शकुन : हूँ ऽ····तो यह बात है, कहाँ गयी तुम्हारे जीवनकी वह साधना और तपस्या ? तुम तो कहते थे न कि

नाटकके विकासके लिए, कलाके लिए तुम अपनी ज़िन्दगी दे दोगे ··।

विनय : हूँ ऽ··अब भी कहता हूँ, लेकिन अन्तर महज़ इतना है कि तब मै जो कुछ भी कहता था उसका मतलब नही समझता था और आज उसका मतलब समझता हूँ ··

[मोटरकी आवाज़, फ़िलिप शराबके नशेमें चूर ज़ीनेपर चढ़ता आता है ।]

शकुन : फिलिप साहब आ गये, देखो विनय, यह सारी बाते जो हमारे बीच हुई है उन्हे फिलिपसे मत कहना, समझे !

विनय : हर असलियत ज़रूरतसे ज्यादा तीखी लगती है, लेकिन असलियतको जानना ही बेहतर होता है !

शकुन यह तुम कह सकते हो विनय, वैसे बात यह है कि तुमने मुझे समझनेकी कभी कोशिश ही नही··कि···मेरे बावजूद भी तुमने सुधासे शादी ·सुधा····जो भद्दी कुरूप ·हूँ । दिस इज़ योर च्वायस ···खैर· ·

विनय : लेकिन तुम्हे उस भद्देपनसे क्या मतलब है ? तुम अपना काम करो। अपनी ज़िन्दगी सँभालो जो जोड-जोडसे बिखरी जा रही है, जिसके हर बिखरावमे एक भयंकर घुटन है एक ऐसी निराशा है जिसे तुम कभी भी अपनेसे दूर नही कर सकती····

शकुन : और जैसे तुमने यह घुटन दूर कर ली है,····अगर तुम्हारे अन्दर घुटन नही है तो फिर आज इस समय तुम यहाँ क्यो आये हो ?

फ़िलिप : घुटन कैसी घुटन ! [हिचकियोंके साथ] सऽब बेकार है ''नशेमे सब लोग जाने क्या-क्या बकते है''''
विनय हूँ ऽऽ . क्लर्क है मेरे दफ्तरमे''''शकुन' ''जाने क्या है आग हैं ''चिनगारी है चिनगारी '''

शकुन : मि० फिलिप, यह मेरा घर है '

फ़िलिप . ऐ यह तुम्हारा घर है मै कब कहता हूँ यह मेरा घर है औ तुम्हारा ही घर तो है यह इसीलिए तो मै यहाँ आया हूँ यह कौन है ऊँ कौन है यह ?
विनय !

शकुन ये मिस्टर विनय है ।

फ़िलिप : मिस्टर विनय हूँ ऽ 'विनय मिस्टर विनय जिसे मै अपने कमरेमे रोज बीसियो बार बुलाता हूँ और फिर कमरेसे निकाल देता हूँ

शकुन ' यह क्या हो रहा है मिस्टर फिलिप आखिर '

फ़िलिप : क्या आखिर-आखिर लगा रखा है ? मै आ गया हूँ
विनय यू गेट आउट' !

शकुन : तुम खुद क्यों नही चले जाते ?'' 'क्यो नही वापस जाते ?

फ़िलिप ' मै '? हूँऽ ''अच्छा-अच्छा मै ही चला जाता हूँ '''
जाता हूँ [जाते समय गिर पड़ता है, फ़र्शपर बेहोश हो जाता है]

विनय . मिस्टर फिलिप' लगता है बेहोश हो गया है !

शकुन : हो जाने दो, नशेमें डूबे हुए आदमीकी यही हालत

होती है, यह बेहोशी कुछ क्षणोके लिए आदमीसे उसकी जिन्दगी छीनकर बिलकुल निश्चिन्त बना देती है।

विनय . ऐसी निश्चिन्तता जो मौतसे भी भयानक होती है ·· खैर, जाने दो यह बाते, यह बताओ मुझे क्या करना है, मै अब तुम्हारे इस नाटकमे काम नही कर सकता !

शकुन : इस नाटकमे ? फिर किस नाटकमे काम करोगे ?

विनय मै किसी नाटकमे काम नही करूँगा, समझी ? तुमको फिलिप साहब तो बहुत मानते है न, तुम उनसे मेरी शिकायत भी तो कर सकती हो !

शकुन : शिकायत और मै, और तुम्हारी शिकायत। क्या बात करते हो विनय ? मैने जिन्दगीकी न जाने कितनी शिकायते पी डाली है विनय, ··इस छोटी-सी बातके लिए मै तुमसे शिकायत न करके फिलिपसे शिकायत करूँगी !

विनय : हूँऽ ··तुम तो ऐसा बन रही हो शकुन, जैसे मै झूठ कह रहा हूँ ! तुम खुद पूछ लेना मिस्टर फिलिपसे, वही तुम्हे बता देगे !

शकुन : [रोकर] तुम मेरी बात क्यो नही मानते विनय, मेरी जिन्दगी अधूरी है, मेरे सपने टूट चुके है, शायद जरूरतसे ज्यादा निर्भीक होनेके नाते, कही मुझमे कुछ ऐसा आ गया है जो बडा कटु है, जिसे देखकर लोग मुझे घृणा करने लगते है, लेकिन लेकिन इस शराबी फिलिप और इस शरीफ विनयके बीच ही कही मेरी जिन्दगी भी टूट गयी है ! बोलो · क्या वह मुझे वापस मिल सकती है !

विनय : वापस दुनियामे कोई चीज़ नही होती शकुन ! ज़िन्दगी भी दुनियाकी ही चीज है

शकुन : [रोकर] तो फिर, यह टूटे खिलौने-जैसी ज़िन्दगी, मै कैसे निबाहूँ, लगता है खिलौनेके पेचमे मोरचा लगता जा रहा ...इतना गहरा जंग....इतनी गहरी....

विनय : ज़ग भी बाहरसे नही आता शकुन, जब अपना लोहा दागी होता है तो उसमे जग भी लगता है ! लेकिन तुम्हे और हमे यह समझना है कि मै एक पेपर मिलका क्लर्क हूँ, तुम इस नगरकी एक सम्भ्रान्त महिला मै एक भद्दी कुरूप स्त्रीका पति हूँ और तुम मिस्टर फिलिपकी होनेवाली पत्नी....मै एक....

शकुन : और भी कुछ ? क्या इतना काफी नही है ? क्या तुम इससे भी ज्यादा बात कहनेकी जरूरत समझते हो ? जिन्दगीके बोझसे दूभर हुआ व्यंग्य कितना कटु होता है [बहुत धीमे-से] मैने तुममे अपनी ज़िन्दगी वापस माँगी थी लेकिन तुमने उसके बदलेमे मुझे आग देनेकी कोशिश की है विनय

विनय · आग ! तो क्या हुआ ? तुम्हारे लिए तो आगकी कोई कीमत ही नही है, तुम तो स्वतन्त्र होकर रहना चाहती हो....ऐसी आज़ादीको आग क्या नुकसान पहुँचायेगी...

शकुन : आग नुकसान नही पहुँचाती विनय ? आदमी झुलसकर रह जाता है लेकिन, कह नही पाता ! तुम नही समझोगे, तुम हरगिज नही समझ सकते·

[फ़िलिपको कुछ होश आता है]

फ़िलिप : [लड़खड़ाती हुई ज़बानसे] कौन आग दे रहा है ··· हर छलकता हुआ जाम··· आगका छलकता हुआ प्याला ही होता है लेकिन····लेकिन यहाँ क्या है····शकुनके घरमे आग पी नही जाती·· आग लगायी जाती है···· आग है आग, पानी नही है· ·

शकुन : और विनय, इतने बडे व्यंग्यके साथ समझौता मै कर रही हूँ····इसलिए कि जिसे समाज आदर्श कहता है, जिसे दुनिया आदर्श कहती है, उसका माप अलग होता है···इसे समझनेके लिए, इन्ही व्यंग्योके बीच जीना पडता है ·।

विनय : लेकिन ·लेकिन यह भटकाव क्यो ? शकुन ·शकुन·· ·! इस उठते हुए तूफानके सामने जाने क्यो मेरे क़दम डगमगा रहे है ! लगता है, साबित कुछ नही बचेगा···· बचा-खुचा भी टूट जायेगा· ··इसे टूटना ही है ·

फ़िलिप : [लड़खड़ाती हुई ज़बानसे] कौन टूट रहा उठो टूटना ही खुमार है नशेका असली मज़ा टूटनेमे है ·ऊँह टूटनेसे डरनेसे डरनेवाले क्या करेंगे, साबित जिन्दगीमे क्या है ? खुमारकी बदमस्ती ··उससे डरनेसे फायदा··· टूटना भी कामकी चीज़ है मेरे दोस्त· ··!

शकुन : हूँऽ ···वह दिन भी याद आता है विनय, जब मैंने तुम्हें पहली बार रसजीतके यहाँ देखा था, तुम सोच नही सकते होगे कि मेरी जिन्दगी, महज़ एक पहेली बनकर रह जायेगी · लेकिन आज, वह महज एक खोखली पहेली ही रह गयी है ! पता नही, जिन्दगीके इन खाली खानोका कोई अर्थ भी होगा ·

विनय : शकुन....शकुन... ! आजसे मै कुछ नही कहूँगा शकुन, मै नही जानता था....कही तुम्हारे अन्दर इतना गहरा दर्द भी होगा...

शकुन : हूँऽ यही तो बात है विनय, तुम नही, सारा ज़माना मुझे यही समझता है। स्त्रियोके लिए और रास्ता ही क्या है, अगर वह आज़ाद बननेकी चेष्टा करें तो उन्हे घृणा मिलेगी और अगर वह दबी-बुझी-सी रहे, तो उन्हे प्रतारणाएँ मिलेगी ! कितना बडा व्यग्य है यह सबका-सब

विनय होगा, लेकिन मै इसे नही मानता। मेरे लिए यह सत्य नही है, सच मानो शकुन, मुझे तुमसे कोई शिकायत नही है !

शकुन : शिकायतका सवाल ही कहाँ उठता है मै कहती हूँ जाओ चले जाओ यहाँसे विनय.. मेरे लिए केवल यही सच है, यही ज़िन्दगी शराबकी गन्धमे शराबोर फिलिप और उसका व्यग्य...

[दूरसे आवाज़ आ रही है]

बिका आदमी चार आना,
हर माल मिलेगा चार आना।

विनय : हूँऽ. .जाने क्या हुआ है सुधाको ! पचास बार कहा कि यहाँ इस घडीके ऊपर यह रबरका बबुआ मत रखो लेकिन मानती ही नही ! सुधा 'सुधा !

सुधा . क्या है ? हर मिनिटपर सुधा-सुधाकी रट लगानेकी आदत कहाँसे सीख ली है ? मै कहती हूँ कोई और काम नही रह गया है क्या....?

विनय • काम क्या करूँ ? दिमाग तो एक मिनिट भी शान्त नही रहनेवाला । मैने पचास बार कहा कि इस घडीके ऊपर रबरका बबुआ मत रखा करो, यह जगह महात्मा बुद्धकी मूर्तिकी है, वही शोभा देती है लेकिन तुमको जाने क्या सूझो है । बुद्धकी मूर्ति हटा करके तुम्हे यह भद्दा कुरूप टूटा हुआ बबुआ यहाँ रखनेमे जाने क्या मजा मिलता है ?

सुधा • ओह ? यह बात है ! ···लेकिन महात्मा बुद्धकी मूर्ति यहाँ नही रखी जायेगी, समझे ?

विनय : लेकिन आखिर क्यो, क्या इसलिए कि वह मुझे पसन्द है ?

सुधा हाँ हाँ, इसीलिए कि वह तुम्हे पसन्द है ··उस शकुनकी इस घरमे नही चलने पायगी समझे ! उसकी दी हुई बुद्धकी मूर्ति आँखके सामनेसे हटी नही कि बस तुम्हारा दिमाग खराब हो गया । आजसे वह बुद्धकी मूर्ति इस कमरेमे नही आयेगी ···नही आयेगी· ··नही आयेगी····!

विनय . तो ठीक है, मै भी इस कमरेमे नही रहूँगा, समझी ! तुम समझती हो तुम्हारा मजाक बडे कामका है और मै कुछ नही हूँ ?

सुधा : आप कुछ क्यो नही है ! आप खुद जो रबरके बबुए है इसीलिए तो आपको यह बबुआ पसन्द नही आता· इसे देखकर आपको खुद अपनी याद आने लगती है मै याद आने लगती हूँ· !

[दूरसे आती हुई आवाज़]

सुरेन्द्र : क्या बात है विनय भाई, आज सुबहसे ही यह चख-चख चल रही है ? ओह, भाभीजी आप है ! नमस्ते ! नमस्ते जी !

सुधा : [कुछ गुस्सेमे] नमस्ते' !

सुरेन्द्र : बात दरअसल यह है भाभी, कि हर क्लर्क और खासकर नौजवान क्लर्क अपना भाई-बिरादर देखकर थोडा परेशान हो जाता है। विनय भाई जो है न, बस, यह समझो कि यह भी रबरके बबुएके समान है, इनका अपना कुछ नही है, सब दूसरोका है, दिमाग''''फिलिप''''मेरा मतलब फिलिप सुपरिण्टेण्डेण्ट है न दफ्तरका ' 'उसका है, दिल शकुनका है, घर आपका है, कलम ससुरालकी है, मिजाज अल्लाहका है ' 'इनकी बातोसे तुम क्यो परेशान हो जाती हो भाभी ?

सुधा : बस बस, रहने दो, तुम लोगोका कुछ पता नही रहता, कब किस समय क्या करोगे इसका कोई ठिकाना नही। तुम सब एक हो जाते हो मौका पडनेपर। मुझे अभी बाहर जाना है नही तो तुम्हारी भी कलई अभी-अभी खोलती।

सुरेन्द्र : तो यह बात है ! यानी कि आपको मेरे ऊपर भी यकीन नही है, रहा''''यानी कि मे भी विनय भाईके समान हूँ' यानी कि विनय भाई और मै दो ही [दूर हट-कर] जाओ भी भाभी, तुम किससे कम हो।

[घड़ीसे नौकी घण्टी बजती है। सुरेन्द्र विनयसे]

अरे विनय भाई, तुम किस चिन्तामे पड़ गये हो,

नौकर-पेशा आदमियोको इतना नही सोचना चाहिए। हमारी तो बडी छोटी ज़िन्दगी होती है। कमरे सजानेके लिए बस दिवालीमे लक्ष्मी-गणेशको मूर्ति खरीद ली, वही काफी है, लेकिन नही, तुम मेरी बात थोडे ही मानोगे, तुम्हे तो फिलिप साहबकी नकल करनी है। अगर उनके यहाँ ईसामसीहकी मूर्ति है तो तुम्हारे यहाँ महात्मा बुद्धकी होनी ज़रूरी है।

विनय : क्या तुम भी छोटी बाते करते हो सुरेन्द्र !

सुरेन्द्र : अच्छा जी, मै छोटी बाते करता हूँ। विनय भाई, अपनी छोटी बात बडे कामकी होती है। देखो न वह जो दिवालीके दिनमे लक्ष्मी-गणेश खरीदता हूँ न, उससे बडे-बडे काम निकलते है। लडके खिलौनेके लिए रोने लगे, उन्हे दे दिया। थोडी देर तक उन्होने उसके साथ खेला, जी बहल गया, फिर अपनी जगहपर रख दिया। श्रीमतीजीने पूजा-पाठके वक्त पूजा भी कर ली, और अब यार दोस्त आये तो उन्होने उसे देखकर यह भी समझ लिया कि मै शौकीन आदमी हूँ, मै भी अपने कमरेमे मूर्तियाँ रखता हूँ।

विनय : अच्छा, तुम्हारा नुस्खा तो बडा सस्ता है, एक मूर्ति और छूमन्तर दवाकी तरह काम करती है, सिर दर्द, जुकाम, बुखारसे लेकर साँप बिच्छू काटने तकमे एक ही दवा है। क्या कमाल किया है तुमने !

सुरेन्द्र . एक क्लर्क, विनय भाई, हमेशा कमाल करता है। साठ रुपयेसे नौकरी शुरू करके एक सौ बीस तकमे तमाम ज़िन्दगी बिता देना क्या आप कम कमालका काम है।

अगर यह छू मन्तरवाली दवाइयाँ न हो तो हम तो दो ही दिनमे घुट-घुटकर मर जाये ।

विनय : लेकिन हार माननेकी क्या ज़रूरत है। क्या साठ रुपया पाकर भी हम विचारोमे ऊँचे नही हो सकते ।

सुरेन्द्र : विचार, और हम क्लर्कोंके लिए! टी० बी० हो जायेगी, टी० बी० ! विनय भाई, हर साल एक-न-एक हमारे यहाँ उसका शिकार होता है। विचार किया नही कि मरे। अभी तुम नये-नये आये हो न इसलिए तुम्हे पता नही है। पन्द्रह सालसे मै यह क्लर्की कर रहा हूँ भाई जान, यहाँ तो बस एक ही गुरु है—जो साहब कहे बस हाँ, विचार किया कि मारे गये ।

विनय : मै नही मानता, मै तो जिस दिन सोचना छोड दूँगा, बस मर जाऊँगा ।

सुरेन्द्र : सोचनेका भी वक्त आता है विनय भाई, लेकिन वह सोचना दूसरे किस्मका होता है। यानी यह कि कौन-सी तरकीब करे कि बनियेका कर्ज़ चुकता हो जाये, कौन-सी तिकडम करे कि बीवी-बच्चोके पास जाडेके कपडे हो जाये, कौन-सी तरकीब करे कि साठ रुपयेका रबर—मेरा मतलब तनख्वाह बढ़कर पैसठ हो जाये ।

[दरवाज़ेपर थपकियाँ]

सुरेन्द्र कौन, कौन है ?

शकुन : मै हूँ, शकुन !

सुरेन्द्र : ओह हो, आप शकुनजी; आ गयी, अभी आप ही का

जिक्र हो रहा था। आओ-आओ। कहो तुम्हारा नाटक कब हो रहा है ?

शकुन : हो ही जायेगा सुरेन्द्र बाबू, अभी तो रिहर्सल्स हो रहे है रिहर्सल्स। अरे हाँ भाभी जी कहाँ गयी ? हल्लो सुधा, नमस्कार !

सुधा [गुस्सेमे] नमस्कार, कहिए आज भी कही जाना है ?

शकुन : जायेगे कहाँ, देखिए अभी नाटकका रिहर्सल है न, मै जरा देरके लिए विनयको लेने आयी हूँ।

सुधा . लिवा न जाइए ! सुधाको क्या पडी है कि वह आपके और इनके बीच आये। खूब नाटक होने दीजिए। सारी जिन्दगी ही नाटक है।

शकुन अरे सच भाभीजी, आप तो बुरा मान गयी। देखिए, अगर आप इन्हे खुशीसे मेरे साथ न जाने देगी तो मै इन्हे साथ न ले जाऊँगी।

सुधा : मै कहती हूँ, आपको सिवा नाटकके और कोई काम नही है ?

शकुन : देखिए भाभीजी, आप पिछले तीन दिनोसे इन्हे जाने दे रही है, और· ·

विनय : देखो शकुन, मै अब नाटकमे पार्ट नही कर सकता।

शकुन . लेकिन क्यो ?

विनय . इसलिए कि मै अब यह महसूस करने लगा हूँ कि एक क्लर्कको जिन्दगीमे रुपया ही सबसे बडा धन्धा है। यह कला, यह साहित्य, यह सबका-सब बडे लोगोकी चीज़ है। रोज ऑफिसमे चख-चख मची रहती है।

बडा बाबू ऐरियरके नामपर रोज दो बाते सुनाता है। फिलिप साहब अपना अलग रोब जमाते रहते है। घरपर सुधाको भी बुरा ही लगता है। मुझे लगता है यह सब साधारण जीवनके साथ नही चल सकेगा

शकुन . तुम भी तो विनय रबरके बबुएकी तरह हमेशा दूसरोके दबानेपर आवाज निकालते हो। मै कहती हूँ, तुम खुद अपनी आवाज क्यो नही पैदा करते ?

विनय : मेरी आवाज तो उसी दिन खत्म हो गयी शकुन, जिस दिन मैंने पेपर मिल्समे नौकरी की। तुम्हारा नाटक मेरे बसका नहीं है, मै नही कर पाऊँगा।

शकुन . सोच लो विनय, बात बहुत आगे बढ चुकी है, आपके पेपर मिलके मालिक सेठ सॉवरियादास इसका उद्घाटन करेंगे, और इस नाटकमे यदि आपने भाग लिया तो सम्भव है आपकी तरक्की मिल जाये ?

विनय : तरक्की। हटाओ इन बातोको शकुन, चलो कही घूम आये।

सुधा : मै कहती हूँ, शकुनजी जो कुछ कहती है उसे मान क्यो नही लेते ? सेठजीका मन अगर आ जायेगा तो क्या कुछ नही हो सकता ?

विनय : यह तुम कह रही हो सुधा, तुम ! जिसे पिछले तीन सालसे सिवा मेरे पढने-लिखने, कला, साहित्यके प्रेमकी आलोचनाके कुछ और काम ही नही था। विश्वास नही होता। मेरे कान मुझे धोखा तो नही दे रहे है !

शकुन : सो बात नही है विनय बाबू, सुधाजीकी बातमे बहुतसे बडी सच्चाई है।

विनय : सच्चाई, सच्चाई मै जानता हूँ शकुन, अभीतक इन्ही सुधाका यह मत था कि तुम्हारे साथ मुझे नाटकमे भाग नही लेना चाहिए। अभी कुछ घण्टो पहले इन्होने मुझे शिक्षा दी थी कि मेरी जिन्दगीकी असलियत रुपया है। कला, नाटक, यह सब महज़ मजाक है। इसमे कुछ नही धरा है। सच्ची मेरी नौकरी है और सच्चा है मेरा उनका विवाह। समझी ?

सुधा : हाँ-हाँ, मै अब भी यही कहती हूँ। सच्ची सिर्फ तुम्हारी नौकरी है। नौकरीसे बढकर कोई भी सच्ची चीज नही है। सेठको प्रसन्न करनेकी बात है। क्या धरा है इसमे—नाटकमे अभिनय करनेमे।

विनय . बस-बस, आगे कुछ मत कहना। मेरे लिए नाटकमे अभिनय करना पैसेसे सम्बन्धित नही है। मै अपनी जिन्दगीमे कही बिना कीमतके भी कोई चीज़ रख छोडना चाहता हूँ। कही कोई जगह तो ऐसी हो जिसे मै बिना पैसेके देख सकूँ ··

शकुन : खैर, छोडो इस बातको। इस समय तुम बहुत ज्यादा परेशान मालूम पडते हो। ज्यादा सोचना बेकार है। तुम्हारा जी चाहे नाटकमे पार्ट करना, जी चाहे मत करना।

विनय : हूँ, तुम भी बुरा मान गयी शकुन, लेकिन देखो न, यह दुनिया भी कितनी अजीब है। हर चीज़को पैसेकी तराजूपर तोलती है।

शकुन : पैसा भी एक बहुत बडी सच्चाई है, इसे क्यों भूलते हो विनय, मै तो पैसेको काफी अहमियत देती हूँ। तुम्हे क्या मालूम मेरी ज़िन्दगी क्या है। पैसोका महत्त्व, मुझसे पूछो। खैर छोडो इन बातोको जी चाहे कलसे रिहर्सलमे आना, जो चाहे मत आना।

विनय : सब झूठा है—कला, साहित्य, नाटक। ज़िन्दगीकी असलियत है यह पचासी रुपये, जो मुझे महीने-भर खटनेके बाद मिलते है। कोई तो नही बरदाश्त कर पाता मुझे। दफ्तरमे साथियोका व्यंग्य चलता है, क्योकि मै कीमती कपडे पहनकर उस पचीस रुपये-वाली कुरसीपर बैठता हूँ। मि० फिलिपका व्यग्य अलग चलता है, क्योकि मै उनके साथ-साथ क्लबका मेम्बर हूँ। बडे बाबूका व्यग्य भी कितना कटु होता है, क्योकि उन्होने अपनी सारी जिन्दगी खटाकर जो असलियत पायी है वह है फाइल्स, नोटस्, ड्राटफ्स।

[दरवाज़ेपर दस्तक, फिर आवाज़]

बड़े बाबू . अरे मि० विनयकुमार, मि० विनयकुमार !

विनय : कौन है ?

बड़े बाबू : अरे भाई मै हूँ, मुन्शी अम्बिकाप्रसाद। आओ भी नीचे, अमाँ जल्दी करो !

विनय : क्या बात है बडे बाबू, इतनी रात गये आप। और यहाँ ?

बड़े बाबू : बात दरअसल यह है विनय बाबू, कि अभी-अभी फिलिप साहब मेरे घर आये थे। मुझे यह दो खत तुम्हारे

नाम दे गये है। एकमे तो यह लिखा है कि कलसे आपकी ड्यूटी लीव दी जाती है। जबतक ड्रामा समाप्त न हो जाये तबतकके लिए आफिससे छुट्टी है।

विनय · हूँ, तो इसके माने यह हुए कि मै नाटक करनेकी नौकरी करूँ। मै ऐसा नही करूँगा। मै सिर्फ पेपर मिल्समे नौकरी करना चाहता हूँ, मुझसे नाटक और नाटकके रिहर्सलसे कोई मतलब नही है।

बड़े बाबू : लेकिन यह साहबका हुक्म है, इसे मानना ही पडेगा।

विनय : लेकिन साहबको क्या पडी है, मै जिस कामके लिए नौकर रखा गया हूँ वही करूँगा।

बड़े बाबू : सोच-समझ लो। फिलिप साहबका गुस्सा बडा तेज़ होता है।

विनय : तो तेजीसे क्या हुआ। क्या वह मुझे नौकरीसे निकाल देगे? ऐसी धमकियाँ मैने बहुत सुनी है बडे बाबू, मुझे नाटकमे पार्ट नही करना है। मुझे सिर्फ पेटके लिए कमाना है। सिर्फ··

बड़े बाबू . तो फिर सुनिए, अगर आप ड्रामेमें पार्ट नही करेगे तो यह लीजिए, यह आपका डिसमिसल लेटर है। आपके खिलाफ जुर्म यह लगाया गया है कि आप ड्रामे और साहित्यमे दिलचस्पी रखते है इसलिए आपकी वजहसे ऑफिसके काममे बडी रुकावटे पडती है।

विनय . क्या मज़ाक है बडे बाबू, जिस ड्रामेमे भाग लेनेके कारण मुझे नौकरीसे अलग किया जा रहा है उसी ड्रामेमे भाग लेनेके लिए मुझे ड्यूटी लीव भी दी जा रही है।

बड़ा बाबू ऐरियरके नामपर रोज दो बाते सुनाता है। फिलिप साहब अपना अलग रोब जमाते रहते है। घरपर सुधाको भी बुरा ही लगता है। मुझे लगता है यह सब साधारण जीवनके साथ नही चल सकेगा

शकुन : तुम भी तो विनय रबरके बबुएकी तरह हमेशा दूसरोंके दबानेपर आवाज निकालते हो। मै कहती हूँ, तुम खुद अपनी आवाज क्यों नही पैदा करते ?

विनय : मेरी आवाज तो उसी दिन खत्म हो गयी शकुन, जिस दिन मैने पेपर मिलसमे नौकरी की। तुम्हारा नाटक मेरे बसका नही है, मै नही कर पाऊँगा।

शकुन . सोच लो विनय, बात बहुत आगे बढ चुकी है, आपके पेपर मिलके मालिक सेठ साँवरियादास इसका उद्घाटन करेगे, और इस नाटकमे यदि आपने भाग लिया तो सम्भव है आपकी तरक्की मिल जाये ?

विनय . तरक्की। हटाओ इन बातोको शकुन, चलो कही घूम आये।

सुधा : मै कहती हूँ, शकुनजी जो कुछ कहती है उसे मान क्यो नही लेते ? सेठजीका मन अगर आ जायेगा तो क्या कुछ नही हो सकता ?

विनय : यह तुम कह रही हो सुधा, तुम! जिसे पिछले तीन सालसे सिवा मेरे पढने-लिखने, कला, साहित्यके प्रेमकी आलोचनाके कुछ और काम ही नही था। विश्वास नही होता। मेरे कान मुझे धोखा तो नही दे रहे है!

शकुन : सो बात नही है विनय बाबू, सुधाजीकी बातमे बहुत बडी सच्चाई है।

विनय : सच्चाई, सच्चाई मै जानता हूँ शकुन, अभीतक इन्ही सुधाका यह मत था कि तुम्हारे साथ मुझे नाटकमे भाग नही लेना चाहिए। अभी कुछ घण्टो पहले इन्होने मुझे शिक्षा दी थी कि मेरी जिन्दगीकी असलियत रुपया है। कला, नाटक, यह सब महज़ मजाक है। इसमें कुछ नही धरा है। सच्ची मेरी नौकरी है और सच्चा है मेरा उनका विवाह। समझी ?

सुधा : हाँ-हाँ, मै अब भी यही कहती हूँ। सच्ची सिर्फ तुम्हारी नौकरी है। नौकरीसे बढकर कोई भी सच्ची चीज़ नही है। सेठको प्रसन्न करनेकी बात है। क्या धरा है इसमे—नाटकमे अभिनय करनेमे।

विनय : बस-बस, आगे कुछ मत कहना। मेरे लिए नाटकमे अभिनय करना पैसेसे सम्बन्धित नही है। मै अपनी जिन्दगीमे कही बिना कीमतके भी कोई चीज रख छोडना चाहता हूँ। कही कोई जगह तो ऐसी हो जिसे मै बिना पैसेके देख सकूँ ..

शकुन : खैर, छोडो इस बातको। इस समय तुम बहुत ज्यादा परेशान मालूम पडते हो। ज्यादा सोचना बेकार है। तुम्हारा जी चाहे नाटकमे पार्ट करना, जी चाहे मत करना।

विनय : हूँ, तुम भी बुरा मान गयी शकुन, लेकिन देखो न, यह दुनिया भी कितनी अजीब है। हर चीज़को पैसेकी तराजूपर तोलती है।

शकुन : पैसा भी एक बहुत बडी सच्चाई है, इसे क्यो भूलते हो विनय, मै तो पैसेको काफी अहमियत देती हूँ। तुम्हे क्या मालूम मेरी ज़िन्दगी क्या है। पैसोका महत्त्व, मुझसे पूछो। खैर छोडो इन बातोको जी चाहे कलसे रिहर्सलमे आना, जी चाहे मत आना।

विनय : सब झूठा है—कला, साहित्य, नाटक। ज़िन्दगीकी असलियत है यह पचासी रुपये, जो मुझे महीने-भर खटनेके बाद मिलते है। कोई तो नही बरदाश्त कर पाता मुझे। दफ्तरमे साथियोका व्यंग्य चलता है, क्योकि मै कीमती कपडे पहनकर उस पचीस रुपये-वाली कुरसीपर बैठता हूँ। मि० फिलिपका व्यग्य अलग चलता है, क्योकि मै उनके साथ-साथ क्लबका मेम्बर हूँ। बडे बाबूका व्यग्य भी कितना कटु होता है, क्योकि उन्होने अपनी सारी ज़िन्दगी खटाकर जो असलियत पायी है वह है फाइल्स, नोटस्, ड्राफ्ट्स।

[दरवाज़ेपर दस्तक, फिर आवाज़]

बड़े बाबू : अरे मि० विनयकुमार, मि० विनयकुमार !

विनय : कौन है ?

बड़े बाबू : अरे भाई मै हूँ, मुन्शी अम्बिकाप्रसाद। आओ भी नीचे, अमाँ जल्दी करो !

विनय . क्या बात है बडे बाबू, इतनी रात गये आप। और यहाँ ?

बड़े बाबू : बात दरअसल यह है विनय बाबू, कि अभी-अभी फिलिप साहब मेरे घर आये थे। मुझे यह दो खत तुम्हारे

नाम दे गये है। एकमे तो यह लिखा है कि कलसे आपकी ड्यूटी लीव दी जाती है। जबतक ड्रामा समाप्त न हो जाये तबतकके लिए आफिससे छुट्टी है।

विनय : हूँ, तो इसके माने यह हुए कि मै नाटक करनेकी नौकरी करूँ। मै ऐसा नही करूँगा। मै सिर्फ पेपर मिल्समें नौकरी करना चाहता हूँ, मुझसे नाटक और नाटकके रिहर्सलसे कोई मतलब नही है।

बड़े बाबू : लेकिन यह साहबका हुक्म है, इसे मानना ही पडेगा।

विनय · लेकिन साहबको क्या पडी है, मै जिस कामके लिए नौकर रखा गया हूँ वही करूँगा।

बड़े बाबू · सोच-समझ लो। फिलिप साहबका गुस्सा बडा तेज होता है।

विनय · तो तेजीसे क्या हुआ। क्या वह मुझे नौकरीसे निकाल देगे? ऐसी धमकियाँ मैने बहुत सुनी है बडे बाबू, मुझे नाटकमे पार्ट नही करना है। मुझे सिर्फ पेटके लिए कमाना है। सिर्फ · ·

बड़े बाबू . तो फिर सुनिए, अगर आप ड्रामेमे पार्ट नही करेगे तो यह लीजिए, यह आपका डिसमिसल लेटर है। आपके खिलाफ जुर्म यह लगाया गया है कि आप ड्रामे और साहित्यमे दिलचस्पी रखते है इसलिए आपकी वजहसे ऑफिसके काममे बडी रुकावटे पडती है।

विनय क्या मजाक है बडे बाबू, जिस ड्रामेमे भाग लेनेके कारण मुझे नौकरीसे अलग किया जा रहा है उसी ड्रामेमे भाग लेनेके लिए मुझे ड्यूटी लीव भी दी जा रही है।

जरा आप ही सोचिए बडे बाबू, इस तरहकी बातमे कोई तथ्य है ?

बड़े बाबू : मेरी बात मानिए मिस्टर विनय, आजकल नौकरी बडी मुश्किलसे मिलती है। लगी हुई रोजी कोई यूँ ही नही छोड देता। जरा-सी बात है, साहबका मन रख लीजिए।

विनय : इसका मतलब साहबका मन मेरे मनसे बडा है ? वह साहब कहलाते है इसलिए जो चाहे वह करे, मेरी कोई आवाज नही, मेरी कोई हस्ती नही, यह नही हो सकता बडे बाबू, यह नही हो सकता। अपने मनका मालिक मै हूँ, मुझसे यह मत छीनिए।

बड़े बाबू : हर नौकर सबसे पहले अपने मनकी ही बाजी हारता है। बाबू विनयकुमार बी० ए० एल-एल० बी०, तुम अभी नये हो इसलिए तुम्हें यह खलता है, लेकिन सच मानो हमे यह बिलकुल नही खलता। मेरा मन न तो इनके हुक्मोसे बदलता है और न बनता है।

विनय : बदलने और बननेका सवाल अगर इतना सस्ता है तो मेरे पास क्या बचता है ! लाइए बडे बाबू, मै अपना इस्तीफा दे दूँ। कही ऐसा न हो कि मै महज़ एक जीता-जागता कीड़ा ही रह जाऊँ।

सुरेन्द्र क्या बात है विनय भाई, इस रातको भी तुम क्या बहस कर रहे हो ? अरे कौन, बडे बाबू ! तो क्या साहबने आपकी भी बात नही मानी ?

बड़े बाबू : हूँ, मेरी बात वह क्यो मानेगा। उसका दिमाग तो वह छोकरी भरती रहती है। क्या नाम है उसका····

सुरेन्द्र : शकुन, आपका मतलब मिस शकुनसे है ?

बड़े बाबू : हाँ-हाँ, मेरा मतलब उसीसे है। ऐसी आग लगायी है कि बाप-रे-बाप, जानते हो सुरेन्द्र, आज फिलिप साहबने खुलके कह दिया····

सुरेन्द्र : क्या कह दिया।

बड़े बाबू · यही कि तुम लोगोंने शकुनका इन्सल्ट कर दिया है, और यह इन्सल्ट हमें बिलकुल पसन्द नहीं है।

सुरेन्द्र : तब आपने क्या कहा ?

बड़े बाबू : मैंने भी कसके कह दिया-देखिए साहब, यह रुपयेको लेकर आपको नाराज़ नहीं होना चाहिए। आपकी खातिर तो हम अपनी जान तक दे सकते हैं लेकिन यह शकुनके लिए ·

सुरेन्द्र हम कुछ नहीं कर सकते। और इतना कहकर आपने दो रुपये उनकी मेजपर रख दिये ?

बड़े बाबू : क्या करता। भाई, नदीमें रहकर मगरसे बैर कैसे करता। मैंने सोचा चलो दो वक्त बच्चे बगैर तरकारीके ही रह जायेंगे। अन्नदाताके चरणोंपर इतना ही सही।

सुरेन्द्र इसके माने कल हमें भी दो रुपये देने हैं ? वाह बड़े बाबू, आपसे यह नहीं कहते बना कि साहब, आपको मिस शकुनकी बेइज्जती तो बहुत खल गयी लेकिन उस दिन जब हम सब एक साथ सुरेशके लिए चन्दा लेने गये थे तो साहब बगले झाँकने लगे थे !

बड़े बाबू : जाने भी दो, यह बडे लोग है, जो चाहे करें! हाँ एक मुसीबत लगी रह गयी।··

सुरेन्द्र : वह क्या ?

बड़े बाबू . यही विनयकी फजीहत। साहबने कहा देखिए बडे बाबू, मै कुछ नही जानता, रोठ साहबके इस नाटकमे अगर विनयने अभिनय नही किया तो फिर उनके लिए इस पेपर मिलमे जगह भी नही है।

विनय : नौकरी! जगह! बडे बाबू, यह सारीकी-सारी व्यवस्था, यह परम्परा, यह रोग ·· लगता हमे तोड ही डालेगा। लेक्नि मै नही टूटूँगा, मै हरगिज नही टूटूँगा!!

बड़े बाबू : लेकिन फिर जिन्दगी कैसे चलेगी फाकाकशी, उपवास, बीमारी, रोग, निराशा और हताश, इन स्थितियोसे बचने का कोई भी चारा नही है। टूटकर भी यदि आदमीमें कुछ भी शेष रह जाये तो बडी गनीमत है बडे बाबू, विनयकुमार बी० ए० एल-एल० बी०!

विनय · गनीमत! टूटनेके बाद जो कुछ भी आदमीके पास बच रहता है वह एक जिन्दा मजाक है। आप ही तो कह रहे थे, नौकरी हजार नियामत है, आपने ही कहा था—सपने देखनेसे एक क्लर्ककी जिन्दगीमे बेचैनी पैदा होती है। आपने ही कहा था—यह नाटक तमाशा छोडो।·· फिर क्यों, मुझे सिर्फ क्लर्क क्यो नही रहने देते ?

बड़े बाबू : इसलिए कि आज यह नाटक तुम्हारी नौकरीको शर्त बन गयी है विनय!····

विनय : यह भी कितना बडा व्यंग्य है ! जब मै नाटकमे पार्ट करनेके लिए उत्सुक था तब नौकरी उसमे रुकावट थी, आज नाटकमे भाग नही लेना चाहता तो भी नौकरी उसमे रुकावट पैदा कर रही है !

सुरेन्द्र : यही होता है मेरे रबरके बबुए ! ज़िन्दगी इन्ही मज़ाकोमे झेली जाती है । इनसे रूठकर जाओगे कहाँ ?

विनय : नही, मुझसे यह नही होगा । आप मिस्टर फिलिपसे कह दीजिए । अगर वह आदमीको इतना गिरा हुआ समझते है तो फिर मुझे नौकरीकी भी जरूरत नही है ।

बड़े बाबू : मरजी तुम्हारी। सोच लो ? इस पेपर मिलकी नौकरीमे सेठकी मरज़ी, साहबके इशारे, फाइलका लेखा-जोखा, यही सबसे बडा सत्य है । अगर तुम इसे सच नही मानते तो लो यह डिसमिसलका आर्डर । और·

सुरेन्द्र : एक बार फिर सोच लो विनय, मै फिर कहता हूँ ज़िन्दगी-मे इन जोशोसे काम नही चलेगा । असलियत है साहबकी मरज़ी, सेठकी खुशी, नौकरीकी सलामती । और हम, तुम उनके इशारोपर नाचनेवाले रबरके बबुए है, बबुए !

रबर का बबुआ चार आना
ले लो बाबू चार आना
बिका आदमी चार आना
ले लो बाबू चार आना

खिलौनेवाला ही ठीक कहता है विनय, चार आनेके बबुएकी औकात क्या ? संगमरमरकी ठण्डी मूर्तियोके सामने सिर झुकाना ही पडेगा, नही तो भूखा परिवार, रोते बच्चे, भूख, खुदकुशी····

विनय : भूख, खुदकुशी, नौकरी, यह सब छोडो सुरेन्द्र, मै हूँ ··· विनयकुमार बी० ए० एल-एल० बी० । ··नौकरी न करके मै कुछ और कर सकता हूँ, कुछ और लड सकता हूँ ।

सुरेन्द्र : यह सब बकवास है । तुम किस-किससे लडोगे । सब कुछ तो अधूरा है । अब भी समय है, बडे बाबू दूर नही गये है विनय, आवाज दो, डिसमिसलका खत वापस कर दो । नाटक करनेवाला खत ले लो । जाओ, जाओ, जाओ !

[बैक ग्राउण्डमें रबरका बबुआ चार आना । सस्ता मद्दा चार आना । बिका आदमी चार आना । ले लो बाबू चार आना । चार आना । चार आना । ह, ह, ह, ह,]

विनय : बडे बाबू । बडे बाबू, ठहरिए बडे बाबू । ठहरिए बडे बाबू !

बड़े बाबू : अब क्या है मिस्टर विनयकुमार बी०ए० एल-एल०बी० ।

विनय : क्या होगा, बडे बाबू । यह लीजिए····डिसमिसलका खत वापस ले लीजिए । दीजिए, मुझे ड्यूटी लीववाला आदेश दीजिए । मै नाटकमे अभिनय करूँगा । कितना बडा नाटक है ? चलने दीजिए । बडे बाबू, नाटकसे छुट्टी मिलना मुश्किल है । यह तो चलता रहेगा ।

बड़े बाबू : हिम्मत मत हारो साहबजादे, इस घुटनके पीछे नयी रोशनी तिलमिला रही है । चलो, चलो ।

सुरेन्द्र : विनय !

विनय : सुरेन्द्र, मैंने डिसमिसलका कागज़ वापस कर दिया। क्योंकि सब झूठ है, बिलकुल झूठ। असलियत है नौकरी। असलियत है पचासी रुपया। लाइए मैं नाटकमें पार्ट करूँगा। कितना बडा नाटक है? कितना भयकर पार्ट है? समझौते, ज़िन्दगी, उम्मीद, लडाई, सघर्ष और यह गूँज।....

रबरका बबुआ चार आना
ले लो बाबू चार आना
टूटा - फूटा चार आना
सस्ता महा चार आना
ह, ह, ह, ह, ह, ह।

परतोंकी आवाज़

पात्र-पात्रा

मि० जैक्सन

डॉ० मदन

रोहित

दारोग़ा

मि० किटी

रश्मि

अरुना

[एक दर्द-भरी आवाजसे रह-रहकर पूरा जैक्सन-विला गूँज जाता है। आवाज़की गूँजसे यह साफ पता चलता है कि जैसे मकानकी नीवँमे-से ज़मीनके नीचेसे आवाज़ गूँज-गूँजकर आ रही है।

दूरसे महानगरकी हलचल, जाग संगीत, आधुनिकतम नगरकी सम्पूर्ण सामूहिकताको व्यंजित करनेवाली खोखली व्यंग्यात्मक ध्वनियाँ, हँसी, शोर ओ गुल, संघर्ष, दौड़-धूप, चहल-पहल, सूखी हँसियाँ]

गूँजती हुई आवाज़ .

उँह, उँह, उँह, कबतक भटकूँ ?··ओ, अरे-ओ, मै कबतक भटकूँ! सुनो, अरे ओ सुनो, कोई तो सुनोऽऽऽ। कोई नही सुनता—जैसे सब मुरदे है—महज़ मुरदे। आदमी ही नही बसते जैसे इस बस्तीमे। जिन्दा दफन हूँ मै। ओ, अरे-ओ बस्तीवालो, मुझे भूलो मत, मुझे भूलो मत ·ओ· अरे ओ!

[आवाज धीरे-धीरे विलीन हो जाती है]

रश्मि : [आतंकित स्वरमे] सुनते हो, सुनते हो रोहित, आज फिर यह आवाज गूँज रही है। जाने कैसी आवाज़ है? मेरा दिल धडक जाता है रोहित!

रोहित : [परेशान-सा] लेकिन यह आवाज किसकी है? आठ दिनोसे पुलिसवाले भी परेशान है। कौन है यह आवाज़?

रश्मि : मै कहती हूँ यह घर छोड दो रोहित, छोड दो। हर आध घण्टेपर यह आवाज यहाँ इसी तरह उभरती है। मै चारो ओर ढूँढती हूँ, कही कोई नही दिखलाई देता। लेकिन, लेकिन यह आवाज

रोहित : मैं इसका पता लगाऊँगा रश्मि, मै पता लगाऊँगा। यह आवाज किसी भूत-प्रेतकी नही है। इस आवाजमे मुझे किसीका दर्द उभरा हुआ सुनाई देता है। कौन है यह जिन्दा आदमी, कौन है ?

[सहसा बाहरसे दस्तकोंकी आवाज़ आती है और रश्मि चीखकर रोहितसे लिपट जाती है। दस्तके लगातार आती रहती है।]

रश्मि : कोई आ रहा है। कोई आ रहा है। बिलकुल मेरे दर-वाजेपर कोई दस्तके दे रहा है।

रोहित : देने दो। इस आधी रातको यहाँ कौन आयेगा। यह तुम्हारा वहम है बिलकुल वहम।

[सहसा फिर दस्तकोंकी आवाज़ आती हैं]

रश्मि : देखो-देखो रोहित, वही आवाज, वही दस्तके, वह जो पडोसमे मिस किटी रहती है न ? वह आज दिनमे आयी थी। वही, वही न हो ? ··

रोहित [कुछ तेज़ स्वरमें] कौन है ? मुँहसे बोलता क्यो नही ?····

वही नीचेसे आती आवाज़ :

"कोई नही सुनता ! कोई नही सुनता ! कबतक भटकूँ ? यह गन्दी नालियोका पानी ! यह रेगते हुए लोग ? तहखानोमे कैद हस्तियाँ ? सूखी हँसियाँ, " रूखी जिन्दगियाँ' 'यह पेचदार गलियाँ और अँधेरी पुतलियाँ। ओ, अरे ओ, कोई तो सुनो ! कोई नही सुनता ! 'जैसे सब मुरदे है,' 'महज मुरदे।"

[एक सेकेण्डका सन्नाटा और फिर दस्तकोकी आवाज़]

रोहित : कौन है ? यह कौन दस्तके दे रहा है ?

रश्मि : कितनी भयावनी रात है रोहित, दिनमे कोई आवाज नही सुनाई देती, ' रात होते ही यह आवाजे क्यो सुनाई देने लगती है ? यह देखो, फिर कोई दस्तके दे रहा है ?' 'कौन हो सकता है ?

[फिर दस्तकोकी आवाज़]

मि० किटी : [बाहरसे ही बोलती है] खोलो, दरवाजा खोलो मि० रोहित,' 'मै हूँ मि० किटी, दरवाज़ा खोलो।

[रोहित दरवाज़ा खोलता है। मि० किटी छड़ी टेकती हुई प्रवेश करती हैं]

मि० किटी : आज फिर पूरी इमारतकी रोशनी गुल है। जाने क्या हुआ है इस शहरके पावर हाउसको ? पिछले आठ दिनोसे रोशनी ही गुल हो जाती है। और इस रोशनी-के साथ-साथ यह आवाज। बिलकुल मि० जैक्सनकी-सी आवाज़ ! वैसी ही जैसी वह अँधेरी रातोमे कैन्सरकी

पेनसे बेचैन होकर आवाजे लगाया करता था। जब-जब उसका नर्वस ब्रेक डाउन हो जाता था, वह इसी तरह चिल्लाता था। यही आवाज़ होती थी पागलो-जैसी। जैसे अन्दरसे टूटे हुए आदमीकी कँपती-भटकती आवाज़।

वही जैक्सनको आवाज

रोहित . जैक्सन ? यह जैक्सन कौन थे मिस किटी ?

मि० किटी . तुम्हे नही मालूम ? [कुछ सोचकर] ओह, तुम तो अभी परसो आये हो इस मकानमे ! मि० जैक्सनका ही यह बँगला है। तुमको तो यह मकानका हिस्सा सरकारने दिलाया है, इसलिए तुम क्या जानो मि० जैक्सनको। पिछले आठ दिनोसे पता नही है। सुना है सरकारने यह ऐलान करके कि उसका कोई वारिस नही है मकान अपने कब्जेमे ले लेना चाहा है। क्या मज़ाक है ? जिसका कोई वारिस नही होता उसका वारिस सरकार हो जाती है [हँसकर] लेकिन लावारिसोके लिए उसके दिलमे कोई दर्द नही होता ! हुँ, मेरा यकीन है कि मि० जैक्सन अभी मर नही सकते, मर नही सकते, हरगिज़ नही मर सकते !

रोहित : तो फिर सरकारने यह क्यो समझ लिया है मिस किटी ?

मि० किटी . इसलिए कि लोग मुझे इस घरसे निकालना चाहते है। पिछले आठ दिनोसे जैक्सनका कोई पता नही है। कुछ कहते है आदिवासियोकी बस्तीमे चला गया, कुछ कहते है कैन्सर दर्दसे परेशान होकर उसने अपनी आत्म-हत्या कर ली है। लेकिन यह सब गलत है। मै जैक्सनको अच्छी तरह जानती हूँ। वह यह सब कुछ नही कर सकता।

रोहित : तो फिर यह आवाज़ किसकी है मिस किटी ? यह दर्द-भरी आवाज़ जो अपनी गूँजसे मनके अन्तिम तहोंको गुँजा देती है··· 'परतोंको बेधती हुई चली जाती है ?

[कुछ देर ख़ामोश रहकर] सुनिए, सुनिए, यह धीमी-धीमी आवाज । लगता है जैसे वह इस मकानकी नीवँसे बोल रहा हो। जैसे इसकी नीवँके साथ-साथ यह आवाज भी दफन तो कर दी गयी है, लेकिन उसको बेधती यह यहाँतक आ ही जाती है। सुनिए, सुनिए।

[वही दर्द-भरी आवाज़]

"अहँ, अहँ। मै एक भटकती हुई आवाज़ हूँ, सुनो, अरे ओ सुनोऽऽऽ ! कोई नही सुनता ? कोई तो सुनो ? मैं जिन्दा दफन हूँ। यह नालियोका पानी, यह सडाँध, यह गलीज, यह घुटन ! अहँ,' अहँ, 'अरे ओ सुनो, सुनो, कोई तो सुनोऽऽऽ !

मि०किटी : [कुछ सोचकर] इसीलिए तो मै कहती हूँ मि० रोहित, मि० जैक्सन मरे नही है। मौत इतनी आसान चीज़ नही होती। उसे ख़ुदकुशी करनी होती तो आजसे चालीस साल पहले करता जब—जब किसीने उसे ठोकर दी थी—ऐसी ठोकर कि उसके लिए ज़िन्दगीका मतलब ही दूसरा हो गया था।

रश्मि . ठोकर मिस किटी, कैसी ठोकर ? ·

मि० किटी : [पुरानी स्मृतिकी मूडमें] बात आजसे चालीस वर्ष पुरानी है—चालीस वर्ष। मि० जैक्सनको मैंने पहली बार एक शामको एक गिरिजाघरमे

देखा था। प्रार्थना हो रही थी। समूचे गिरिजा-घरमे एक अजीब पवित्रताका वातावरण छाया था। क्रिसमसका दिन था। मेरी बगलमे ही जैक्सन आकर बैठ गया था। अजीब उलझा-उलझा-सा व्यक्तित्व, बिखरे बाल, एक अजीब खोयी-खोयी-सी मुद्रा। सब प्रार्थनाएँ कर रहे थे, लेकिन वह खामोश था—बिलकुल खामोश। उसकी खामोशीमे भी जाने कैसा जादू था। मै बार-बार उसकी तरफ देखती। सहसा उसने नजर उठायी और जाने क्यो मेरी तरफ घूर-घूरकर देखने लगा। और जब शामकी प्रार्थना समाप्त हो गयी तो वह चुपचाप बाहर जाकर खडा हो गया। और कि तबसे मै उसे रोज़ देखती। रोज शामकी प्रार्थना समाप्त होती। गिरिजाघरका गजर बजने लगता और जब मै बाहर निकलती आर्यर्डमे आकर खडी होती तो जैक्सन भी आकर वही खडा हो जाता। उसी हालतमे परेशान, बोझिल, खामोश, खोया-खोया-सा। धीरे-धीरे जान-पहचान हुई। जैककी लापरवाहियोमे उसकी गहरी उदास आँखोमे जाने कैसी कोशिश थी जो मुझे बलात् बाँधे ले रही थी। एक दिन उसने कहा ...

[फ्लैश बैक]

मि० जैक्सन : देखती हो किटी, यह फूलोसे भरा लान और इसमे यह साँझकी रँग-बिरगी धूप, जाने क्यो इसे

देखकर मुझे घुटन मालूम होती है। लगता है यह सब मेरी साँसे रोके है।

मि० किटी : लेकिन क्यो ? इन फूलोमे तो कही भी घुटन नही दिखती ! कही भी किसी तरहका दोष नही दिखता ?

मि० जैक्सन जाने क्या बात है किटो, इतनी सुन्दरता एक साथ मै सहन नही कर पाता। लगता है जैसे मै—जैसे मै ·

मि० किटी : तुम्हे जो कुछ भी लगता है जैक, वह तुम्हारे भीतरकी घुटनसे पनपता है। चलो भी, इन रंगीन शामोमे यह मनहूसियत भली नही लगती।

मि० जैक्सन : मनहूसियत ! पता नही यह मेरे अन्दर है, या बाहर है ! हर सुन्दरको जब मै किसी असुन्दरके साथ देखता हूँ तो लगता है जैसे मै नही मेरी सारी जिन्दगी ही बोझ बन गयी है—बोझ—महज बोझ !

मि० किटी लेकिन इतनी बोझिल जिन्दगीको भी हँसकर गुजारा जा सकता है जैक ! चलो, मेरे साथ चलो।

मि० जैक्सन : मै यहाँ इस गिरिजाघरमे एक शान्ति ढूँढनेके लिए आता हूँ। किसीने मुझसे कहा है कि इसकी छायामे सुकून मिलता है। लेकिन किटी गजरकी हर आवाज मुझे बेचैन कर देती है। मेरे दिलकी परतें खुलने लगती है। लगता है मै

घुट-घुटकर मर जाऊँगा। ये फूल, यह रग-बिरंगे फूल, ये माहताबी, सुनहले, सुर्मई फूल—यह सब हजार-हजार आँखोसे मुझे घूरने लगते है।

मि० किटी : लेकिन जैक, तुम जो इतना सब सोचते हो, इतनी सारी बाते गुनते हो, उससे मुझे भी घुटन होने लगती है। जैक, मुझे यह घुटन नही, जिन्दगी चाहिए—जिन्दगी।

मि० जैक्सन : मै तुमसे तुम्हारी जिन्दगी छीनना नही चाहता किटी, मै तुमसे तुम्हारी हँसी भी नही छीनना चाहता। लेकिन—लेकिन मै तुमसे कैसे कहूँ कि जब मै तुम्हे देखता हूँ, तुम्हारी इन बडी-बडी आँखोमे उदास मछलियोकी प्यास देखता हूँ तो लगता है तुम्हारी इन पुतलियोमे बादलोका एक तूफान चला आ रहा है। लगता है तुम्हारी पुतलियोके घने बादल सारा उजाला, सारी रोशनी पी जाना चाहते है। वह सुनो, यह आवाजे यह दुनियाकी आवाजेंऽऽऽ।

[सुपर इम्पोज़िशन]

पहली आवाज़ : दुनियामे क्या नही खरीदा जाता मियाँ, चलो, यह हुस्न, यह इश्क सब फरेब है।

दूसरी आवाज़ : ला यह गुलाबका फूल मुझे दे दे। देख तो मेरे जूडेमे यह भला लगता है?

तीसरी आवाज़ : कसम खुदाकी। गुलाब हुस्नपर ही खिलता है। उधर देख—उधर।

चौथी आवाज़ — *उनके देखेसे जो आ जाती है मुँह पै रौनक,*
वह समझते है कि बीमारका हाल अच्छा है ।

पाँचवी आवाज़ — *इधर शर्मे हायल इधर खौफ़े माना,*
न वह देखते है न हम देखते हैं ।

छठी आवाज़ — हमे क्या ठोकर मारेगा, मै ज़मानेको ठुकराके बढा हूँ ।

[धीरे- धीरे यह कथोपकथन नेपथ्यमें चलता रहता है । इसके ऊपर किटीका कथन सुपर इम्पोज़ होगा]

मि० किटी : तुमको तो रह-रहकर जाने क्या हो जाता है । इन आवाजोको क्यो सुनते हो जैक ! चलो, चलो । और आगे चलो । यहाँसे बिलकुल दूर, जहाँ यह आवाज़े बिलकुल ही न सुनाई पडे ।

[गजरकी ध्वनियोंके साथ फ़ेड आउट]

[फ्लैश बैक समाप्त]

मि० किटी : और वह उठता, मेरे साथ चला जाता । लेकिन उसकी उदासी वैसी ही रहती । उसकी खामोशी भी निहायत ही गमगीन, निहायत डूबी हुई ! मै पूछती क्या बात है जो इस कदर परेशान रहते हो, लेकिन वह खामोश रह जाता । मै कहती—पूछती रहती, लेकिन वह कुछ नही बोलता । मैने चाहा कि मै उसका साथ छोड दूँ,

उससे दूर चली जाऊँ, लेकिन वह जैसे मेरी ज़िन्दगीकी एक बहुत बडी मजबूरी बन गया था! एक रात वह मेरे सोनेके कमरेमे आया—शराबके नशेमे चूर, मदहोश। लडखडाते कदमोमे वह बार-बार जैसे गिरा जा रहा था।

[फ्लैश बैक]

मि० जैक्सन : तुम रोज मुझसे पूछती हो न कि मुझे क्या हो गया है। मै आज तुम्हे बताने आया हूँ।

मि० किटी : जैक, जैक, तुम्हे क्या हो गया है? तुम आज इस हालतमे यहाँ क्यो आये हो?

मि० जैक्सन महज इसलिए कि तुम मुझसे नफरत करने लगो। और—और मै तुमसे दूर चला जाऊँ। यह शराब, यह मदहोशी, यह खुमार····

मि० किटी . लेकिन क्यो? यह सब क्यो है? तुम मुझसे दूर क्यो जाना चाहते हो? तुम मुझसे जान-बूझकर घृणा क्यो करना चाहते हो।

मि० जैक्सन : ताकि तुम्हारे सौन्दर्यकी, तुम्हारे रूपकी इन लपटोसे मुझे छुटकारा मिल जाये और मै जिन्दा रह सकूँ। इतना सौन्दर्य मै नही सँभाल सकता। लगता है इस रूपके सामने मै घुट-घुटकर मर जाऊँगा!····

मि० किटी : लेकिन क्यो जैक, आखिर क्यो?

मि० जैक्सन : क्योकि मेरे चारो तरफ असुन्दर-ही-असुन्दर है किटी, चारो तरफ गन्दगी-ही-गन्दगी, बिकती हुई

जिन्दगियाँ, भ्रष्ट सौन्दर्य, खनकती हुई आवाज़े, मुरदा हँसी, खामोश दीवारे, मजबूरियाँ, मजबूरियोमे घुटती हुई साँसे है ···

मि० किटी · [व्यंग्यमें] और शराब पीनेसे, उन गन्दगियोको ओढ लेनेसे जैसे तुम पाक हो जाते हो, क्यो ?

मि० जैक्सन : पता नही क्या हो जाता है मुझे। पीनेके बाद लगता है वह तसवीरे····वह गन्दी अपाहिज तसवीरे जो अभी-अभी मेरे सामने उभरकर आयी थी धुँधली पड गयी है। अब बिना किसी भयके मै तुम्हे देख सकता हूँ, छू सकता हूँ ·तुमसे बातें कर सकता हूँ।

मि० किटी लेकिन यह चारो ओरकी ज़िन्दगी तुमसे इतनी लिपटी हुई क्यो रहती है जैक ? क्यो नही तुम होशमे उसे दूर फेक देते ? ·· क्यो नही तुम उससे दामन छुडाकर मेरे पास रहते· मेरे पास ··

मि० जैक्सन [व्यग्यकी हँसी हँसते हुए] तुम्हारे पास हूँ ··· हूँ हूँ—मै किसीके पास नही रह सकता किटी, जाने क्यो मुझे अपनेसे ही छुटकारा नही मिल पाता। किटी, मेरी तरफ देखो, मेरी आँखोमे देखो किटी,·· तुम्हारा जिस्म जो मेरी पुतलियोमे है जाने क्यो इसमे तुम्हारी सुन्दरता बिलकुल बर्फ-सी ठण्डी लगती है। लेकिन यह है इसलिए क्योकि मै अपने होशमे नही हूँ

मि० किटी : तो फिर इस बेहोशीकी हालतको तुम ओढ लेना चाहते हो ? अपनेसे इस तरह भागकर तुम आखिर करना क्या चाहते हो ?

मि० जैक्सन : खुदकुशी। मै जीना नही चाहता—बिलकुल जीना नही चाहता। जिन्दगीने अपने सायेसे मुझे दूर फेक दिया है। मै भी जिन्दगीको दूर फेक देना चाहता हूँ।····लेकिन मै फेंक नही पाता। बिलकुल फेक नही पाता।

मि० किटी : तुम्हारे इस पागलपनने मुझे भी पागल बना दिया है। तुम बार-बार कहते हो

सहसा फिर वही नीवँमें दफ़न आवाज़ :

"आह,····आह,····आ—आ—आह। कबतक भटकूँ। ओ,····अरे-ओ, सुनते हो! सुनो,····सुनो। कोई तो सुनोऽऽऽ। कोई नही सुनता··· मै जिन्दा दफन हूँ। आह, · आह····आह!

रश्मि : फिर वही आवाज़ है। लगता है जैसे कोई प्रेत बोल रहा हो।

रोहित : मुझे फोन करना पडेगा मि०किटी! इस मकानमे कोई तहखाना है क्या ?

मि० किटी : नही तो। यह आवाज तहखानेकी नही है। यह आवाज़—यह आवाज मै पहचानती हूँ! यह जैक्सनकी आवाज है। उसी जैक्सनकी। कैन्सरके दर्दसे परेशान होकर वह ऐसा ही कराहा करता था ठीक ऐसा ही।

रोहित : फिर उसके गायब हो जानेके बाद यह आवाज़ कहाँसे आ रही है ?

रश्मि : लगता है वह यही कही है····यही कही आस-पास!···

मि०किटी : आज भी उसकी आवाजमे वैसा ही दर्द है, वैसी ही घुटन, वैसी ही ऊब, वैसी ही परेशानी, बदहवासी जैसी उस दिन थी जिस दिन वह नया गुनाह करके आया था।

रश्मि : नया गुनाह ? क्या मतलब इस नये गुनाहसे ?

मि०किटी वह नया गुनाह भी एक दिलचस्प किस्सा है : उस दिन शामको जब जैक्सन मेरे पास आया तो उसकी आँखोमे आँसू थे। वह बेहद बेचैन था। और उसी परेशानीकी हालतमे बोला

[फ्लैश बैक]

मि० जैक्शन : हाँ, मै कह रहा था कि सौन्दर्यको देखकर मुझे एक घुटन-सी मालूम होती है। आज फिर मुझे एक घुटन-सी ही मालूम हो रही थी। लगता मै उसीके बीच घिरा एकदम सिरसे पैर तक जल रहा हूँ। इसीलिए मैने आज फिर थोडी-सी पी ली है। इस पीनेके बाद लगता है मै सब कुछ भूल गया हूँ। मेरे चारो ओरका वातावरण, सारी फिज़ा हलकी हो गयी है। अब मै साँस ले सकता हूँ।

मि० किटी : जैक, तुम आज फिर खूब पीकर आये हो। जबर-दस्ती बहाना बनाना चाहते हो। जैक, यह पीना बन्द क्यो नही कर देते।

मि० जैक्सन इसलिए कि ज़िन्दगी मुझपर भारी पड रही है किटी, मुझे कहीं सुकून नही मिल पाता। कहीं

आराम नही मिल पाता। मैं जब तुम्हारे साथ होता हूँ तो ज़िन्दगी भटकी हुई-सी मालूम पडती है। लगता है मैं किसी ज्वालामुखीके बीच ज़िन्दा सुलग रहा हूँ ···सारी फिज़ासे यह रेंगनेवालोके हँसी, कहकहे और व्यंग्य मुझे घेर लेते है। मेरा दम घुटने लगता है।

[सुपर इम्पोज़िशन]

[नेपथ्यसे धीरे-धीरे कुछ स्वर क्रमशः उभरकर नज़दीक आ जाते हैं]

पहली आवाज़ *तुरीशमे शराब रिन्दगी है,*
तलखिए हयात ज़िन्दगी है।

दूसरी आवाज़ : *यह दुनियावाले जीना क्या जानें,*
ये मरनेसे घबराते हैं।

तीसरी आवाज़ : *यहाँ हर चीज़ नीलाम होती है,*
सुनो,सुनो यहाँ हर चीज़ नीलाम होती है

चौथी आवाज़ : *यह हुस्न, यह इश्क़, यह दर्द, यह दवा, यह खुश्क हँसी, यह सब लोग···*

[समवेत स्वरमें एक व्यंग्यात्मक सूखी हँसी]

[फ्लैश बैक]

मि० जैक्सन : सुना, सुना तुमने किटी, आज वह सुनहली झील, वे काले पहाड, वह झोपडियोंकी बस्ती सबके-सब नीलाम हो गये हैं। सबकी कीमत लग गयी

है। वह जो जंगली बस्ती थी उसे बाहरवालोने साफ कर दिया है। ...वहाँ अब मशीने लगेंगी। नये आदमी ढाले जायेंगे। आदमी और ढाले जायेंगे [कुछ देर चुप रहकर]....सुनो, सुनो वह दूरसे आती हुई नीलामकी डुगडुगी सुनती हो ?

[दूरसे उठती हुई नीलामकी आवाज़]

नीलामकी आवाज़ : यह सुनहली झील, यह काली पहाडियाँ, यह झोपडियोका देश बहुत सस्ते जा रहे है, लीजिए, लीजिए—हज़ार रुपये; दो हज़ार, चार हज़ार; चालीस हज़ार, लीजिए, लीजिए, लीजिए। एक...., दो.. 'लीजिए, लीजिए तीन।

मि० जैक्शन : सुना ? सुना तुमने किटी ? यह आवाजे ..

मि० किटी : तुम पागल तो नही हो गये हो जैक! उन बस्तियो-मे तुम्हारा क्या धरा है... तुम क्यो परेशान होते हो ? चलो, भूल जाओ इस सबको ।

मि० जैक्सन : भूल जाऊँ! किटी, कैसे भूलूँ। मेरी माँ उसी बस्तीकी थी। मैने बचपन उसी बस्तीमे बिताया है। उसी असुन्दरके बीच मैं जिया हूँ, ज़िन्दा रहा हूँ। लेकिन आज—आज वे हमसे दूर है—बहुत दूर।—याद आता है तो लगता है सब सपना था—महज़ सपना !

[फिर वही नीलामकी आवाज़ और नगाड़ेकी चोट]

मि० किटी : तो तुम्हे उन जंगलियोसे ज्यादा प्यार है ?····
उनको तुम ज्यादा पसन्द करते हो ?

मि० जैक्सन : नही किटी, तुम मुझे गलत मत समझो····मुझे अपने बचपनकी जब याद आती है तो लगता है वह जिन्दगी ज्यादा अच्छी थी—बहुत ज्यादा अच्छी। मेरी माँ विधवा थी। मेरे पिता मेरे जन्म लेनेके पहले ही मर चुके थे।· गाँववाले माँको वनिता दीदी कहते थे।····मेरे पिता एक सम्भ्रान्त ईसाई थे।· प्रभु ईशूमे उनकी अटूट श्रद्धा थी।· · माँ गाँवकी स्त्रियोमे सेवाका काम करती थी। · पिताजी दवा बाँटते थे। सुनहली झीलके सामने मेरा घर था। वह फूलोसे भरा रहता। सुन्दर सपने थे—तितलियोके पीछे-पीछे दौडनेवाले रगीन सपने! उन्हीमे मेरी एक बचपनकी साथी थी अरुना। वह रोज आती थी मेरे घर। हम दोनो उन्ही तितलियोके साथ दौडते-दौडते उमी सुनहली झीलके किनारे आ जाते थे। और एक रोज · ·

[फ़्लैश बैक न० २]

अरुना : नही नही नही जैक, नही····नही· ··
नही ऽऽऽऽ।

मि० जैक्सन : नही अरुना, आज मै तेरे जूडेमे यह फूल लगा ही दूँगा।

अरुना : नही जैक, गाँववाले मुझे मार डालेगे।

" इस सुनहली झीलमे न जाने कितनोने
इसी कारण डूबकर अपनी जाने दी है
जैक,....नही' नही....नही

मि० जैक्सन : क्यो नही ? मै इस फूलके साथ तुम्हे
देखना चाहता हूँ। चाहता हूँ तुम्हारी
इस अमोल सुन्दरताको एक दम तुम्हारे
पास बैठकर देखूँ। ओठोसे लगाकर इसे
पी लूँ। अरुन, यह फूल....

अरुना . तुम जानते नही जैक, हमारी जातिमे
जूडेमे फूल सिर्फ दो दिन लगाये जाते है
एक तो विवाहके दिन और एक दिन जब
सोहागिन मरती है.. जानते हो दोनो
दिन जूडेमे पति ही फूल लगाता है।' '
एक फूल ज़िन्दगीका और दूसरा मौतका।

मि० जैक्सन : तो क्या हुआ—जब तू मरेगी तो मै फिर
यह फूल लगा दूँगा।

अरुना : तुम नही मानोगे जैक ! लो लगा दो '

मि० जैक्सन : लेकिन तुम उदास क्यो हो गयी ?
खामोश क्यो हो अरुना,' 'अरुना ?

अरुना : कुछ नही जैक, कुछ नही। लो लगा दो
यह फूल।

मि० जैक्सन . इस रूपपर यह कपूरी रंगका गुलाब—
लगता है सगमरमर खिल-खिलाकर हँस
पडा हो। लगता है ज़िन्दगी मुसकरानेके

पहले संजीदा हो गयी है, · लेकिन उसके ओठोकी चचलता उसके काबूमे नही रह गयी है ।

अरुना . लेकिन जैक, शायद तुम्हे नही मालूम है कि तुमने यह क्या किया है । मेरे हाथोपर तुमने जलते हुए अगारे रख दिये है । ऐसा नशतर चुभो दिया है कि मेरी आँखें आँसू भी उगल रही है और खून भी जैक ।· जैक, [सिसकियाँ भरती हुई] जैक ।····

मि० जैक्सन : मै नही जानता अरुना, मैने यह फूल क्यो लगा दिया हैं । मै नही जानता, बिलकुल नही जानता । तुम इसे निकाल दो अरुना, इसे निकालकर फेक दो । मै, मै निकालकर फेक देता हूँ ।

अरुना : नही, नही, नही [चीखकर रोते हुए] यह तुमने क्या किया जैक· वनदेवी नाराज हो जायेगी· ··इस फूलको मै लगाये रहूँगी इसे मुझसे कोई नही अलग कर सकता कोई नही कोई नही ।· ·

मि० जैक्सन : तो लो मै इसे मसलकर फेक देता हूँ । मै, मै खुद ही फेक देता हूँ ।

अरुना : नही, नही—नहीऽऽऽऽ जैक ! ऐसा मत करो जैक ? ऐसा मत करोऽऽऽ !

[फ्लैश बैक न० २ समाप्त]

मि० जैक्सन : और सुनती हो किटी, मैंने उसके जूडेसे फूल निकालकर फेक दिया, पैरो तले कुचल दिया। वह रो रही थी, लेकिन मैंने उसकी एक बात भी नही सुनी। वह रोती रही-रोती रही।··· मै उसे रोती छोडकर अपने घर वापस चला गया। ····फिर वह कई बार आयी लेकिन मै उससे नही मिला।··· माँने मिलनेको कहा, फिर भी मै नही मिला। मेरा अहम्—झूठा अहम् जो मुझसे बडा था। और एक दिनकी बात है ··ठीक आधी रातको मुझे लगा कि जैसे उस सुनहली झीलसे मुझे कोई बुला रहा है। अजीब दर्द-भरा स्वर था। मै विवश होकर उधर जाने लगा। उस अँधेरी सन्नाटी फिज़ामे रात जैसे मुझे बुला रही थी। लगता था जैसे सारा वातावरण काँप रहा हो। सारी पहाडियाँ जैसे एक साथ गा रही हो। मै देख रहा था—मेरे आगे-आगे अरुना चली जा रही है। मैने उसे बुलाया, लेकिन वह एक अजीब हँसी हँसती हुई पहाडियोकी चोटियोपर चढी चली जा रही थी। मैने उसे पकड लिया। सहसा उसकी घबरायी आँखोसे आँसू ढुलक गये। उसका अजीब रूप था किटी, खुले हुए बालोके बीच माँगमे उसने सिन्दूर लगा रखा था। जूडेमे वैसा ही सफेद गुलाब, माथेपर बिन्दिया, हाथोमे फूलोके कंगन। और जब मैने उसका हाथ पकडा तो उसकी साँसोकी गति तेज़ हो गयी। उसकी पलके झुक गयी। लगा

सदलके जिस्मपर चाँदनी अभी-अभी नाचकर सो गयी है। उसने कहा

[फ्लैश बैक नं० २]

अरुना : तुम आ गये जैक! लेकिन यह देखो—यह मेरे शरीरपर कोडे पड़े है। बापू नही माने। उन्होने पहले तो मुझे बहुत प्रताडित किया, फिर मुझे घरसे निकाल दिया। मै तुम्हारे पास गयी। तुम नही मिले—बिलकुल नही मिले!

मि० जैक्सन : लेकिन मै अब आ गया हूँ अरुना! अब—अब जब कभी भी तुम मुझे बुलाओगी मै आ जाऊँगा—हमेशा आ जाऊँगा!

अरुना : आ जाओगे न!, हमेशा आ जाओगे न? सच, जब-जब मै बुलाऊँगी तब-तब तुम आ जाओगे न?

मि० जैक्सन . हाँ मै आ जाऊँगा अरुना! [सहसा चौककर] लेकिन यह क्या अरुना, यह तुम्हारा जिस्म ठण्डा क्यो पड रहा है?····क्यो क्यो ठण्डा पड़ रहा है?

अरुना : आज मै वनदेवीके मन्दिरमे गयी थी। मैने प्रार्थना की—बड़ी प्रार्थना की लेकिन वनदेवी कुछ नही बोली। मैने प्रसाद माँगा तब भी कुछ नही बोली। किसीने इन धतूरेके फलोको चढ़ाया था।

मैंने वनदेवीसे उन फलोंको जबरदस्ती ले लिया। 'फिर,फिर मैंने श्रृंगार किया। ' ' देखते हो न '''देखते हो मेरा श्रृगार ? और फिर–फिर वनदेवीका प्रसाद मैं पी गयी। सच मानो जैक, मैं पी गयी !

मि० जैक्सन : वह क्यो अरुना ! तुमने जहर क्यो पी लिया ? क्यो—क्यो अरुना ?

अरुना : इसलिए कि मुझे इस सुनहली झीलमे जाना था। हमारे इस गाँवमे जिस भी क्वाँरी लडकीने मेरी तरह ब्याह रचाया है, वह इसी चोटीपर आकर झीलमे कूद गयी है। तुम मुझसे नाराज हो न ? फिर भी क्या ? मै तुमसे खुश हूँ जैक—बिलकुल खुश। [धीरे-धीरे आवाज़के साथ पगध्वनियाँ ऊपरकी ओर सुनाई देती है।]

मि० जैक्सन : अरुनाऽऽऽ ! अरुनाऽऽऽ ! अरुनाऽऽऽऽ !! [धीरे-धीरे अरुना और जैक्सन दोनोंकी ध्वनियाँ अरुनाके ऊपरसे झीलमे कूद जानेकी ध्वनिके साथ विलीन हो जाती हैं।]

[फ्लैश बैक नं० २ समाप्त]

मि० जैक्सन : और तबसे मैं सौन्दर्यसे डरने लगा हूँ। किटी, मुझे लगता है हर सुन्दर चीजमे एक छिपी हुई आग है जो जब दूसरोको नही जला पाती तो

खुदको जला लेती है। अब भी उन्ही पहाड़ियो-पर गूँजती हुई नीली झीलकी आवाजें मुझे बुलाती है। और मै जैसे जानेके लिए विवश हो जाता हूँ—बिलकुल विवश।

मि० किटी : लेकिन उस बस्तीको छोडे हुए तो तुम्हे बरसो हो गये जैक, अभीतक तुम इस एक छोटी-सी घटनाको भूल नही पाये ?

मि० जैक्सन : नही किटी, उसीको भूलनेकी कोशिशमे मैं उस आदिवासियोकी बस्तीसे बहुत दूर; हजारो मील दूर, यहाँ पर आ गया हूँ। मेरे जीवनमे सफलता ही सफलता है। 'मैंने सिर्फ अपने बूतेपर ठेकेदारीमे इतनी रकम पैदा की है: यह घर, यह मोटर, यह पैसा, यह यश क्या नही मिला लेकिन इससे भी कोई आराम न मिला। अब भी जब-तब लगता है झीलकी वही आवाजे मुझे बुला रही है।

[सुनहली झीलकी आवाज़ोंकी गूँज]

मि० किटी : और इसीलिए मै कहती हूँ रोहित, जैक मरे नही है; वह ज़िन्दा है।

[दरवाज़ेपर दस्तकोंकी ध्वनियाँ]

रश्मि . फिर कोई दस्तकें दे रहा है मि०किटी ! फिर वही आवाजे गूँज रही है। वही बेतरतीब, बेलौस वही कराहनेकी आवाजें।'

फिर वही दफ़न हुई आवाज़

"आह, आह, आह ! कबतक भटकूँ । ओ, अरे ओ ! ओ, 'मै कबतक भटकूँ ! 'सुनते हो !'' सुनो, सुनो, कोई तो सुनो ! ''कोई तो सुनो, अरे ओ !

[धीरे-धीरे कराहने की ध्वनियाँ समाप्त हो जाती हैं]
[दरवाज़ोंपर दस्तकोंकी आवाज़े]

रश्मि : लगता है कोई और आया है ''कौन होगा यह ? कही वह तो नही आज सुबह जिसका तार आया था ?

मि० किटी . तार''''? किसका तार आया था रश्मि ?

रश्मि : पता नही कोई डॉक्टर मदन है, उन्हीका तार था। था तो वह किसीके नाम नही, सिर्फ जैकविला ही लिखा था लेकिन डाकिया ज़बरदस्ती मेरे यहाँ डाल गया।

रोहित : होगा कोई ? मैं दरवाज़ा खोलकर देखता हूँ।

[दरवाज़ा खोलता है और उससे एक बिलकुल वृद्ध व्यक्तिका प्रवेश]

मि० किटी : यस, कम इन प्लीज़ !

डॉ० मदन : ओह यू आर हियर ? आई एम एन ओल्ड, फ्रेण्ड ऑव जैक्सन—एफ्रेण्ड आफ कोर्स ।

रोहित : लेकिन हम लोग न तो आपको जानते है और न मिस्टर जैक्सनको ?

डॉ० मदन : नया माइण्ड ।''''आप मुझे अभी जान जायेंगे ।' '' तशरीफ रखिए, बैठिए । यस किटी, हाऊ डू यू डू ?

मि० किटी : बट हू आर यू प्लीज ? ए फ्रेण्ड ? ऐस्ट्रेन्जा ?

डॉ० मदन मुझे लोग डॉक्टर मदन कहते हैं।

मि० किटी मदन ? आर यू मदन ? क्या तुम जिन्दा हो ?

डॉ० मदन : जिन्दा ही हूँ। जिन्दगी एक जोककी तरह मुझसे चिपकी हुई है। छूटती ही नही।

मि० किटी लेकिन मदन····[कुछ घबराते हुए]····तुम

डॉ० मदन : घबराओ नही मि०किटी, मै जैक्सनका वही पुराना दोस्त हूँ जिसे आपने एक दिन इसी बँगलेसे निकाल दिया था। महज इसलिए कि मै जैक्सनको सीधे रास्ते-पर ले जाना चाहता था। उसकी जिन्दगीकी न्यू-रासिसको दूर करना चाहता था। और क्योकि आप उस न्यूरासिसको बनाये रखना चाहती थी ! असत्यकी कहानी मैं उसके दिमागसे निकाल देना चाहता था, लेकिन तुम उस कहानीको जिन्दा रखना चाहती थीं।·· · मै उसे उस भयानक रोगसे मुक्त करना चाहता था और क्योंकि तुम उस यादको ताजा बनाकर उसके दिमागको पागल बना देना चाहती थी।·

मि० किटी : ह्वाट नानसेन्स ! मदन, बुढापेके साथ-साथ तुम्हारा दिमाग भी खराब हो गया है ?

डॉ० मदन : [एक दबी हँसी हँसते हुए] हूँ ···हूँ· ··हूँ। क्यो नही। मेरा ही दिमाग खराब होगा ? शराबके साथ मिलाकर जैक्सनको क्या देती थी मिस किटी ? बोलो, बोलो न ?

मि० किटी : मैंने कभी कुछ मिलाकर नही दिया। जैक शराब पीता था ·· खूब पीता था·· ·बुरी तरह पीता था।

डॉ० मदन : और कैन्सरका रोग था उसे—कैन्सर ऑव लिवर। दर्दसे बेचैन और परेशान होकर वह हमेशा जान देनेकी कोशिशमे भटकता था, लेकिन तुमने उस वक्त तक उसे मरने नही दिया, जबतक उसने यह मकान तुम्हारे नाम नही लिखा।' 'मै तुमसे यही कहने आया हूँ कि यह उसकी वसीयत है। उसने इस मकान और अपनी जायदादको तुम्हारे नाम लिख दिया है; तुम उसकी लाश मुझे वापस दे दो

मि० किटी : लेकिन मै नही जानती उसकी लाशको। इधर जब-जब उसका दर्द बढ़ता था वह अपने बिस्तरसे उठकर भागनेकी कोशिश करता था। रोज सुबह वह कभी इस अहातेमे, कभी उस कूचेमे, कभी सडकपर पडा हुआ मिलता था। लोग उसे उठाकर यहाँतक लाते थे। यहाँ सुला देते थे। लेकिन रातमे वह बराबर बिस्तरसे भागता था। कहता था, सुनहली झीलकी पहाडियाँ उसे बुला रही है।

डॉ० मदन : लेकिन किटी, वह मरा नही है, वह अब भी ज़िन्दा है, और तुम जानती हो वह कहाँ है। अधमरी हालतमे भी वह कहाँ पडा है यह भी तुम्हे मालूम है। मैने पुलिसको खबर कर दी है। उसके आनेके पहले तुम मुझे बता दो वरना

मि० किटी : वरना क्या डॉ० मदन ? तुम तो ऐसा कह रहे हो जैसे मैने ही उसकी जान ली है ?

डॉ० मदन : तुम्हीने उसकी जान ली है किटी ! जैक्सनने तुम्हे कभी भी नही चाहा—कभी भी तुमसे प्यार नही किया।

वह बराबर कहता था कि तुम्हारे हुस्नमे जाने कैसी तेजाबी जलन है। लेकिन तुमने बराबर अपने प्रेमका जाल बिछाकर उसे फँसाये रखा। उसने तुमसे शादी नही की, लेकिन तुमने उसकी बीवी बननेका नाटक बराबर किया क्यों? आखिर क्यो?

मि० किटी वह इसलिए कि वह मेरी मजबूरी थी। वह इसलिए कि मैने उसे हमेशासे—पहले दिन जब मेरी उसकी भेंट गिरिजाघरमे हुई थी तभीसे उमे अपनी क्वाँरी प्यास दी थी। मै उसके वशमे थी। उससे अलग रहना मेरे लिए मुश्किल था। दुनिया मुझे यही कहती है, जो तुम कहते हो। लेकिन दुनिया मेरी मजबूरी नही समझती—बिलकुल नही समझती ! [सिसकने लगती है]

डॉ० मदन : मै इन आँसुओसे डरनेवाला नही हूँ किटी ! जैक्सन मेरा दोस्त था। मैने उसके लिए तो कुछ नही किया लेकिन मै आज जो कुछ भी हूँ उसी जैक्सनका बनाया हुआ हूँ। उसने मुझे केवल दयाका पात्र ही समझा। यह नही समझ सका वह कि मेरे दिलमे उसके लिए एक दयावान्से अधिक दोस्तका महत्त्व है। जब-जब मैने उसे अपना समझकर अपनाना चाहा उसने मेरी दोस्तीको दबा दिया। वह दुनियामे बेलौस रहना चाहता था···· ठीक वैसे ही जैसे एक मुसाफिर एक मुसाफिरखानेमें रहता है। लेकिन तुमने जबरदस्ती उसे उसके चुने हुए रास्तेसे अलग कर दिया। पहले तुमने उससे उसकी शराब छीन लेनी चाही। फिर मिलावटकी शराब दे-देकर उसे रोगी बनाया। बोलो यह सच है या ग़लत ?

मि० किटी : गलत, बिलकुल गलत ।

डॉ० मदन : तो लो, यह है जैक्सनका खत, पढ लो इसे, पढो वह क्या लिखता है !

मि० जेक्सनके स्वरमे : "डियर मदन, मै जानता हूँ मेरा रास्ता एक जबरदस्त आत्म-हत्याकी ओर बढ रहा है, लेकिन इस आत्म-हत्यामे भी मेरा दोष है। जैसे किसी जख्ममे खुजली उठना उस जख्मकी मजबूरी है उसी प्रकार किटी मेरे जख्मकी मजबूरी है। मै जानता हूँ कि शायद वह शराबमे मुझे कुछ मिलाकर देती है। मै देखता हूँ, लेकिन मै उसे रोक नही सकता, क्योकि यह भी सच है कि वह मेरी मजबूरी है—बहुत बडी मजबूरी है ! "

मि० किटी : तो मै क्या करती मदन ! कैन्सरके दर्दसे जब वह कराहता था तो मै उसे अपने हाथसे शराब पिलाती थी। तेज़ शराब—बेहद तेज़, ताकि उसे नीद आ जाये। और सच वह सो जाता था, जाने किस नीदमे सो जाता था। लेकिन जब वह उठता था तो फिर जैसेका-तैसा बेचैन हो जाता था। लगता था वह ज़िन्दगीको जल्द अज़ जल्द खत्म कर देना चाहता था। लेकिन ज़िन्दगी उसकी मुट्ठियोसे बिछलकर उससे मज़ाक करती जाती थी। सुनो, सुनो फिर वही आवाज उठ रही है, बडी बेचैन—बेलौस आवाज !···

मकानकी नीवॅसे आती हुई आवाज़

"आह, आह, कबतक भटकूँ ! ओ, अरे ओ ! मै

कबतक भटकूँ ! सुनते हो, सुनो·· 'सुनो ओ, अरे ओ, सुनो, कोई तो सुनो।···कोई नही सुनता, जैसे सब मुरदे है, महज मुरदे। आदमी ही नही बसते जैसे इस बस्तीमे !· जिन्दा दफन हूँ मै !· ओ, अरे ओ बस्तीवाले, मुझे भूलो मत मै जिन्दा दफन हूँ—जिन्दा !····

[आवाज़ धीरे-धीरे दब जाती है]

डॉ० मदन यह जैक्सनकी आवाज है। उसके दिलकी परतोमे जो दर्द है मै सुन रहा हूँ, किटी, तुम नही सुन रही हो ? इस अँधेरी रातमे मै उसे कहाँ ढूँढूँ। लगता है वह सचमुच जमीनमे जिन्दा दफन है—जिन्दा दफन है। बोलो, बोलो किटी, तुम्हीने उसे कही ज़िन्दा दफन किया है।· वह जो बार-बार कहता था कि तुम्हारे रूपमे उसे आगकी लपटे दीखती थी, सही कहता था। लेकिन किटी, जब तुमने उसे इस कदर जलाया था तो अधजला करके छोड क्यो दिया ? बोलो, बोलो ?

रश्मि : तो क्या मिस किटीने जैक्सनकी हत्या की है !

रोहित : मिस किटी आपने ?

[दूरसे कही ग्रामोफ़ोनकी एक स्वरलहरी]

पहला स्वर *यह शमा जो जलती है, है लाश परवाने की*

दूसरा स्वर *यह रोशनी दफ़न है उलझन है ये दीवाने की*

तीसरा स्वर *ज़ालिम ज़माना माने न माने।*

चौथा स्वर : *किसको सुनाऊँ ग़म के फसाने···*

पहला स्वरः : *यह शमा जो जलती है, है लाश परवाने की*

[एक समवेत हँसीके साथ बेलौस सूखी आवाज़]

डॉ० मदन मैं जानता हूँ मिस किटी, यह सारा दोष तुम्हारा है। तुम्हीने उसकी जान ली है। तुम्हीने उसकी हत्या की है। तुम्हीने उसकी अधमरी लाश छिपा रखी है!

मि० किटी : [सिसकती हुई] मैंने ही यह सब किया है?...क्या मैंने ही यह सब किया है?

[दरवाज़ोपर दस्तकोंकी आवाज़]

रोहित : फिर वही दस्तके है। फिर अभी वही आवाज सुनाई देगी! ...फिर वही बेलौस आवाज उठेगी। रश्मि, रश्मि!

रश्मि : मै तो थक गयी हूँ रोहित! ...लगता है सुबहकी रोशनी होगी ही नही! कितना लम्बा—कितना भयानक अँधेरा है। हर सिमतसे वही भयानक सूखी हँसो। वही....वही

[समवेत हँसीकी सूखी बेलौस आवाज़े]

इन्स्पेक्टर : दरवाजा खोलो? खोलो दरवाजा?

रोहित : कौन है? मै इस वक्त दरवाजा नही खोल सकता।

इन्स्पेक्टर मै पुलिस इन्स्पेक्टर हूँ। दरवाजा खोलो नही तो मै तोडकर अन्दर आऊँगा।

रोहित : ठहरो, खोलता हूँ।

डॉ० मदन : पुलिस आ रही है। सच-सच बता दो किटी, अब भी बता दो?

मि० किटी : नही,....नही—नही! मै नही जानती!

इन्स्पेक्टर : मिस किटी, मिस्टर जैक्सनकी लाश कहाँ है ?

मि० किटी : आइए आइए इन्स्पेक्टर, मुझे आपसे ही काम था। इन्स्पेक्टर, मैं नही जानती कि जेक्सन या जैक्सनकी लाश कहाँ है। मैं समझ नही पाती इन्स्पेक्टर, मुझसे यह बेहूदा सवाल पूछा क्यों जा रहा है ?

इन्स्पेक्टर : महज इसलिए कि मि० जैक्सन आपके साथ रहते थे।

मि० किटी : मेरे साथ जैक्सन नही, उसकी बीमारी रहती थी—उसकी मजबूरी रहती थी, उसकी बेबसी रहती थी !

इन्स्पेक्टर : आपने उसकी हत्या की है ?

मि० किटी : [डाँटकर] नही ! ··जैक्सनने आत्म-हत्याकी कोशिश की है। वह आत्म-हत्या कर नही सकता था, इसलिए उसकी वह कोशिश नाकाम रही है।

इन्स्पेक्टर : लेकिन मि० जैक्सनने कहाँ आत्म-हत्या की ? क्यों आत्म-हत्या की ? कैसे आत्म-हत्या की ?

मि० किटी : यह मै नही जानती। मै महज इतना कह सकती हूँ कि वह जिन्दा है। उसकी आवाज़ अब भी यहाँ गूँज रही है।

इन्स्पेक्टर : इस मकानमे कोई तहखाना है।

मि० किटी : जी नही।

इन्स्पेक्टर : कोई ऐसी जगह है जहाँ आप लोग न जा सकें।

मि० किटी : नही।

रश्मि : फिर वही आवाज आ रही है रोहित।····वही आवाज ····वही दर्दनाक आवाज।

"आह, आह, आह,....कबतक भटकूँ !....ओ....अरे ओ, मै कबतक भटकूँ ? सुनते हो। सुनो, "ओ, अरे ओ सुनो। कोई तो सुनो ! " कोई नही सुनता !.... जैसे सब मुरदे है—महज मुरदे। आदमी ही नही बसते जैसे इस बस्तीमे ! जिन्दा दफन हूँ मै ! ओ, अरे ओ बस्तीवालो ! मुझे भूलो मत, मुझे भूलो मत।... ओ, अरे ओ,....ओ !"

[आवाज़ धीरे-धीरे विलीन हो जाती है]

डॉ॰ मदन : सुनते है मिस्टर इन्स्पेक्टर ! यह आवाज़—यह आवाज मि॰ जैक्सनकी है।

मि॰ किटी : मै कब कहती हूँ कि यह आवाज मि॰ जैक्सनकी नही है।

इन्स्पेक्टर : लेकिन यह कहाँ छिपी है ? कहाँसे आ रही है ?

डॉ॰ मदन : इसका राज मि॰ किटीके पास है। यही बता सकती है।

इन्स्पेक्टर : बतला दीजिए मि॰किटी, नही तो आप बेकार आफतमे फॅस जायेगी ?

डॉ॰ मदन : तुम्हे बतलाना ही पडेगा।

रोहित : कमसे-कम दिमाग तो साफ हो जायेगा।

मि॰ किटी : लेकिन जैक्सनने कहा था इसे किसीसे मत बताना। "[कॉपती हुई आवाज़से] फिर भी बताती हूँ। आजसे आठ दिन पहलेकी बात हे। जैक्सन कैन्सरके दर्दसे तडप रहा था।....मैने पिछले कई दिनोसे उसकी

शराब बन्द कर दी थी ।'' 'उस रात शराबके लिए बेचैन वह मेरे कमरेमे आया ' उमने दरवाज़ा खोला' ''

[फ्लैक बैक]

मि० किटी . कौन है ?

मि० जैक्सन . मै हूँ किटी, मुझे बहुत तेज दौरा है—बडा तेज दर्द है । 'शराब चाहिए''''शराब । केवल एक घूँट !

मि० किटी : मेरे पास शराब नही है, नही है, नही है !

मि० जैक्सन : लेकिन मुझे थोडी-सी चाहिए वही, उतनी ही तेज जो मुझे मुरदा बना दे, मुझसे मेरी जिन्दगी दूर हटा दे । यह जिन्दगी, यह साँसे, यह दर्द तो मुझसे मेरे जिस्मसे बेहद चिपके हुए है ।

मि० किटी . लेकिन डॉक्टरने मना किया है, मै तुम्हारी ज़िद्दपर बराबर देती रही हूँ, लेकिन अब नही दूँगी ।

मि० जैक्सन : [दर्दसे लड़खड़ाकर फर्शपर गिरता हुआ] लेकिन, लेकिन मै क्या करूँ, किटी, मै बडी दूरसे भटकता हुआ आ रहा हूँ । आज रात फिर कुहासेसे लदी सुनहली झीलकी पहाडियोसे आवाज आ रही थी । अरुना बुला रही थी ।'''' उसकी वही दर्द-भरी आवाज—वही ''

मि० किटी : तुमने फिर अरुनाका नाम लिया । जैक, मेरे

सामने उस बदतमीज़, जाहिल, गवांर औरतका नाम मत लो।

मि० जैक्सन . खैर, तुम उसे चाहे जो कहो, मेरे लिए वह आज भी वही है, जो उस दिन थी। मुझे अकसर लगता है, जैसे उसकी आत्मा भटक रही है। मुझे आज भी लगा वह बुला रही है। मै गया। इस अँधेरी रातमे मैं भटकता गया, चलता गया, चलता चला गया। लेकिन जाने क्या बात थी किटी, काफी चलनेके बाद जब मैंने पीछे मुडकर देखा तो मुझे लगा, मै इसी अहातेमे पडा हूँ। काफी देर तक अपनी पहचानी हुई आवाज़ भी मुझे अपरिचित-सी लगती रही—आह, आह, यह दर्द—यह दर्द न तो मेरी जान ही लेता है और न मुझे मुक्त ही करके छोडता है। किटी, एक घूँट दे दो। दे दो किटी, शायद मुझे नीद आ जाये, नीद, नीद किटी।

मि० किटी : [गम्भीर स्वरमे शराब उँड़ेलते हुए] लो, लेकिन अब फिर मत माँगना। दुनिया समझती है मैं तुम्हें ज़हर पिला रही हूँ। दुनिया समझती है कि मै यह सब इसलिए करती हूँ, क्योकि मुझे तुमसे—तुम्हारी ज़ायदादसे बडी मोहब्बत है,.... उससे बडी लालच है।.. और तुम—तुम समझते हो कि मै और मेरे रूपमे तुम्हारी आत्माको शान्ति देनेकी क्षमता नही है। तुम हमेशा यही समझते थे–शायद अब भी यही समझते रहे हो

और समझते रहोगे। मुझे कोई रास्ता ढूँढना पड़ेगा ' रास्ता!

मि० जैक्सन : मैंने रास्ता ढूंढ लिया है। ''एक रास्ता है—एक। आओ—आओ मेरे साथ।

[दोनोंकी पगध्वनियोंके बाद]

मि० जैक्सन : देखो, देखो यह मैन होल है। यह रास्ता है। मै इसके भीतर जा रहा हूँ।' महज इसलिए जा रहा हूँ किटी, कि मुझमे आत्म-हत्या करनेकी ताकत नही है।'' मै इस मैन होलमे कूद जाता हूँ। तुम ऊपरसे इस लोहेके तवेको लगा दो। मै जिन्दा दफन हो जाऊँगा। मेरी आवाज तुम तक नही पहुँचेगी!

मि० किटी . नही जैक्सन' '? यह कर नही सकती जैक, बिलकुल नही कर''''

मि० जैक्सन : जल्दी करो, जल्दी करो, किटी, अभी मुझमे हिम्मत है। कही दर्दका दौरा फिर तेज़ न हो जाये। और अगर ऐसा हुआ तो निश्चय ही मै फिर कायरताका शिकार हो जाऊँगा। चलो, जल्दी करो। चलो-चलो किटी! ' '

मि० किटी : नही, नही तुम्हे जिन्दा रहना है। चलो जैक, तुम वापस चलो। मै तुमसे कुछ नही कहूँगी—कुछ नही कहूँगी, कुछ नही कहूँगी जैक्सन, वापस चलो।

मि० जैक्सन · अब मै वापस नही जाऊँगा किटी!....यह जिन्दगी जो मुझसे आज चालीस सालोसे चिपकी हुई है, मै इस सबसे ऊब चुका हूँ। यह दर्द, यह नशा, यह शराब जो मुझसे मेरी एक-एक साँसका हिसाब ले रही है, मै इससे ऊब चुका हूँ किटी, बिलकुल ऊब चुका हूँ!

मि० किटी लेकिन इस तरह मरना कमजोरी है जैक, चलो, वापस चलो।

[धीरे-धीरे ध्वनियाँ मद्धिम होती है]

मि० किटी : और मै उसे ज़बरदस्ती वापस ले आयी। उसे उसके कमरे तक पहुँचा आयी। लेकिन वह बडी देर तक अपने कमरेमे पडा सिसकियाँ भर-भरकर रोता रहा। मै रात-भर उसे उठ-उठकर देखती रही। लेकिन सुबहको जब मै आखिरी बार उसके कमरेमे गयी तो वह नही था। मुझे फौरन शुब्हा हुआ कि वह हो-न-हो उसी मैन होलमे गिर गया होगा! मै वहाँ गयी, उस लोहेके तवेको उठवाया, उसे ढुँढवाया, लेकिन उसका कोई पता नही चला!

इन्स्पेक्टर : तो तुम्हीने उसे उस मैन होलमे ढकेल दिया होगा?

डॉ० मदन · मेरे पास उसका सबूत है'' 'यह जैक्सनका आखिरी खत।

मि० किटी : तुम सब यही तक समझ सकते हो, क्योकि इसके आगे तुम्हारा दिमाग काम भी नही कर सकता। मै जैक्सन-के साथ पिछले तीन सालोसे हूँ। मैने उससे शादी नही की, क्योकि वह शादी करना नही चाहता था। 'मैने

उससे प्रेम नहीं किया क्योकि वह प्रेम करना नही चाहता था। मैने उससे नफरत की क्योकि वह चाहता था कि मै उससे नफरत करूँ। मैने वही किया जो वह चाहता था। मैने सिर्फ यही नही किया कि उसे मैन होलमे बन्द कर दिया। मै खुद बन्द कर देती ? और तुम समझते हो मैने और कुछ नही किया है सिर्फ उसकी हत्या ही की है ? शायद तुम जो सोच रहे हो गलत होते हुए भी सही हो ?....तो मुझे मंजूर है। बोलो मै क्या करूँ ?....

डॉ० मदन : मि० इन्स्पेक्टर, इन्हे कैद कर लिया जाये। जैक्सनकी हत्याका पता मि०किटीसे ही लगेगा। यही-सिर्फ यही उस रहस्यको जानती है।

मि०किटी : और तुमसे डॉ० मदन,—तुम जो मुझसे शादी करना चाहते थे, तुम जो जीसे जैक्सनको नफरत करते थे, लेकिन ऊपरसे कृतज्ञता प्रकट करते थे, क्योकि तुम जैक्सनकी दयाके बोझसे दबे हुए थे—तुम ?

इन्स्पेक्टर : इसका फैसला यहाँ नही हो सकता मि०किटी, आप हिरासतमे है, चलें।

मि०किटी लेकिन मेरा जुर्म ?

इन्स्पेक्टर : मि० जैक्सनकी हत्या !

डॉ० मदन : मै भी चलता हूँ इन्स्पेक्टर, मेरा अब यहाँ कोई काम नही है।

[पुलिस वैनके स्टार्टकी ध्वनि धीरे-धीरे विलीन हो जाती है]

[सहसा दरवाज़ेपर फिर दस्तकोंकी ध्वनि]

मि० जैक्सन : खोलो, दरवाजा खोलो। मै हूँ, मै मैन होलसे वापस आ रहा हूँ। हूँ ···हूँ····हूँ ···अरे, सब वापस चले गये। कोई नही है।

रोहित . कौन ? कौन हो तुम ?

मि० जैक्सन : मै, मैं जैक्सन हूँ। [रश्मिकी तरफ़ इशारा करते हुए] तुम, तुम कौन हो ?

रश्मि : मै, मै रश्मि हूँ !

मि० जैक्सन · रश्मि ? [ग़ौरसे सोचकर] रश्मि, नही नही।····तुम रश्मि नही हो ? 'तुम—तुम ठीक अरुना-जैसी हो—अरुना···

रश्मि : [डरकर] रोहित, ·रोहित, देखो यह क्या कहता है ?

मि० जैक्सन . मै ···मै बिलकुल ठीक कहता हूँ, तुम—तुम अरुना हो अरुना ! ···अरुना, जल्दी करो जल्दो। मेरी साँसें घुट रही है। मेरी आँखोके सामने धुँधलका छाया जा रहा है। आठ दिनो तक इस अन्धकारमे लगातार भटकनेसे मेरा दर्द मुझसे रूठ गया है अरुना, अरुना, अरुनाऽऽ। आओ, आओ ·· मेरे नज़दीक आओ अरुना ! मै चल नही सकता अरुना,·· यकीन मानो अरुना !! ··

रोहित : जाओ, नजदीक जाओ रश्मि !

मि० जैक्सन [कराहते हुए] आठ दिनो तक लगातार भटकनेसे मुझे एक नयी रोशनी मिली है। शायद पहचाननेकी ताकत इस अन्धकारमे ही होती है। आओ, मेरे नजदीक आओ अरुना।····

रश्मि · लेकिन मै अरुना नही रश्मि हूँ—रश्मि· ··

रोहित : फिर भी क्या हुआ रश्मि, जाओ, शायद किसी मरते हुए व्यक्तिके जीवनमे भ्रमके माध्यमसे ही तुम कोई सत्य दे सको, जाओ। ···

मि० जैक्सन कौन कहता है मै मर रहा हूँ ···देखो, देखो, मेरी तरफ देखो, मेरा दर्द मुझसे अलग है। इस नयी रोशनीमे मै मर नही सकता। अरुना, मेरे सिरपर हाथ रखो, झिझको नही, डरो नही, मै मुरदा नही हूँ, मैं प्रेत नही हूँ, मै जिन्दा आदमी हूँ, आदमी!

[धीरे-धीरे करके उसकी साँस समाप्त हो जाती है]

रश्मि [चीख़कर] रोहित, रोहित यह क्या हो गया रोहित! मि० जैक्सन, मि० जैक्सन ··

मि० जैक्सन : [बेहोशीकी हालतमे] यह फीकी हलकी रोशनी जो मुझे पिछले आठ दिनोकी भटकनमे मिली है ···मै उससे अलग नही हो सकता।

रोहित : [फ़ोन करते हुए] डबल थ्री फोर फाइव प्लीज़; यस पुलिस थाना, यस मि० जैक्सन इज़ हियर—यस····ही इज़ हियर डेड।

मि० जैक्सन कौन कहता है मै मुरदा हूँ? अरुना, अरुना, मुझे रोशनी मिल गयी है अरुना, रोशनी 'रो SSS श SSS न SSS ी SSS!

[धीरे-धीरे साँसें समाप्त हो जाती हैं]